𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩𑒑𑒳𑒣𑓂𑒞 𑒮𑓂𑒧𑒰𑒩𑒱𑒏𑒰

चित्रगुप्त स्मारिका

CHITRAGUPTA SOUVENIR

२०७६ (2019 AD)

नेपाल चित्रगुप्त समाज
काठमाडौं

सम्पादक मण्डल-२०७६

भास्कर कुमार दास
मुख्य सम्पादक

ई. राजेश कुमार दास
सदस्य

विभा लाल
सदस्य

अर्चना कर्ण
सदस्य

अशोक कुमार लाल कर्ण
सदस्य

प्रकाशक:

नेपाल चित्रगुप्त समाज

बिजुलीबजार, काठमाडौं

Phone: 00977-1-4785724
Email: ncs.committee@gmail.com
Web: http://www.nepalchitragupta.org.np
Whatsapp: 9851106331 (Nepal Chitragupta Samaj)
Viber : 9851173168 (Nepal Chitragupta Samaj)
Facebook : facebook.com/Nepal Chitragupta Samaj

cfj/0f ;fef/ M eujfg lrqu'Kt, sf7df08"

सहयोग : रु. २०/-

नेपाल चित्रगुप्त समाज पाचौं कार्यकारिणी समिति २०१९

शिव भुषण लाल
अध्यक्ष

शिवचन्द्र लाल कर्ण
निवर्तमान अध्यक्ष

रतीशचन्द्र लाल सुमन
वरिष्ठ उपाध्यक्ष

सन्तोष किशोर लाभ
उपाध्यक्ष

भास्कर कुमार दास
महासचिव

अशोक कुमार लाल कर्ण
सचिव

सुनिल कुमार लाल कर्ण
कोषाध्यक्ष

सत्येन्द्र कर्ण
सह-कोषाध्यक्ष

रामकुमार लाल कर्ण
सदस्य

वीणा सिन्हा
सदस्य

पुनम श्रीवास्तव
सदस्य

रञ्जना कर्ण
सदस्य

अर्चना कर्ण
सदस्य

देव चन्द्र लाल
सदस्य

रमेश दत्त
सदस्य

धीरेन्द्र कुमार मल्लिक
सदस्य

ऋतु मल्लिक
सदस्य

पुरुषोत्तम कर्ण
सदस्य

नेपाल सरकार

मा. रत्नेश्वरलाल कायस्थ
प्रदेश प्रमुख
प्रदेश नं. २
जनकपुरधाम, धनुषा, नेपाल

नेपाल सरकार प्रदेश प्रमुख प्रदेश नं. २ जनकपुरधाम, धनुषा

मिति: २०७६।०६।१५

शुभकामना

नेपाल चित्रगुप्त समाज अत्यन्त भव्यता एवं वृहद् सहभागिताका साथ वार्षिक श्री चित्रगुप्त पुजनोत्सव २०७६ मनाउन गइरहेकोले अत्यन्त हर्षित एवं गौरवान्वित छु ।

समितिले आफ्नो स्थापना काल देखि नै सामाजिक, सांस्कृतिक एवं अन्य बहुआयामिक सेवाभावका साथ विभिन्न क्षेत्रमा सेवा प्रदान गर्दै आगामी दिनहरूमा पनि सेवामूलक कार्यलाई अझ प्रभावकारी बनाउदै सामाजिक कार्यमा सधै अग्रस्थानमा रहने आशाका साथ नेपाल चित्रगुप्त सेवा समितिको उत्तरोत्तर प्रगतिको कामना गर्दछु ।

विशेषतः राज्य, उद्योग व्यवस्थापन एवं तकनिकी क्षेत्रमा सलंग्न एवं निपुण चित्रांस समुदाय संगठित भई आगामी दिनहरूमा समेत विभिन्न जात जाति, धर्म र सम्प्रदायसँग आपसी सहयोग र समन्वयको माध्यमबाट भाईचारा र सदभावको अभिबृद्धि गर्दै राष्ट्र निर्माणमा थप जिम्मेवारी वहन गर्न प्रेरित गर्नेछ, आशाका साथै श्री चित्रगुप्त महाराजको यो चित्रगुप्त पुजनोत्सवको पुनित कार्य, भव्यरूपले सफल रहोस भन्ने शुभकामना व्यक्त गर्न चाहन्छु । साथै सबै चित्रांस समुदायको सुस्वास्थ्य एवं उत्तरोत्तर प्रगतिको कामना गर्दछु ।

रत्नेश्वर लाल कायस्थ
प्रदेश प्रमुख

नेपाली काँग्रेस

विमलेन्द्र निधि

उप-सभापति

पूर्व उप-प्रधानमन्त्री एवं गृहमन्त्री

शुभकामना

नेपाल चित्रगुप्त समाजले प्रत्येक वर्ष श्री चित्रगुप्त भगवानको पुजनोत्सवको अवसरमा "चित्रगुप्त स्मारिका" प्रकाशन गर्ने कार्यलाई निरन्तरता दिदै यस वर्ष २०७६ मा पनि "चित्रगुप्त स्मारिका" प्रकाशन गर्न लागेको थाहा पाउदा अत्यन्त हर्षित भएको छु ।

स्मारिकद्वारा विद्वतजनको विविध विधाको रचनाहरु प्रकाशित गर्ने विशिष्ट कार्यमा चित्रगुप्त समाजको प्रयास सराहानिय छ । चित्रांशगणको बौद्धिक विचारको सम्प्रेषणको साथै समाजको उत्थान एवं ऐक्यवद्धताको लागि गरिरहेको प्रयास र सांस्कृतिक क्षेत्रमा पुर्याईरहेको अतुलनीय योगदान सार्वकालिक महत्वको रहेको विश्वास लिएको छु ।

अन्त्यमा, सामाजिक, सांस्कृतिक र बहु-आयामिक सेवा भावका साथ स्थापित तथा क्रियाशील र प्रगति उन्मुख संस्थाको चौतर्फी विकास भईरहोस भन्ने शुभेच्छा व्यक्त गर्दै नेपाल चित्रगुप्त समाजको उत्तरोत्तर प्रगतिको लागि हार्दिक मंगलमय शुभकामना व्यक्त गर्दछु ।

२०७६.६.३
काठमाडौं

केन्द्रिय कार्यालय:
बी.पी. स्मृति भवन, बी.पी. नगर, सानेपा, ललितपुर
फोन नं.: ०१-५१८३४००, फ्याक्स: ०१-५५५५१८८
URL: ww.nepalicongress.org
E-mail: ncparty@wlink.com.np

निवास:
घर नं. ५५, वार्ड नं. १०, प्राचिन मार्ग, महादेवस्थान
मध्य बानेश्वर, काठमाडौं, नेपाल
फोन नं.: ०१-४४७४८३९, मोबाइल: ९८४१२८३५५०
ईमेल: nidhi_bimal@hotmail.com

R.k. Kanth

[illegible]

Ref. No. ....

Date.......................................

[illegible]

MESSAGE

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

To

[illegible]

Contact Details office : 507, 5th Floor, Brindavan Kunj, Exhibition Road, Patna- 800 001
Mob.: 9835292245, 9939988421
E-mail: rspl.rsl@gmail.com, Website : www.rsplindia.in

पूजा समिति २०७६

श्री शिवचन्द्र लाल कर्ण - संयोजक
श्री धीरेन्द्र कुमार मल्लिक - सदस्य
श्रीमती निर्मला कायस्थ - सदस्य
श्रीमती विभा श्रीवास्तव - सदस्य
संजय कुमार मल्लिक - सदस्य
कमलेश कुमार लाल - सदस्य
श्रीमती रन्जना कर्ण - सदस्य
श्री विनोद श्रीवास्तव - सदस्य

शैक्षिक तथा साँस्कृतिक कार्य समिति

श्रीमती अर्चना कर्ण - संयोजक
श्रीमती विभा लाल - सदस्य
श्रीमती मीना कर्ण - सदस्य
श्रीमती पूनम श्रीवास्तव - सदस्य
श्रीमती मिरा मल्लिक कर्ण - सदस्य
श्रीमती बसुधा कर्ण - सदस्य
श्रीमती चन्द्र प्रभा दत्त - सदस्य
श्रीमती लिलारानी दास - सदस्य
श्री पुरुषोत्तम कर्ण - सदस्य
श्रीमती ऋतु मल्लिक - सदस्य
श्रीमती सविता दास रुबी - सदस्य

स्वागत समिति

श्रीमती मीना कर्ण - संयोजक
श्रीमती प्रिति दास मल्लिक - सदस्य
श्रीमती रश्मी श्रीवास्तव - सदस्य
श्रीमती रुमी श्रीवास्तव - सदस्य
श्रीमती अर्चना कर्ण - सदस्य
श्रीमती पूनम श्रीवास्तव - सदस्य
श्रीमती निर्मला कायस्थ - सदस्य
श्रीमती साधना कर्ण - सदस्य

सूचना तथा मिडिया समिति

श्रीमती वीणा सिन्हा - संयोजक
श्री सुनिल कुमार लाल कर्ण - सदस्य
श्री पुरुषोत्तम कर्ण - सदस्य

प्रसाद व्यवस्थापन समिति

श्री सुनिल कुमार लाल कर्ण - संयोजक
श्री अभिषेक श्रीवास्तव - सदस्य
श्री सत्येन्द्र कर्ण - सदस्य
श्री मृत्युन्जय कर्ण - सदस्य
सुश्री शारदा लाभ - सदस्य

आर्थिक समिति

श्री सन्तोष किशोर लाभ - संयोजक
श्री भास्कर कुमार दास - सदस्य
श्री सुनिल कुमार लाल कर्ण - सदस्य
श्री राजेश कुमार दास - सदस्य
श्री अशोक कुमार लाल कर्ण - सदस्य
श्री डा. CA सुबोध कुमार कर्ण - सदस्य
श्री देवचन्द्र लाल कर्ण - सदस्य
श्री कमलेश कुमार लाल - सदस्य
श्री संजय कुमार मल्लिक - सदस्य
श्रीमती अर्चना कर्ण - सदस्य
श्रीमती रन्जना कर्ण - सदस्य
श्री मनोज वर्मा - सदस्य
श्री अवधेश दास - सदस्य
श्री राजेन्द्र कुमार लाल कर्ण - सदस्य
श्री देवेन्द्र लाल कर्ण - सदस्य
श्रीमती ऋतु मल्लिक - सदस्य

सम्मान चयन समिति

श्री राम कुमार लाल कर्ण - संयोजक
श्री आनन्द मोहन लाल दास - सदस्य
श्रीमती मीना कर्ण - सदस्य

सल्लाहकार समिति

श्री डा. गौरीशंकर लाल दास
श्री सच्चिदानन्द श्रीवास्तव
श्री रत्नेश्वर लाल कायस्थ
श्री डा. विमल कुमार सिन्हा
श्री जयकान्त लाल
श्री बिमल श्रीवास्तव
श्री रत्नाकर दत्त
डा. विनोद कुमार कर्ण

Nepal Chitragupta Federation, 2071

Ad-hoc Executive Committee

S.N.	Post	Name	Address	Mobile
1	President	Er Anand Mohan Lal Das		MitraPark[illegible]
2	Senior Vice President		Hariom Shrivastava	Thapagaon[illegible]
3	Vice President, EDR		Birendra Kumar Choudhary	Bi[illegible]
4	Vice President, CDR		Jay Prakash Mallick	Malangawa[illegible]
5	Vice President, WDR		Ratnesh Mallick	Bhairahawa[illegible]
6	Vice President, MWR		Pankaj Shrivastava	Gulariya [illegible]
7	Vice President, FWR	Ganga Narayan Lal Karn	Dhangadhi	9848520526
8	General Secretary		Shiva Bhushan Lal	Sanepa, Lal[illegible]
9	Treasurer	Shiva Chandra Lal	Milan Chowk, Baneshwor	[illegible]
10	Secretary	Rama Shankar Shrivastava		Hetauda [illegible]
11	Joint Treasurer	Archana Lal	Kuleshwar	01-4275311
12	Member	Pankaj Mallick	Hathiban	9851016222
13	Member	Dilip Kumar Karn	Kuleshwor	9802011022
14	Member	Kamlesh Kumar Verma	Thapagaon	9841327125
15	Member	Babita Das	New Baneshwor	01-4915289

Nepal Chitragupta Samaj

Chitragupta Yuva Committee

S.N.	Name	Post	Mobile
1	Dhirendra Mallick	President	9841449064
2	Amaresh Kumar Karn	Vice President	9849834355
3	Hari Shankar Karn	General Secretary	9851025183
4	Prabhakar Kumar Mallick	Secretary	9851025183
5	Karunakar Mallick	Treasurer	9841323870
6	Dilip Kumar Karn	Member	9851135588
7	Rani Karn	Member	9843412778
8	Lalbabu Lal Karn	Member	9841267233
9	Uday Kumar Karn	Member	9841302043
10	Bikash Kumar Karn	Member	9841812078
11	Amit Mallik	Member	9841694576
12	Minu Mallik	Member	9808231297
13	Dr. Shailendra Karn	Member	9818001300
14	Khargmohan Lal Karn	Member	9851122372
15	Mandip Karn	Member	9841245592

सम्पादकीय

विगत के वर्षों की तरह, इसवार भी चित्रगुप्त पूजनोत्सव के शुभ अवसर पर यह चित्रगुप्त स्मारिका आप के हाथों तक पडोसने में हमें हार्दिक प्रसन्नता हो रहा है। नेपाल चित्रगुप्त समाज सभि वर्गों को समेटते हुए समाज में आपसी सद्भाव, भातृत्व एवं सामाजिक तथा आर्थिक प्रगतिका द्योतक बना रहे यही शुभकामना है तथा सभि चित्राँश वन्धु-वान्धव से अपेक्षा भी।

हम सभि के दृढ प्रयास, लगन एवं आर्थिक सहयोग से काठमाण्डू के कोटेश्वर बालकुमारी में भगवान श्री चित्रगुप्तजी महाराजका भव्य एवं शान्दार मन्दिर बनकर तैयार है तथा इस साल के चित्रगुप्त पूजा के शुभ तिथि पर प्राण-प्रतिष्ठा कर रहें हैं। यह एक बहुत वडा उपलब्धि है। इसको मिलाकर अव काठमाण्डू में ही भगवान चित्रगुप्त का चार मन्दिर हो गया है। और गर्व का बात यह है की सभि चित्राँश एकजुट होकर पूजा, साँस्कृतिक कार्यक्रम एवं संगत पंगत करते हैं। यही कायस्थ शक्ति भी है।

हाल ही में नेपाल चित्रगुप्त समाज ने अपना नवाँ वार्षिकोत्सव मनाया तथा नया कार्य समिति सर्वसम्मति से चुनकर आया है। विश्वास तथा शुभेच्छा है, नया कार्य समिति समाज को और उत्तरोत्तर प्रगति पथ पर ले जाएगा।

भारत के दरभंगा जिला में प्रथम कर्ण-कुम्भ सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है, ३०–३१ अक्टोवर को। नेपाल चित्रगुप्त समाज इसमें अपना प्रतिनिधि भेज रहा है। आगे भी कैसे अन्तरराष्ट्रिय स्तर पर समन्वय एवं सहकार्य किया जाए, इस दिशा में हम निरन्तर क्रियाशील हैं।

अपना अमुल्य लेख, रचना भेजकर इस स्मारिका का प्रतिष्ठा बढाने के लिए मैं सम्पूर्ण विद्वद्जनों का आभार प्रकट करता हूँ तथा सम्पूर्ण विज्ञापनदाता, चन्दादाता एवं प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रुप से इस स्मारिका के प्रकाशन में सहयोग पहुँचाने वाले व्यक्तियोंको हार्दिक धन्यवाद देता हुँ। विगत के वर्षों की अपेक्षा इस स्मारिका का गुणस्तर हरेक वर्ष अच्छा हो, यह हमारा निरन्तर प्रयास रहा है। कृपया अपना प्रतिक्रिया सम्पादक मण्डल को जरुर दें।

ॐ श्री चित्रगुप्ताय नमः

शुभेच्छु

भास्कर कुमार दास
मुख्य सम्पादक

अध्यक्षीय मन्तव्य

आदरणीय बन्धुबान्धवहरु,

वर्ष २०७६ को भगवान श्री चित्रगुप्त पुजनोत्सवको उपलक्ष्यमा सम्पूर्ण चित्रांश बन्धुबान्धवहरुमा सुस्वास्थ्य, दिर्घायु एवं उत्तरोतर प्रगतिको कामना व्यक्त गर्दछु। विगतका वर्षहरु झैं यो वार्षिक स्मारिका प्रकाशनलाई निरन्तरता दिंदै आउँदो चित्रांश परिवार विवरण (Chitransh Family Directory) छिट्टै प्रकाशित गरिने जानकारी दिंदैछु । नेपाल चित्रगुप्त समाजका सबै सदस्यहरू यस प्रक्रियामा सक्रिय रूपमा सम्मिलित हुन अनुरोध गर्दछु ।

म यो शुभ समाचार सबै चित्रांशहरु बीच बाँड्न चाहन्छु कि भगवान श्री चित्रगुप्तको मूर्ति सम्मान पूर्वक स्थापना गरि सो मूर्तिको प्राण प्रतिष्ठा हुने कार्यक्रम सबैमा विदित छ। सो मूर्ति प्रदान गरी सहयोग गर्नु हुने बिरगंज निवासी उद्योगपति श्री नारायण प्रसाद अग्रवाल प्रति हामी आभारी छौं तथा मूर्तिकै लागि सहयोग गर्नु हुने अन्य चित्रांश प्रति पनि हामी कृतज्ञ छौं। यसै वर्ष जनकपुरमा भएको ५२ औं साधारण सभा भव्य रुपमा मनाएको सन्दर्भमा यस समाजले सके सम्म सम्पूर्ण सहयोग गरी कार्यक्रम भव्यताका साथ सम्पन्न भएको खुशी व्यक्त गर्दछु। तथा यही नेपाल चित्रगुप्त महासंघको स्थापना को लागि तदर्थ समितिले सदस्यहरुको ठुलो सहभागितामा लामो छलफल गरी बिधान संसोधन गर्ने र महासंघ दर्ता गर्ने प्रक्रिया अगाडी बढाउने निर्णय गर्यो ।

गैरसरकारी संगठनको संचालन प्रक्रिया बुझ्न बारे विचार गोष्ठीको पनि आयोजन गरिएको थियो तथा कार्यक्रमको प्रस्तुतकर्तालाई पनि सहृदय धन्यवाद ज्ञापन गर्दछु। गत वर्ष हामीले ७५ वर्ष भन्दा बढी उमेरको चित्रांशहरुलाई सम्मानित गर्ने कार्यक्रम सुरु गरेका थियौं। तथा यस वर्ष पनि यो कार्यक्रमलाई प्राथमिकता तथा निरन्तरताका साथ अगाडी बढाउने उद्देश्यको जानकारी गराउदैं छु।

यसपालि नेपाल चित्रगुप्त समाजको महिला समितिको तदर्थ समिति गठन भई सक्रियरूपमा काम गर्दैछ भन्ने सबैलाई सूचित गर्न चाहन्छु। विगत देखि नै भईरहेको रचनात्मक कार्यक्रमहरुलाई वर्तमान कार्यसमितिले निरन्तरता दिंदै भविष्यमा यस नेपाल चित्रगुप्त समाजको युवा चित्रांशहरुको निमित्त विशेष कार्यक्रम ल्याउने प्रयास गर्दैछौं। चित्रांश युवा वर्ग तथा महिला समुदायलाई समाजको विकासको निमित्त अग्रपन्क्तिमा आउन समेत आह्वान गर्दछु।

नेपालमा बसोबास गरिरहेका चित्रांशहरु बिच आपसी सद्भाव, समन्व्य, सहिष्णुता, सामंजश्य र शैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक उत्थानको लागि यो समाज सदैव क्रियाशील र प्रयत्नशील छ। मिथिला परम्परा, कला तथा संस्कृतिको साथै सम्पूर्ण चित्रांशहरुको सर्वागीन विकासको लागि नेपाल चित्रगुप्त समाज पूर्ण रुपमा क्रियाशीलताका साथ समर्पित भई कार्य गरी नै रहने छ।

कर्ण कायस्थ महासभाले भारतको दरभंगा शहरमा आयोजित गर्ने कर्ण कुम्भ कार्यक्रममा (३०-३१ ओक्टोबेर, २०१९) नेपालबाट यथोचित सहभागिता रहने छ भने हामी आशा लिएका छौं।

अन्त्यमा, श्री चित्रगुप्त भगवानले हामी सबैलाई दिर्घायु, सुस्वास्थ्य तथा सुख-समृद्धि प्रदान गरुन भनी प्रार्थना गर्दछु र यही २०७६ को दिपावली, श्री चित्रगुप्त पूजा, भातृ-द्वितीया तथा छठ पर्वको उपलक्ष्यमा सम्पूर्ण चित्रांश बन्धुबान्धवहरुमा हार्दिक शुभकामना व्यक्त गर्दछु। जय श्री चित्रगुप्त !

भवदीय,

ई शिव भुषण लाल
अध्यक्ष

विषय-सूची

l;=g+=	zLif{s	n]vs	k]h g+=
१	श्री चित्रगुप्त भगवते नमः स्तुती	- कमलनारायण दास	१
२	ऐतिहासिक एवं पर्यटकिय महत्वका धार्मिक...	- डा. शैलेन्द्र नारायण मल्लिक	११
३	जमाना हुआ	- मुकेश कर्ण	१४
४	तुलसीः एक अनुपम पौधा	- डा. किरण बाला	१५
५	नेपालको कृषि अर्थतन्त्रमा मांसाहार	- चन्द्र किशोर मल्लिक	१९
६	महाकवि विधापति	- विजयव्रत कंठ	३१
७	को हुन् कायस्थ ?	- मनोज कुमार वर्मा	३२
८	मिथिला क्षेत्र में प्रचलित कुछ परम्पराएँ	- बासुदेवलाल दास	३५
९	Can Tarai Survive?	- I.C.Dutta	४२
१०	कायस्थ समुदाय के अनमोल रत्न...	- वीणा सिन्हा	५१
११	Long Lasting Relationships	- Shiv Bhushan Lal	५५
१२	तुम हो न संग मेरे ?	- रजनीश कर्ण	५६
१३	Understanding Our Universe	- Vatsaladitya Das	५७
१४	The Only Child	- Awanti Prakash	६१
१५	War and Peace	- Selina Prachi	६३
१६	The 'Correct' Way to Colonise...	- Prashant Karn	६४
१७	रेत, लहर, पत्थर प्रेम	- जूही	६७
१८	राजयोग (अष्टांयोग) कुण्डलीजागरण...	- देवेन्द्र कुमार चौधरी	६८
१९	मिलन	- गणेशकुमार लाल	७६
२०	आदर्श विवाह	- निभा रानी	७९
२१	Dad, You are My Inspiration	- Kinjal Das	८०
२२	सभ छोडि गेल ओ	- आदित्य "अरविन्द"	८२
२३	महेशवाणी	- चन्दा दत्त	८३
२४	महासचिवको वार्षिक सांगठनिक प्रतिवेदन	- अशोक कुमार कर्ण	८७
२५	आय-व्यय विवरण		९०
२६	बोल गई	- राजेश कुमार कंठ	१०६

नेपाल चित्रगुप्त समाज

महिला समिति (तदर्थ)

श्री चित्रगुप्त सेवा समाज

नेपालगंज, बाँके

श्री केवल कृष्ण लाल दास	- संरक्षक	९८६८१५५५१८
श्री अनन्त कुमार कर्ण	- संरक्षक	९८५८०४३८३९
श्री राम गोपाल निगम	- सल्लाहकार	०८१-५२५०१५
श्री संजय पंकज	- अध्यक्ष	
श्री विपिन कुमार वर्मा	- उपाध्यक्ष	९८५८०२४८४०
श्री हीरेन्द्र कुमार मल्लिक	- कोषाध्यक्ष	९८५८०२६७४८
श्री शैलेन्द्र कुमार मल्लिक	- सचिव	९८५८०३५५१९
श्रीमती मञ्जु लता श्रीवास्तव	- सहसचिव	९८०४५४२२६८
श्री राज कुमार मल्लिक	- सदस्य	९८५८०२३५६७
श्री राकेश बहादुर श्रीवास्तव	- सदस्य	९८४८०३६५६२
श्री शशि रंजन कर्ण	- सदस्य	९८४८०२५७४४
श्रीमती कामिनी देवी	- सदस्य	९८०४५१०४२३
श्रीमती अनीता कुमारी दास	- सदस्य	९८६२९७०१९६
श्रीमती नीलम निगम	- सदस्य	९८१६५०३६४६

श्री चित्रगुप्त भगवते नम:
स्तुती

कमलनारायण दास

जय चित्रगुप्त यमशे तब, शरणागतम्, शरणागतम् ।
जय पूज्य पद पद्‌मेश तब, शरणागतम्, शरणागतम् ॥
जय देव देव दयानिधे, जय दीन बन्धु कृपा निधे ।
कर्मेश जय धर्मेश तब, शरणागतम्, शरणागतम् ॥
जय चित्र अवतारी प्रभो, जय लेखनीधारी विभ्रो ।
जय श्याम तन चित्रेश तब, शरणागतम्, शरणागतम् ॥
पुरुषाधि व भगवत् अंश तब, कायस्थ कुल अबतंश जय ।
जय शक्ति बुद्धि विशेष तब, शरणागतम्, शरणागतम् ॥
जय विज्ञ क्षत्रिय धर्म के, ज्ञाता शुभाशुभ कर्म के ।
जय शान्ति न्यायाधिश तब, शरणागतम्, शरणागतम् ॥
जय दीन अनुरागी हरी, चाहे दया दृष्टि तेरी ।
कीजै कृपा करुणेश तब, शरणागतम्, शरणागतम् ॥
तब नाथ नाम प्रताप से, छुट जाय भव, त्रय ताप से ।
हो दूर सर्व क्लेश तब, शरणागतम्, शरणागतम् ॥

वंश - नागवंशी

सन्तान- धर्मराज चित्रगुप्त
वर्ण - द्विज-क्षत्रिय
जाति -राजन्य कायस्थ
उपनाम-धर्मराज पुत्र
आधुनिक समग्रतामे सम्वोधन -चित्रांश

कायस्थ शव्दक विश्लेषण :

काय-शरीर-विभाति काय: करुणापराणां परोपकार तु चन्दनेनभर्तृहरि २/७१
स्थ: - लेखक जाति

(क्षत्रिय पिता तथा शुद्र माताक सन्तान), यहि जातिक पुरुष - कायस्थ इति लघवी मात्रा - मुद्रा० १,, याज्ञवल्क स्मृति १/३३६, मृच्छ० -९
द्रष्टव्य : क्षत्रिय पिता तथा शुद्र माता सं उत्पन्न प्रसङ्ग मे बाद में बात करब ।

कायस्थक गुण :

विधा वाश्च्यः शुचि,धीरो, दाता, परोपकारक :।
राजसेवी, छमाशील, कायस्थ सप्त लक्षणा ।
-स्कन्दपुराण

कायस्थक प्रादुर्भाव

कायस्थ कुलवंश श्री चित्रगुप्त भगवान सं निःश्रृतभेल मानल जाईत अछि। श्री चित्रगुप्त भगवानक जन्मक अनेक कथा अछि, जाहि मे सं दूगोट के विश्वसनिय मानि उल्लेख कर ऽ जा रहल छी । हम दुनु कथाक वैधानिकताक कोनो विश्वसनिय आधार वा साहित्य नहि प्रस्तुत करव । पाठक वृन्द स्वयम् अन्वेषण कयलजाय, ई हमर आग्रह अछि ।

उल्लेखनुसार काय शव्दक अर्थ शरीर होईत छैक, ताहि मे कोनो शंका नहि । वामन शिवराम आप्टे द्वारा सम्पादित संस्कृत - हिन्दी कोश (प्रकाशक मोतीलाल वनारसी दास पव्लिशर्स प्रा.लि., दिल्ली पुनर्मुद्रण १९८९ ई पृ.२६७) मे देलगेल " काय " एवम् " स्थः " शव्दक अर्थ के आधार बनावल अछि। प्रथम कथा ई अछि। ब्रम्हाजी अपना शरीरक विभिन्न अङ्ग, यथा, व्रम्ह (मस्तक) सं व्राम्हण हाथ सं क्षत्रिय, उदर सं वैश्य एवम् पयर सं शूद्रक रचना कयलाक उत्तर चिन्ताग्रस्त भऽ गेलथि । तखने नारदमुनी प्रकट भऽ चिन्ताक कारण पुछलाउत्तर ब्रम्हाजी चिन्ता व्यक्त कयलथिन्ह जे ई चारि वर्णक कर्मक लेखा के राखत? नारदजी तुरत समाधान देलखिन्ह जे अपनेक काया सं एक दिव्य पुरुष उत्पन्न कयलजाय, समस्या समाधान । ब्रम्हाजी ताहि दिव्य पुरुषक हेतू वारह हजार वर्ष घोर तपस्या केला उत्तर श्री चित्रगुप्त भगवान शंख, पुस्तक, लेखनी तथा द्वाईत धारणकयल चारि भुजा भेल नीलवर्ग पुरुष के ब्रम्हाक शरीर सं प्रादुर्भाव भेलन्हि ।

दोसर कथा कथनि बुझाईत अछि। जमदाग्नी ऋषि एवम् माता रेणुका सं उत्पन्न परशुराम वस्तुतः ब्राम्हण छलथि । परन्च शिव उपासनाक कारणे हुनका शिव सं धनुष एवम् फर्सा (परशु) भेटल छलन्हि । पिता जम्दाग्नी सं हुनका अमरताक वरदान सेहो भेटल छलन्हि । परशु (फर्सा) धारण केला सं हुनक नाम परशुराम भऽ गेलन्हि। ओना हुनक मूल नामाकरण में " राम " छलन्हि। हिन्दु धर्मशास्त्रो में हुनका विष्णुक छठम् अवतार मानल जाईत छन्हि । एक समय में क्षत्रिय राजासभ व्राम्हण हत्या, यज्ञ भङ्ग, आवास क्षय आदि कऽसमाज के बहुत दुखी कयने छलैक। परशुराम शपथ लेलथिन्ह जे हम सम्पूर्ण पृथ्वीके क्षत्रिय विहिन करब, औ तद्नुरुप क्षत्रिय सभकै हत्या प्रारम्भ कऽ देलथिन्ह। एकैसम वेरमे जखन सब क्षत्रिय समाप्त भऽ गेलैक तऽ एकगोट गर्भधारणी क्षत्रिय महिला वाँची गेलैक। परशुराम हुनका पर आक्रमण करऽ चाहथिन्ह लेकिन नारदजी रोकि देलथिन्ह । उद्रस्थ वच्चाक जन्म भऽ जावत धरि जन्म संस्कार नहि होयतैक तावतधरि बोकर कोनो वर्ण नहि छैक, तैं हत्या नहि होवक चाहि। गर्भ धारणी माता शपथ लेलथिन्ह जे हम

शिशुक वर्ण संस्कार क्षत्रिय रुपमे नहि करब। मातृकाया मे रहल शिशु छलैक तै "कायास्थित:" कायस्थक नामधारी भेलथि।

वंश:

डा.रागेय राधवक लिखल एक गोट पुस्तक छन्हि। कथारुप मे लिखल " अन्धेरा रास्ता"। प्राग ऐतिहासिक कालक विभिन्न धर्मशास्त्र एवम् भौतिक वस्तुक विश्लेषणक आधार पर कथा साहित्यक रुपे लिखल गेल छैक। यहि पुस्तक में आर्य सभक भरतखण्ड में आगमनक काल सं पहिले भारतक विभिन्न आदि वासि सभ छलैक। ई आदि वासिन्दाक वर्ग सभक जाति नाम वानर, रीछ , नाग , आदि प्राकृतिक जीव सभक नाम सं विभाजित छलैक। डा. राघवक कथन अनुसार कायस्थ जाति नाग वंशी छथि। हम कायस्थ सभ मौलिकरुप सं नागपूजक छी। अखनो हमरा चिरागु घरमे पूजास्थल पर गाईक गोवर सं नाग बनावल जाईत छैक, जाहि मे दुभि साटल जाईत छैक, एवम गाईक दुध एवम् धानक लावा सं अर्चना कयल जाईत छैक। ई धार्मिक परम्परा हमरा लोकनिक नागवंशक व्युत्पत्तिक समर्थन करैत अछि।

श्री चित्रगुप्त वंश

भगवान चित्रगुप्तक दू रानी छलथिन्ह, नन्दिनी(सुदक्षिणा) एवम् शोभावती (इरावती)नन्दिनीक पिता श्राद्धदेव एवम् शोभावतीक पिता धर्मशर्मा (सुशर्मा) छलथिन्ह । श्राद्धदेव गान्धार सं छलथिन्ह । श्राद्धदेव क्षत्रिय तथा धर्मशर्मा व्राम्हण कुल सं छलथिन्ह । क्षत्रिय तथा व्राम्हण कान्यासं क्षत्रियकुलक श्री चित्रगुप्त भगवानक व्युत्पत्ति सन्तान कैं कोना क्षत्रिय एवम् शूद्रमाता सं पैदा भेल मानल जाय ? स्व.विवेकानन्द स्वामी अमेरिकाक शिकागो में भेल विश्व धर्म सभा में भारतक प्रतिनिधित्व करय लेल जाय चाहलथिन्ह, तऽ वंगालक व्राम्हण लोकनि ई कहिक विरोध कयलथिन्ह जे आहां शूद्र छी, धर्म सभा में भाग नहि लऽ सकैत छी। हुनक जबाव छलन्हि जे हम वोहि वंशकै प्रतिनिधित्व करैत छी जकरा व्राम्हण लोकनि "यमाय धर्मराजाय चित्रगुप्ताय वै नम :"कहि नित्य अभ्यर्थना करैत छथि। ई सुनि व्राम्हण सभनिर्वाक भऽ गेलथि। आप्टे अखनो वैहराग गावि रहलछथि।कायस्त परिभाषा करैत एकगोट वरिष्ठ अधिवक्ता स्व. सुशिल कुमार सिन्हाजी अपन व्याख्या निम्नशव्द राशिक प्रयोग कयने रहथि :

कायस्थ :

" का " - कानूनज्ञाता
" य " - यथार्थवादी
" स्" - सत्यवादी
" थ " - थलपति

KAYASTH
" K" ⁻ Kindness and knowledge
" A " ⁻ Academician
" Y " ⁻ Young in spirit

“ A ” ¯ Amicable
“ S ” ¯ Social
“ T ” ¯ Truthful and Tolerant
“ H ” ¯ Hindu

श्री भगवान चित्रगुप्तक सन्तति

प्रथम रानी नन्दिनी (सुदक्षिणा) सं :

१. भानु, २. विभानु , ३ विश्वभानु, ४. वीर्यभानु,

(क). भानु –श्रीनगर (श्रीवास)–श्रीवास्तव–खरे, देवसर, सैन्धुरी
(ख). विभानु –सूरध्वज
(ग). विश्वभानु – बाल्मिकी –बम्बइया, कक्षी, सौरविई, निगम
(घ). विर्यभानु – अष्ठाना –मसरकी, मगरवी, कुलश्रेष्ठ

द्वितिय रानी शोभावती (इरावती)

१. चारु, २. सुचारु , ३. चित्राचार, ४. आरुण , ५. चित्रकला, ६. सतिमान, ७. हिमवान, ८.जितन्यि

(क).चारु– माथुर – मथुरिया, पाँचाली
(ख).सुचारु – गौड– वंगाली, देहलवी, बदाउनी
(ग). चित्रागार – भटनागर
(घ). आरुण– कर्ण – मैथिल, जयावाल, तिरहुतिया, कर्णाटकी
(ड). चित्रकला – निगम
(च). सतिमान– सक्सेना
(छ). हिमवान – अम्वष्ट
(ज).जितन्यि – कुलश्रेष्ठ– बरखेरा, छाखेरा

द्रष्टव्य : उपलव्ध सामाग्रीक आधार पर लिखला सं नाम में किछु भूल भऽ सकैत अछि ।

हरिसिंह देवक राज्यकालमें रचित सन्धि विग्रह पदावली में चण्डेश्वर ठक्कुरक वहुत गुणगान कयल गेल छलन्हि । वो ताहि समयक प्रसिद्धि प्राप्त मंत्री छलथिन । हुनका सम्मान में ***“श्रीमानमुष्य तनयो नयनचक्र चूसि “ चण्डेश्वरो विजयते ”केषां नैव धरातले स्तुतिपदं मन्त्री चण्डेश्वर”, “ श्रीमच्चण्डेश्वरीयं निखिलगुण निधिर्गीयतां गौरबेण”*** आदि इत्यादी शव्दपुंजसं विभुषित कयल गेल छलैक । वो विवाद रत्नाकरक रचना कयने छलथिन्ह ।शिर्षक सं कानूनक आभाष भेटैत अछि । तहिना हुनका दोसर रचना कृत्य चिन्तामणि छलन्हि ।

कायस्थ वंशक बास

नेपाल

दास, दत्त, कर्ण,लाभ, निधि,कण्ठ,मल्लिक, सिंह,लाल ,कायस्थ, चौधरी, कानूनगो, सिन्हा, अम्बष्ट,वर्मा, माथुर, प्रसाद, दयाल, श्रीवास्तव, श्रेष्ठ, हाडा, कसजू, वैध, सैजु, न्हयाछौं ।

कायस्थक कर्मक्षेत्र :

धर्मराज चित्रगुप्तः श्रवणो भास्करायदः: कायस्थतत्र पश्यनित पाप पुण्य च सर्वशः ।
चित्रगुप्तम, प्रणम्यादावात्मानं सर्वदेहीनाम ।
कायस्थ जन्म यथाथ्यान्वेष्ठो नोच्यते मया ।

गरुड पुराण में भगवान चित्रगुप्तक राज्य सिंहासन यमपुरी में स्थित छैक । वो अपन न्यायालय मे मनुषक कर्मक हरहिसाव रखैत छथि ।

-उक्त श्लोक में सभ देहधारी के आत्मा के रुप में विधमान चित्रगुप्त (भगवान) कै प्रणाम । कायस्थक जन्म यर्थाथ मे अन्वेषण (सत्यक खोज) हेतू भेल छैक ।

अयुर्वेद आपस्तम्ब शाखा, चतुरखण्ड, यम विचार प्रकरण में भगवान चित्रगुप्त के वंशज चित्ररथ चित्रकूटक महाराज तथा गौतम ऋषि के शिष्य छलाह ।

वहौश्य क्षत्रियजाता कायस्थ अगतितवे । चित्रगुप्त सितथि : स्वर्गे चित्रहिभूमण्डले ॥
चैत्ररथ : सुतस्तस्य यशस्वी कुलदीपकः ।
ऋषि वंशे समुदगतो गौतमो नाम सतम : ॥
तस्य शिष्यो महाप्रशिचत्रकूटा चलाधिप : ॥

प्राचिन काल सं कायस्थ क्षत्रिय कुलक छी । हमरा लोकनिक पूर्वज चित्रगुप्त स्वर्ग मे निवास कय रहल छथि तथा हुनक पुत्र चैत्रस्थ अत्यन्त यशस्वी तथा कुलदीपक ऋषि वंशक महान ऋषि गौतम के शिष्य छलथि । वो अत्यन्त महाज्ञानी, चित्रकूटक राजा रहथि ।

विष्णु धर्मसूत्र प्रथम् परिहासक प्रथम् श्लोक मे कायस्थक सम्वन्ध मे

येनेदम स्वैच्छया, सर्वम , माययाम्मोहितम जगत ।
स जयत्यजितः श्रीमान कायस्थः परमेश्वरः । ।
यमाश्चैके यमाय धर्मराजाय मृतयवे चान्तकाय च ।
वैवस्वताय, कालाय , सर्वभूत क्षयाय च ॥
औदुम्वराय, चित्रायत चित्रगुप्ताय त नमः ।
वृकोदराय, चित्रायत्र चित्रगुप्ताय त नम : ॥
एकैकस्य-त्रीसिन्नजन दध्ज्जला जलीन ।

यावज्जन्मकृतम पापम, तत्क्षणा देव नश्यति ॥

यम, धर्मराज, मृत्यु, अन्तक, वैवस्वत, काल, सर्वभूतो के नाश करयवाला, औदुम्वर, चित्र, चित्रगुप्त, एकमेव आजन्म कयल कैं तत्क्षण नष्ट करक हेतु सक्षम नीलवर्ण आदि महिमा मण्डित परमप्रतापी चित्रगुप्त स्वरुपक अभ्यर्थना करैत छी । पुण्यात्माक हेतु ई कल्याणकारी तथा पापीक हेतु कालरुप छथि ।

कमलाकरभट्टकृत वृहत्व्रहम्खण्ड में निम्न भावना व्यक्त छैक :

"भवना क्षत्रिय वर्णश्च समस्थान समुद्भवात ।
कायस्थः क्षत्रिय : ख्यातो भवान भुवि विराजते ॥"

उत्तर भारत

कर्ण, अम्वष्ट, आस्थाना, अधोलिया, बाल्मिकी, खरे, सक्सेना, माथुर, निगम, सूरध्वज गौड, भटनागर, कुलश्रेष्ठ, बर्मा, श्रीवास्तव

दक्षिण भारत

मुदलियार, नायडु, पिल्ले, नायर, राज , मेमन, रमन, राव, करनाम, लाल, कार्णिक, रेड्डी, प्रसाद,

राजस्थान

गुप्त, नन्द, शर्मन, फुक्तु, भावेकदानवास, माथुर

वंगाल

सेन, कार, पालित, चन्द्र, साहा, भद्रघर, नन्दी, घोष, मल्लिक, मुंशी, डे, पाल , रे(राय) , गुहा, वैध, नाग, सोम, सिन्हा, रक्षित, अकुर, नन्दन, नाथ, विश्वास, सरकार, चौधरी, बर्मन, भावा, गुप्त, मुत्युञ्जय, दत्त, कुडु, मित्र, धर, शर्मन, भद्र, बोस

महाराष्ट्र :

पठारे, चन्द्रसेनी, प्रभु, चित्रे, मथरे, ठाकरे, देशपाण्डे, करोडे,दोदे, तम्हणे, सुले, राजे, शागेल, मोहित, तुगारे, फडसे, आपटे, रणदिये, गडकरी, कुलकर्णी, श्रोफ, वैध, जयवंत, समर्थ, दलवी,देशमुख, मौकासी, चिटणवीस, कोटनिस, कारखनो, फरणिस, दिघे, धारकर, प्रधान ।

गुजरात :

चन्द्रसेनी, प्रभु, मेहता, बल्लभी, बाल्मिकी, सूरध्वज

उडिसा :

पटनायक, पाटस्कर, कानूनगो, मोहन्ती,वाहियार ।

असम :

वरुवा, चक्रवर्ती, पुरुकायस्थ, वैध, चौधरी ।

सिन्ध

आलिभ, फाजिल, कामिल, आडवानी ।

पंजाव

राय, बक्सी , दत्त , सिन्हा , वोस ।

प्रव्रजन (Migration)

भगवान चित्रगुप्तक स्थान स्वर्ग भेलासन्ता हुनक कर्मक्षेत्र सेहो यमलोक छन्हि । पृथ्वी पर धर्म, कर्म, सुव्यवस्थाक हेतू भगवान अपन १२ पुत्र लोकन्हि कैं भरत खण्डक विभिन्न भाग में नियुक्त कयलथिन्ह । उपलव्ध अध्ययन सामग्री सं ई देखना जाइछ जे ज्येष्ट सुपुत्र श्रीवास्तव लोकनि कैंश्रीनगर (कश्मीर) देलथिन्ह । कर्ण कै कर्णाटक, वगांल मे अम्वष्ट, गौर, सेन आदि । किनका कतऽ देलथिन्ह ई अनुसन्धानक विषय अछि । पाछु कहियो यहि पर विषद् अन्वेषण करव ।

कायस्थक राज्यकालक अन्वेषण सं उपलव्ध जानकारी अनुसार (वारहम शताव्दी में कल्हण द्वारा रचित राजतरिगिनीक अनुसार) श्रीनगर (कश्मीर) पर निम्नकायस्थ राजा लोकनि कैं शासन रहन्हिः

नाम	राज्य कालक अवधि (ई)
ललितादित्य	
अवन्ति वर्मन	८५५।५६–८८३
शंकरवर्मन राजा	८८३–९०२
गोपाल वर्मन	९०२–९०४
सुगन्धा	९०४–९०६
पर्थराजा	९०६–९२१, ९३१–९३५
चक्र वर्मन	९३२–९३३
यशस्कर	९३५–९३७
संग्रामदेव	९३९–९४८
पर्वगुप्त	९४८–९४९
अभिमन्यु राजा	९४९–९५०
नन्दी गुप्त	९५०–९७२
त्रिभुवन	९७२–९७३

नाम	राज्य कालक अवधि (ई)
भीमगुप्त	९७३–९७५
दिद्दा	९७५–९८०
संग्रामराज	९८०।९८१–१००३
अनन्त राजा	१००३–१०२८
कलश राजा	१०२८–१०६३
उत्कर्ष	१०६३–१०८९
हर्षदेव	१०८९, १०८९–११०९

यहि पाछु डोगरा सभक राज्य काल मानल जाईत छैक जे मुसलमान आतङ्ककारी द्वारा पन्द्रहम शताव्दी मे कब्जा करवाधरि कायम छलैक। डोगरा सभ कायस्थ कूलक राजा सभ छलथिन्ह ई मान्यता अछि। (द्रष्टव्यः डोगरा व्राम्हण कुलके होइत छैक ई वात हमर मित्र श्री देवेन्दर कुमार डोगरा, सम्प्रति अमृतसर, पंजाव सं ज्ञात भेल अछि)। गुलाव सिंह –प्रताप सिंहक अन्तिम राजसन्तति राजा हरिसिंह छलाह, जे कश्मीर के भारतीय गणराज्य में विलय कऽ देलथिन्ह। ललितादित्यक राज्यकाल में भारतक सीमा वहुत वढी गेल छलैक। आईने अकवरीक अनुसार दिल्ली में १५० सं वेसी पुस्ता धरिकायस्थक राज्यकाल छलैक। अवध में १६ पुस्ता कायस्थ सभराज्य कयने छलथि। वंगाल में राजा तानसेन तथा गौरवंशी लोकनि राज कयने छलथि।

कर्ण कायस्थक मूलस्थल कर्णाटक अछि, लेकिन शासन कयल तथ्य हमरा उपलव्ध नहि भई सकल अछि पाछु अध्ययन कऽ किछु लिखबाक प्रयास करब।

हमरा लग दूगोट शोधपत्र आधारित पुस्तक उपलव्ध अछि जाहिक आधार अवलम्वन करैत हम कर्ण कायस्थक संक्षिप्त इतिहास लिखबाक प्रयास कऽ रहल छी। "नेपाल र एशियाली अनुसन्धान केन्द्र, त्रिभुवन विश्वविद्यालय, कीर्तिपुर, काठमाण्डौं" द्वारा संचालित सिमरौनगढक श्री मोहन प्रसाद खनाल द्वारा अन्वेषित तथा लिखित "सिमरौनगढको ईतिहास", प्रकाशक उल्लेखित केन्द्र, २०५६ संस्करण, औ दोसर श्री शिवराज श्रेष्ठ " मल्ल " द्वारा लिखित "मिथिलाका कर्नाटवंशीहरु र नेपाल मण्डलमा उनीहरुको प्रभाव," प्रकाशक श्री शैलेशराज श्रेष्ठ, खुमल हाईट, ललितपुर।

नान्यदेव

नान्यदेवक इतिहास लम्वा चौडा छैक। अखन ताहि मे प्रवेश कयला सं ई आलेखक उद्देश्यपूर्ति मे वाधक भऽ जायत। तैं संक्षिप्त :

नान्यदेव कर्णाटवंशी छलथि। वो अपन २० वर्षक उमेर में कर्णाटक सं माता पिता, पत्नी सहित दिल्ली आवि ताहि समयक राजदरवार में प्रतिष्ठित पद पर सेवारत भेलथि। दिल्ली प्रवास हुनक हेतू दुखद

रहलन्हि, औ हुनक माता पिता, पत्नी सहित सभ परिवारक स्वर्गवास भऽ गेलन्हि। यहि ठाम सं दूगोट कथन अबैत छैक। वो विक्षिप्त भऽ सरयू नदीक किनार मे रहय लगलथि। एकरात्री कालमे हुनका स्वप्न में तुलजाभवानी प्रकट भऽ आदेश देलथिन्ह जे तों सरयू मे डुवकी लगाकऽ देखहिक। तोरा एकगोट सोनक डिव्वा मे तुलजाभवानीक मूर्ति एवम् पूजाविधि भेटतौक। तो वो निकाली मिथिलाक जनकपुर नजदिक एकगोट सघन जंगल छैक ताहि मे हमर मन्दिर वनाकऽ पूजा कर। प्रातः काल सरयू मे डुवकी लगवा उत्तर स्वप्नक बात सत्य भेलैक। वो निष्ठापूर्वक तुलजा भवानीक पूजा करऽ लगलथि। एक दिन आकाशवाणी भेलैक तथा तद्नुसार वो वोहि जंगल मे जाऽ पूजाआजा कयला पर स्वप्न मे फेर हुनका कहल गेलैक जे अमूक स्थान पर वढका पत्थरक चट्टान हटाकऽदेख, वोहिठाम सात ईनारमें सोन, चाँदी, जवाहरात भरल भेटतौक। ताहि सं नगर वना कय तुलजाक मन्दिर वना। पत्थर हटौलाक बाद इनार सत्य निकललैक। तदउपरान्त श्रीलंका सं राक्षस सभ आवि एक रात्री में पूरा नगर वना देलकैक। ई वात राजभोग माला नामाकृत भाषा वंशावली मे छैक। वहुत विस्तृत छैक, संक्षिप्त लिखल।

दोसर कथानुसार दिल्ली सं विक्षिप्त भऽ निकललाक उपरान्त विक्रमादित्यक षष्टमक सेना मे भर्ती भऽ वो बाट मे विजय हासिल करैत अपन राजधानी चम्पारणक नानपुर मे स्थापित कऽ विक्रमादित्य षष्टम्क महासामन्ताधिपति भऽ शासन करय लगलथि। यहि कालमें वो नेपाल तराईक सिमरवन मे अपन विशाल दुर्ग वनवा कऽ सन १०९७ ई. मे अप्पन राजधानी नानपुर सं स्थान्तरित कऽ सिम्रौनगढ सं शासन संचालित कर लगलथि।

नान्यदेव अप्पन संगहि कर्णाटक सं मुख्य अमात्य कायस्थ कूलभुषण श्रीधर ठक्कुर सहित हुनक १४ सगा सम्वन्धी सहित कै सिम्रौनगढ अनलथिन। पाछु श्रीधर ठक्कुरजीक परामर्श सं दोसर चरण में वीस, तेसर चरण में तीस तथा चारिम चरण में शेष कर्ण कायस्थक परिवार कैं लायल गेलैक। खनालजीक शोध पुस्तकक पृष्ट ५३।७४ मे रामादिव्य ठक्कुर, पृष्ट ५३।७४ कर्मादिव्य ठक्कुर, पृष्ठ ५३।७३।७४ मे मेघ ठक्कुर, पृ. १०४ मे महेश ठक्कुर, पृ. १०४ मे भगिरथ ठक्कुर,उल्लेख भेटैत अछि। खनालजीक शोधक आधार दू गोट भङ्गित शीला पत्र तथा विन्ध्येश्वरी प्रसाद द्विवेदीक तार्किक रक्षा पुस्तक मे इत्यादि न्यनेकानि पद्यानि तत्र बर्तन्ते। श्री महेश ठक्कुरे ण थेघ ठक्कुरापर नामधेयेन भगीरथ ठक्कुरेण च मेध ठक्कुराप चानेका ग्रन्था रचिता विस्तरस्तु तेव्वनुसवधेयः। उपलव्ध समाग्री सं कर्णकायस्थ कर्णाटक सं मिथिला प्रवेशक यथेष्ट आधार देखना जाईत अछि।

हरिसिंहदेवक राज्यकालमें रचित सन्धि विग्रह पदावली में चण्डेश्वर ठकक्कुरक बहुत गुणगान कयल गेल छलन्हि। वो ताहि समयक प्रसिद्धि प्राप्त मंत्री छलथि। हुनका सम्मान मे " श्रीमानमुष्य तनयो नयनचक्र चसि, " चण्डेश्वरो विजयते "," केषां नैव धरातले स्तुतिपदं मन्त्री चण्डेश्वरः, " "श्रीमच्चण्डेश्वरोय निखिलगुण निधिर्गीयतां गौरवेण "विभूषित कयल गेले छलैक। वो विवाद रत्नाकरक रचना कयने छलथिन्ह।शिषर्क सं कानूनक आभाष भेटैत अछि। तहिना हुनक दोसर रचना कृत्य चिन्तामणि छलन्हि।

कर्णकायस्थक वर्ग विभाजन

"आचारो, विनयो, विधा, प्रतिष्ठा, तिर्थ, दर्शनम् ।
निष्ठावृति तपोक्ष्दनम् नवधा कुल लक्षणम् ।"

कर्ण कायस्थक वर्ग विभाजनक हेतू उक्त ९ गोट गुणाधार अपनावोल गेलैक ।

नान्यदेव अपना संगहि लौने छलथिन्ह १४ परिवार । हुनका लोकनि कैं वत्तीसगामा उच्चमूलक मान्यता देल गेलैक । वाँकी सभ कैं उल्लेखित गुणाधार में सं ७ गुणधारी कै भलमानुष, पाँच गुणधारी तक कै गृहस्थ वर्गीकरण भेल छलैक ।

यहिठामम १४ मूल परिवारक मूल डेरा, गोत्र औ प्रबर मन्त्रक उल्लेख करैतछी । भूल भऽ जाय तऽ हमर अनभिज्ञता मानल जाय ।

१. बलाईन, डे. सप्ता, मधेपुरडेरा, गों. शाण्डिल्य, प्र.शाण्डिल्येसित देवलेति त्रिपवरस्य,
२. वीयर, डे.केवटी, तारालाही, हावी, भौवार, वहेडा,वरहेता, वहादुरपुर, मुर्तुजापुर, खराजपुर, रन्वे, दडिमा, कहुवा, डखराम, धेरुख, आहील, पघारी ।
३. शीशव – डे. मेहसाइर, लोहना ।
४. कोठीपाल – डे.राघोपुर, हिरणी ।
५. नरंगवाली – डे.आसी, सुपौल ।
६. पकली – डे.कृष्णपुर ।
७. वत्तीकवाल – डे.सनकौर्थ ।
८. महुनी – डे.लड्डआरि ।
९. माण्डीछ – डे. सुपौल ।
१०. वसन्तपुर – डे.जोंकी ।
११. अठहर – डे. सुन्दरपुर ।
१२. गढकव – डे.सिमरा ।
१३. ओएव – डे. लौफा ।
१४. गढनिधि – डे.रतलाम ।

यहि में उल्लेखित डेरा मूलरुपक अछि । कालान्तर में प्रव्रजन सं वहुत स्थान्तरण भेल अछि । सभ संग्रह सम्भव नहि भेल । किछु सामग्री भेटल छल, जे आधार भऽ सकैत छल, लेकिन वो ३४ गोट मूल देखवैत अछि, सेहो एकगोट के दोसर में घुसियायल । वोकर आधार पर लिखितहुं तऽ नीक शव्द वाणक अपेक्षा रहैत । ई आलेख पूर्ण नहि अछि से हमरा जानकारी अछि । लेकिन भविष्य में लेखनिहार कैं दू आखरक सहयोग अवश्य भेटतन्हि । हम जीवन पर्यन्त नेपाली भाषा मे अभ्यस्त छी, तैं भाषागत त्रुटी सामयिक अछि, ताहि हेतू क्षमा प्रार्थी छी । बहुत दिनक बाद आलेख लिखला सन्ता कनेक कठिन भेल अछि । भूलचुक माफी ।

ऐतिहासिक एवं पर्यटकिय महत्वका धार्मिक स्थल जानकी मन्दिर

डा. शैलेन्द्र नारायण मल्लिक
जनकपुरधाम-१०

विषय प्रवेश :

जनकपुरधाम धार्मिक दृष्टिकोणबाट ऐतिहासिक एवं पर्यटकिय महत्वको प्रसिद्ध एवं पावन स्थल हो, जसलाई बावन कुटी बहत्तर सरोवरको नगरको नामले पनि जानिने गरिन्छ । बावन कुटी बारे तत्कालीन प्रधान मन्त्री रणोद्दीपसिंह राणाको वि.सं. १९४२ सालको एउटा अभिलेखमा उल्लेख भएबाट पनि पुष्टि हुन्छ ।[1] नेपाल भरि मैं मठ-मन्दिरमा उपत्यका पछिको नगरको रुपमा जनकपुरधाम पर्दछ । यहाँका ऐतिहासिक महत्वका प्रसिद्ध धार्मिक स्थल र मठ-मन्दिरहरूमा जानकी मन्दिर, राममन्दिर, लक्ष्मण मन्दिर, जनक मन्दिर, हनुमान गढी, कपिलेश्वरनाथ, कूपेश्वरनाथ आदि छन् । यहाँका प्रायः मठ-मन्दिर र कुटीहरूमा रहेका राम सीताका मूर्तिहरू धातु, पाषाण र संगमरमरका रहेका छन् । यस मध्ये केही मूर्तिहरू पालकालिन र केही मध्यकालीन छन् । राममन्दिरको परिसर भित्र दक्षिण-पश्चिममा नारी र शिशुको मूर्त्ति, पूर्व- उत्तरको शिवलिङ्गमा पालकालीन कला एवं शैली पाइन्छ । जानकी मन्दिर भित्रका मूर्तिहरू अयोध्याको कला र शैलीलाई झल्काउँछ । अन्य मठ-मन्दिर र कुटीहरूमा रहेका अधिकांश मूर्तिहरू संगमरमरका हुनुका साथै तामा, पित्तल, अष्टधातुका रहेका छन । यहाँका प्रायः जसो मठमन्दिरहरू शिखर शैलीका छन् । यीनीहरूमा केही गुम्बाकार, वास्तु शैली, नेपाली वास्तुशैली र मैथिल वास्तु शैलीका छन् । जस्तो कि राममन्दिर र विवाहमण्डप नेपाली शैली अर्थात् पैगोडा शैलीका छन् भने जानकी मन्दिर राजपूत र मुगल वास्तु शैलीका छन् । यस्तै, जनक मन्दिर, लक्ष्मण मन्दिर गुम्बाकार वास्तु शैली अर्थात् चैत्य शैलीका छन् । जनकपुरका प्रायः मठ मन्दिरहरूमा राम सीताका मूर्त्ति छन्, जुन युगल सरकार (युगल-जोडी, सरकार-स्वामी) को रुपमा लोकप्रिय छन् ।[2] यी नै विशिष्टताहरूले जनकपुरधाम प्रसिद्ध धार्मिक नगरको रुपमा समस्त हिन्दू धर्मावलम्बीहरूको स्मृतिपटलमा रही पर्यटकिय स्थलको रुपमा विख्यात रहेको छ ।

जानकी मन्दिर स्थापनाको इतिहास

जनकपुरधामको जानकी मन्दिरको स्थापना अठारहौं शताब्दीको प्रारम्भताकासन्त सुरकिशोर दासले गरेका थिए । सुरकिशोर दासको जन्म जयपुरको सनाढय ब्राह्मण वंशमा भएको मानिन्छ । जयपुर नरेशको दुर्व्यवहारबाट यिनका गुरु गलता मठ छाडेर चित्रकुट तर्फ लागे पश्चात् यिनी पनि लोहाडगढ गई सन्तहरूको समुहमा बस्न थाले । जानकीजी प्रति प्रारम्भ देखि नै उनमा वात्सल्य निष्ठा रहेकोले जानकीको

एउटा प्रतीक मूर्त्ति साथमा राख्ने गर्दथे । सुरकिशोर दास जहाँ जाँदा पनि मूर्त्ति साथ मैं लिएर हिड्ने र सो मूर्त्तिका लागि खिलौना, मिठाई आदि किन्ने गर्दथे । अर्थात् जानकी प्रति पुत्रीभाव दर्शाउने गर्दथे । उनको सो गतिविधिलाई उनका सहबासीहरूले मन पराउँदैन थिए र उनिबाट उनको मूर्त्ति खोसे । सुरकिशोर दास अत्यन्त दुःखित भए र सोहि व्यथाबाट उदिग्न भई मिथिलामा आएका थिए, जहाँ पुत्रीको वियोगमा साधनामय जीवन व्यतित गर्न थाले ।[३] भनिन्छ पहिला खोसिएको जानकीजी को मूर्त्ति जनकपुरमा पुनः प्रकट भयो, जसको स्थापना गरी पुत्रीको सेवामा उनि मग्न रहन थाले । यस बारे उनले आफ्नो पुस्तकको एक छन्दमा यसरी लेखेका छन्-

"मिथिला कलिकाल ग्रसी सिगरी,
तव जानकी जु झटदै उघरी ।"
(सुरकिशोर दास, मिथिला विलास, पृ.४०)

यस सन्दर्भमा अर्को भनाई अनुसार लोहाडगढबाट मिथिला जनकपुरको खोजीमा हिंडेका सन्त सुरकिशोर दास पैदल नै मटिहानी आए र सो देखि उत्तर तर्फ आई घनघोर जंगलमा जनकपुरको खोजी गर्न लाग्दा थकित भई नीमको रुख मुनी निदाए । लोहाडगढमा खोसिएको जानकीको मूर्त्तिरुप स्वयं उनको अगाडी प्रकट भई भन्छिन्- मेरो बुवाको घर जनकपुर यही हो, मेरा मूर्त्तिहरू यही नीमको रुख मुनी छन् । यस लाई झिकेर पूजा गर्नुस्' सपनाको कुराले सुरकिशोर दासलाई आनन्दको सीमा रहेन, नीमको रुख मुनी रहेका सीता र रामका मूर्त्ति झिकेर त्यहिं एउटा सानो कुटी बनाई भगवानको पूजापाठ, भजन कीर्तन गर्न थाले ।[४] माखन झाको अनुसन्धानात्मक कृतिमा उल्लेख भए अनुसार सन्यासी चतुर्भुज गिरीले जतिबेला पांचायन मूर्त्ति भेटाएका थिए त्यतिबेला यस क्षेत्र माथि मकवानपुरको शासन थियो । सम्बत् १७१४ (१६५७ ई.) मा राजाले सयौं विघा जग्गा दान चतुर्भुज गिरीलाई गरेका थिए । सोही समयमा वैष्णव सुरकिशोरजी सीताको एउटा मूर्त्ति खोज गरेका थिए । उनको सपनामा आएर सीताजी ले भनेकी थिइन जहाँ मेरो सुनको मूर्त्ति भेटिन्छ सोही मेरो मूल स्थल हो । जहाँ अहिलेको मन्दिर र सुनको मूर्त्ति पनि रहेको छ ।[५]

यसरी, सन्त सुरकिशोर दासजीलाई जानकीजीले दर्शन दिएको र सीतारामको मूर्त्ति भेटिएको कुराको प्रचार-प्रसारले जनकपुरको महत्व बढन गयो । परिणामतः तत्कालीन समयका राजा-महाराजाहरूको जनकपुर प्रति आकर्षण बढ्यो । सन् १७२७ (वि.सं.१७८४)मा मकवानपुरका सेन राजा मानिकसेनले जानकी मन्दिरमा सीतारामको दर्शन गरी सो मन्दिरका लागि गोसाईं रामदासलाई कुश विर्ता प्रदान गरी मन्दिरको आर्थिक उन्नतिमा योगदान पुऱ्याएका थिए । सो पछि पनि जगतसेन देखि शाह शासकहरूद्वारा जानकी मन्दिरलाई दिइएको भूमिदानले जानकी मन्दिरको आर्थिक उन्नयनमा टेवा पुऱ्याएको पाइन्छ ।

वर्तमान जानकी मन्दिर

जनकपुरधामको जानकी मन्दिर समस्त हिन्दूधर्मावलम्बीहरूको सनातन धर्म प्रतिको आस्थाको केन्द्रको रुपमा एउटा ऐतिहासिक स्थल हो । जनकपुरधामको मुटु जानकी मन्दिरलाई रामायणकालीन मिथिलाको स्मृति प्रतीक मानिन्छ ।

जानकी मन्दिरको स्थापना एउटा छाप्रोमा अठारहौं शताब्दीको प्रारम्भताका एक जना सन्त सुरकिशोर दासजीले गरेको वृतान्त माथि उल्लेख गरि सकिएकोछ । उनि पछिका उनका उत्तराधिकारी महन्थ महात्मा रामकृष्ण दासको पालामा जानकी मन्दिरको वर्तमान स्वरुपको निर्माण भएको हो । यसको निर्माता मध्य भारतको टिकमगढका महाराजा प्रतापसिंहकी रानी वृषभानु कुमारी (वृषभान कुवँरि) थिइन् । उनले पुत्र प्राप्तिको खुशियालीमा जानकी मन्दिरको निर्माण गराएकी थिइन । यस मन्दिरको सिलान्यास वि.सं.१९५२ माघ २८ (सन् १८९४ ई.) गतेका दिन र १२ वर्ष जतिको निर्माण कार्य पुरा भई विधिवत् भगवानको प्रतिष्ठापन वि.सं.१९६७ माघ २८ गते (११ फरवरी १९११ ई.) का दिन भएको थियो । यति बेला महारानी वृषभानुको निधन भई सकेकोले अर्को रानी गणेश कुवँरिले भगवानको प्रतिष्ठापन गराएकी थिइन । यस मन्दिरको निर्माणमा नौलाख खर्चिने संकल्प गरिएको थियो । सम्भवत : यिनै कारणले यस मन्दिरलाई नौलखा मन्दिर पनि भन्ने गरिन्छ । यद्यपि यसको पूर्ण निर्माण खर्च १५ लाख भन्दा पनि वढी भएको मानिन्छ ।[६]

मुगल वास्तु शैली र हिन्दु-राजपूत वास्तुकलामा निर्मित यो मन्दिर स्थापत्य शैलीको एउटा अनुपम उदाहरण रहेको छ । यो मन्दिर ४८६० वर्ग फिट क्षेत्रमा निर्मित ५० फिट अग्लो रहेको छ । यो मन्दिर चारै तिर साना-ठूला गुम्वज र बुर्जाहरूले सुसज्जित किल्ला आकारको छ । यस मन्दिर परिसरमा जम्मा ६० वटा कोठाहरू रहेका छन् । यी मध्ये मन्दिरको मुख्य भाग जसलाई गर्भगृह भनिन्छ, विशेष महत्वका हुनुका साथै आकर्षक पनि छ । यस मुख्य भवन मूनि पनि भवन (तरहरा) रहेको छ, जसको अवलोकन निषेध गरिएको छ । मन्दिरको भव्यता दर्शाउने गुम्बजहरू र त्यस माथिको सुनौला गजूरहरू मन्दिरको सौन्दर्यलाई दर्शाउनुका साथै मन्दिरको फराकिलो परिसर, अर्धवृत आकारको दुई वटा प्रवेशद्वार र सो को वरिपरिको कलात्मक फूलबुट्टा, भगवान र अष्ट मंगलका विभिन्न चित्रहरूले मन्दिरलाई मनमोहक बनाएको छ । मन्दिरको उत्तर तर्फका प्रवेशद्वार माथि दुई वटा विशाल ढुंगाले बनेका सिंहका कलात्मक मूर्त्ति छन्, जसको आँखा हीराजडित थियो, ती हीराहरू चोरिए, तथापि आकर्षक छन् र यिनै दुबै सिंह प्रतिमाको बीचको अण्डाकार ढुङ्गामा कलात्मक रुपमा क्एअर्थात् सीता पैलेस लेखिएको छ । जानकी मन्दिरको यिनै भव्यताका कारण यस मन्दिरलाई नौलखाका अतिरिक्त शीशमहल, जानकी दरवार, नेपालको ताज महल आदि नामले जानिने गरिन्छ ।

यस मन्दिरको पश्चिम भागमा (मूल गर्भगृह पछाडी) जनक- सुनयनाको मन्दिर रहेको छ । यस भित्र जनक- सुनयनाको मूर्त्ति संगमरमरका अयोध्याकला र शैलीका छन्, जुन पुरातात्विक दृष्टिले निकै महत्वपूर्ण मानिन्छन् ।

समग्रमा जनकपुरधामको ख्याति जानकी मन्दिरका कारण रहेकोले यहाँ देश-विदेशबाट आउने दर्शनार्थीहरूको घुइँचो लाग्ने गर्दछ । जानकी मन्दिरको आर्थिक व्यवस्थापन मन्दिरको नाउँमा रहेको जग्गा-जमिनको उब्जा, बहाल, भेंटी आदिबाट हुने गर्दछ । मन्दिरको नाउँमा सयौं विघा जग्गा गुठीमा दर्ता रहेको छ ।जानकी मन्दिरको स्थापनाकाल देखि हालसम्मका महन्तहरू क्रमश: सन्त श्री सुरकिशोर दास, प्रयाग दास, जनक विदेही दास, रामदास, हरिनारायण दास, बलराम दास, सुमरन दास, विश्वम्भर दास, रामगुलेला दास,अभिराम दास, नरहरि दास, हरिभजन दास, रामकृष्ण दास, नवलकिशोर दास र रामशरण दास भएको पाइन्छ भने वर्तमानमा महन्थ रामतपेश्वर दास रहेका छन् ।[७]

सकेत स्रोत सूची:

१. डा. शैलेन्द्र नारायण मल्लिक, जनकपुरको इतिहास,जनकपुरधामः यश मिथिला,२०७५, परिशिष्ट संख्या ५ ।

२. माखन झा, द सेकेड कॉम्पलेक्स इन जनकपुर, इलाहावादः युनाइटेड पब्लिसर्स, १९७१ ई.पृ.२१ ।

३. रामस्वरुप प्रसाद, मिथिला सन्त साहित्य, जनकपुरः बृहत्तर जनकपुरक्षेत्र विकास परिषद्, वि.स.२०५१ पृ.९० ।

४. रिचर्ड बर्घट, द डिस एपियरेन्स एण्ड रिएपियरेन्स आँफ जनकपुर, कैलासः ए जर्नल अफ हिमालयन स्टडिज,भाग-६, काठमाडौः रत्न पुस्तक भण्डार, १९७८ ई. पृ. ५३ ।

५. माखन झा, पूर्ववत्, पृ.३४ ।

६. शिवेन्द्रलालकर्ण र नारायणप्रसाद रिमाल, जनकपुरधामका मठमन्दिरहरूः एक खोजमूलक अध्ययन, जनकपुर धामः बृ.ज.क्षे.वि.परिषद, २०६५, पृ.९० ।

७. जानकी मन्दिरको अभिलेख एवं विश्वनाथ मल्लिकद्वारा लिखित मिथिला दर्पण, (जनकपुरधामः वैदेही अफसेट, वि.स.२०५७) पृ.३८ अनुसार ।

shailn@gmail.com

जमाना हुआ

मुकेश कर्ण

तुमको देखे हुए, अब तो आ जाओ
बहुत सी बात बतानी है
उसे जरा सलीके से सुन जाओ..
प्यार किया एतवार किया, दिल दिया जाँ दिया
अब तो तुम आ जाओ, तुम भी अपने दिल की
बात बता जाओ..
प्यार हमने भी किया, प्यार तुमने भी किया
फिर किस बात की तकलीफ हुई
बस एक बार दिल से बता जाओ
सारे ग़म भूला के अब तुम आ जाओ...

तुलसी: एक अनुपम पौधा

डा. किरण बाला, पीएच.डी.
एसोशिएट प्रोफेसर, वनस्पतिशास्त्र विभाग,
ठाकुर राम बहुमुखी क्याम्पस, वीरगञ्ज (नेपाल)

तुलसी का पौधा एक अनुपम पौधा है । प्राचीन काल में तुलसी के निरन्तर प्रयोग से ऋषियों ने जब यह अनुभव किया कि यह वनस्पति एक नहीं, अनेक रोगों में लाभकारी है तथा इसके द्वारा आसपास के वातावरण भी शुद्ध और स्वास्थ्यप्रद रहता है, तब उन्होंने अनेक प्रकार से इसके प्रचार का प्रयत्न किया । प्रत्येक घर में तुलसी का पौधा लगाना और उसमें जलसिञ्चन करते हुए उसकी अच्छी देखभाल करते रहना इत्यादि कामों को धर्म और कर्तव्य बतलाया गया । धीरे-धीरे तुलसी के स्वास्थ्य-प्रदायक गुणों और सात्विक प्रभाव के कारण उसकी लोकप्रियता इतनी बढ़ गयी कि लोग उसे भक्तिभाव से देखने लगे और उसे पूज्य माना जाने लगा । तुलसी केवल शारीरिक व्याधियों को ही दूर नहीं करती, अपितु मनुष्य के आन्तरिक भावों और विचारों पर भी उसका कल्याणकारी प्रभाव पड़ता है ।

आयुर्वेद में तुलसी को जड़ी-बूटी की रानी कहा गया है । यह अनेक असाध्य बीमारियों के निदान में सहायक होती है । इसका धार्मिक, सांस्कृतिक एवम् धार्मिक महत्व है । शायद ही कोई हिन्दू परिवार होगा जिसके आँगन में तुलसी का बिरवा न देखने को मिले । यह एक अतुलनीय पौधा है । यह एक ओर हिन्दू आस्था का प्रतीक है, तो दूसरी ओर औषधीय गुणों से परिपूर्ण है । अनादिकाल से ही हिन्दू धर्मावलम्बी इसकी सुबह-शाम पूजा किया करते हैं । ऐसी मान्यता है कि जिस आँगन में तुलसी का पौधा हरा-भरा रहता है, उस परिवार की उत्तरोत्तर उन्नति होती है । साथ ही तुलसी के पौधे का सूख जाना उस परिवार में आनेवाली विपत्ति का संकेत माना जाता है । हमारी संस्कृति में तुलसी को माँ लक्ष्मी का स्वरूप माना जाता है । इसीलिए घर के आँगन में इसे पूजनीय स्थान दिया जाता है । तुलसी एशिया महाद्वीप के दक्षिणी भाग – भारत, नेपाल, भूटान, श्रीलंका जैसे हिन्दू प्रभावित क्षेत्रों में पायी जाती है ।

तुलसी का स्वरुप:-

तुलसी एक झाड़ीनुमा पौधा है, जो १ से ३ फूट तक ऊँचा होता है । इसकी पत्तियाँ १ से २ इञ्च लम्बी, सुगन्धित और आयताकार या अण्डाकार होती है । वनस्पतिविज्ञान के अनुसार एक द्विबीजपत्री पौधा है । पुष्प-मञ्जरी अत्यन्त कोमल, लगभग ८ इञ्च लम्बी होती है, जिस पर बैगनी एवम् गुलाबी रंग के छोटे-छोटे पुष्प चक्रों में सुसज्जित होते हैं,जिसे पुष्पक्रम कहते हैं । पुष्प का आकार हृदयाकार होता है ।

बीज चपटे, छोटे, अण्डाकार एवम् पीत वर्ण के होते हैं। तनें एवम् पत्तियों पर हल्के रंग के रोएँ पाये जाते हैं। तने का स्वरूप चतुष्कोणीय होता है। इसी तने से तुलसी की माला अर्थात् कण्ठीमाला बनायी जाती है। वैष्णव सम्प्रदाय में तुलसी की माला का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है।

तुलसी के प्रकार:-

सामान्यतया तुलसी का पौधा प्रायः दो प्रकार का होता है जिनको "रामा" और "श्यामा" कहा जाता है। रामा-तुलसी या हरी तुलसी का वैज्ञानिक नाम ओसीमम सैन्कटम है। इसकी पत्तियाँ हरे रंग की होती हैं और मञ्जरी गहरे भूरे रंग की। यह चर्मरोग एवम् अन्य स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानियों के निवारण हेतु उपयोग किया जाता है। इसकी शाखाएँ श्वेत वर्ण की होती हैं तथा इसकी गन्ध एवम् तीक्ष्णता कम होती हैं। इसीप्रकार, श्यामा-तुलसी या कृष्णा तुलसी का वैज्ञानिक नाम ओसीमम बासिलिकम है। इसकी पत्तियाँ हल्के जमुनी या काले रंग की होती हैं। मञ्जरी भी जमुनी रंग की होती है, शाखाएँ १ से ३ फूट लम्बी, बैगनी रंग की होती हैं एवम् पत्ते अण्डाकार या आयताकार होते हैं। इसका प्रयोग सर्दी, जुकाम, बुखार एवम् कफ की समस्या के निवारण के लिए होता है। श्वास सम्बन्धी रोगों के लिए भी यह अत्यन्त लाभकारी है। तुलसी की दूसरी जाति "वन तुलसी " है, जिसे "कठेरक" भी कहा जाता है। इसकी गन्ध घरेलू तुलसी की अपेक्षा बहुत कम होती है तथा इसमें विष का प्रभाव नष्ट करने की विशेष क्षमता होती है। रक्त-दोष, कोढ़, चक्षु-रोग और प्रसव की चिकित्सा में भी यह विशेष उपयोगी होती है। तुलसी की तीसरी जाति को "मरूवक" कहते हैं। राजमार्त्तण्ड ग्रन्थ अनुसार हथियार से कट जाने या रगड़ लग कर घाव हो जाने पर इसका रस लाभकारी होता है। किसी विषैले जीव के डंक मार देने पर भी इसको लगाने से आराम मिलता है। इसीप्रकार, तुलसी की चौथी जाति "बरबरी" या "बुबई तुलसी" होती है, जिसकी मञ्जरी की गन्ध अधिक तेज होती है। इसके अतिरिक्त तुलसी की और एक-दो जातियाँ विभिन्न प्रदेशों में पायी जाती हैं।

तुलसी की रासायनिक संरचना:-

तुलसी की मान्यता एक औषधीय पौधा के रूप में है, जो अनेक प्रकार के स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानियों को दूर करता है। इससे स्पष्ट होता है कि इसकी रासायनिक संरचना अति महत्वपूर्ण है। अभी तक सम्पूर्ण तत्वों की जानकारी प्राप्त नहीं हो सकी है, परन्तु अनेक अनुसन्धान के द्वारा तुलसी में विद्यमान अनेक जैव-सक्रिय रसायनों का पता चला है, जिसमें ट्रैनिन, सैवोनिन, ग्लाइकोसाइड एवम् एलकेलाइडस इत्यादि प्रमुख हैं। इसके साथ ही तुलसी में पाया जाने वाला सबसे अधिक क्रियाशील तत्व है, एक उड़नशील तेल, जिसकी मात्रा ०.१% से ०.३% पायी जाती है। स्वास्थ्य के क्षेत्र में अनुसन्धानरत एक भारतीय संस्था के रिपोर्ट के अनुसार इस तेल में लगभग ७१% यूजिनॉल, २०% यूजिनॉल मिथाइल इथर तथा ३% कार्रवाकोल होता है। रामा-तुलसी में तेल की मात्रा एवम् उसका सापेक्षिक घनत्व श्यामा-तुलसी की तुलना में अधिक होता है। तेल के अतिरिक्त तुलसी पत्रों में लगभग ८३ मिलिग्राम विटामिन "सी" एवम् २.५ मिलिग्राम कैरिटीन होता है। पत्रों के अतिरिक्त बीजों में तेल की मात्रा १७.८% पायी जाती है, जिसमें सीटोएस्टिरोल, वसा-अम्ल जैसे पामिटिक, स्टीयरिक, ओलिक, लिनोलेनिक एवम् लिनोलिक अम्ल प्रमुख हैं। तेल के अतिरिक्त तुलसी के बीजों में पेण्टोसहेक्सायूरेनिक अम्ल एवम् राख ०.२% पाया जाता है।

तुलसी का वैज्ञानिक महत्व:-

१) प्रतिरक्षा-तन्त्र :- तुलसी के पत्तों की चाय हमारे प्रतिरक्षा-तन्त्र को मजबूत बनाता है, जिससे अनेक रोगों से शरीर की रक्षा होती है । इसके नियमित सेवन से हमारा शरीर स्वस्थ्य रहता है ।

२) रक्त-शर्करा :- तुलसी हमारे शरीर की उपापचयी-क्रियाओं को सुचारू रूप से चलाने में सहायक होती है, जिससे शर्करा के कण ऊर्जा में परिवर्तित हो जाते हैं और रक्त में शर्करा का स्तर सामान्य हो जाता है ।

३) त्वचा-रोग - तुलसी के पत्तों को उबालने के बाद उसमें पॉलिफेनॉल नामक रासायनिक तत्व पाया जाता है, जो त्वचा पर होने वाले कील, मुँहासे, दाग, धब्बे और झाइयों से निजात दिलाता है । नींबू के रस के साथ तुलसी पत्ते का रस मिलाकर चेहरे पर लगाने से त्वचा में निखार आ जाता है । नारियल तेल के साथ तुलसी पत्ते के रस का उपयोग से सफेद दाग भी ठीक हो जाता है ।

४) बालों के लिए :- बालों में किसी प्रकार की समस्या, जैसे बाल झरना, बाल सफेद होना इत्यादि, में तुलसी पत्ते का रस नारियल तेल या अन्य तेल में मिलाकर बालों की जड़ों में लगाने से फायदा होता है । इसका सेवन नियमित रूप से लम्बे समय तक करना पड़ता है । बालों में जूँएँ की समस्या होने पर नींबू के रस के साथ तुलसी के पत्तों का रस मिलाकर लगाने के कुछ घण्टों बाद धो लें, जूँएँ से निजात मिल जाएगा ।

५) दाँतों का रोग :- दाँत का दर्द, दाँतों में कीड़ा लगना, मसूड़ों से खून आने जैसी समस्याओं में तुलसी का अर्क ४-५ बूँद सुसुम पानी में डालकर कुल्ला करने से राहत मिलती है ।

६) कान का दर्द :- कान में दर्द होने पर तुलसी पत्ते का रस हलका गुनगुना कर के एक बूँद डालने से आराम मिलता है ।

७) हृदय सम्बन्धी रोग :- तुलसीदल का नियमित सेवन करने से कोलेस्ट्रॉल की मात्रा कम होती है तथा यह रक्त के थक्के जमने से रोकती है । इससे दिलका दौरा पड़ने की सम्भावना भी कम हो जाती है । साथ ही यह अतिरिक्त वसा को घटाकर वजन कम करने में भी सहायता करती है ।

८) अवाञ्छित तत्व :- तुलसी में पाये जाने वाले रासायनिक तत्व हमारे शरीर के अन्दर स्थित हानिकारक एवम् अवाञ्छित तत्वों को बाहर निकाल देते हैं, जिससे शरीर के आन्तरिक अंगों की सफाई होती रहती है । तुलसी का नियमित उपयोग स्मरण-शक्ति बढ़ाने में भी कारगर होता है ।

९) यौन रोगों के इलाज में :- पुरुषों में शारीरिक दुर्बलता होने पर तुलसी के बीज का इस्तेमाल अत्यन्त फायदेमन्द होता है ।

१०) अनियमित माहवारी की समस्या :- महिलाओं में अनियमित माहवारी की समस्या में तुलसी के बीज को पानी में भिंगोकर खाली पेट खाने से लाभ मिलता है । इसके साथ ही, सब प्रकार के ज्वर, शिशु के रोग, सर्दी जुकाम, उदर रोग इत्यादि में भी तुलसी के अनेक लाभकारी प्रयोग ग्रन्थों में बतलाये गये हैं ।

तुलसी का धार्मिक महत्व:-

हमारी संस्कृति में तुलसी को एक महत्वपूर्ण धार्मिक पौधा माना जाता है । अब इस सन्दर्भ में कुछ विशेष बातों की चर्चा करें ।

१) हिन्दू धर्म में मान्यता है कि तुलसी के पौधे की जड़ में सभी तीर्थ, तना में सभी देवी-देवता, तथा ऊपरी शाखाओं में सभी वेद स्थित होते हैं। जिस घर में इस पौधे की स्थापना की जाती है, वहाँ आध्यात्मिक उन्नति के साथ ही सुख, शान्ति और समृद्धि आती हैं।

२) पद्मपुराण के अनुसार जहाँ तुलसी का एक भी पौधा होता है, वहाँ त्रिदेव अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु एवम् महेश निवास करते हैं।

३) तुलसी का एक नाम वृन्दा है। प्राचीन काल में मथुरा के पास कई योजन में फैला हुआ इसका एक विशाल वन था, जिसे वृन्दावन कहते थे और यह वृन्दावनधाम आज भी भारत के उत्तर-प्रदेश राज्य में अवस्थित है।

४) वृन्दा यानि तुलसी से प्रेम के कारण द्वापर युग में भगवान विष्णु कृष्णावतार में यहाँ विहार करते थे। इसलिए उनका एक नाम वृन्दावन-विहारीलाल भी है।

५) गरुड़पुराण के अनुसार मृत्यु-शैया पर पड़े व्यक्ति को जल में तुलसीदल डालकर पिलाने से मोक्ष की प्राप्ति होती है।

६) भगवान विष्णु के सभी स्वरूपों का एवम् श्रीहनुमानजी का भोग बिना तुलसीदल के नहीं लगता।

७) मार्कण्डेयपुराण के अनुसार देव-दानवों के द्वारा किया गया समुद्र-मन्थन के समय जो अमृत धरती पर छलका, उसीसे तुलसी की उत्पत्ति हुई है। इसलिए इसके प्रत्येक भाग में अमृत समान गुण विद्यमान रहता है।

८) औषधि के रूप में तुलसी की उत्पत्ति से भगवान विष्णु का सन्ताप दूर हुआ था, इसलिए तुलसी को सञ्जीवनी बूटी भी कहा जाता है।

९) भगवान श्रीहरि अर्थात् विष्णु को तुलसी अत्यन्त प्रिय हैं, अतः यह हरिप्रिया कहलाती है।

१०) तुलसी का विवाह भगवान विष्णु से हुआ था अतः यह लक्ष्मी का प्रतीक भी माना जाता है।

उपसंहार :-

तुलसी मात्र एक पौधा नहीं है। यह अनगिनत गुणों की खान है। इसके प्रत्येक अंग में औषधीय गुण है। वैज्ञानिक महत्व के साथ ही यह हमारे धर्म एवम् संस्कृति का प्रतीक है। तुलसी का वायु प्रदूषण को कम करने में भी महत्वपूर्ण योगदान है तथा अत्यधिक ऑक्सीजन वातावरण को प्रदान करने में भी सहयोग करती है। इससे हमें शारीरिक, मानसिक और आत्मिक लाभ मिलते हैं। तुलसी में पाये जाने वाले इन सब लाभों को समझकर पुराणकारों ने सामान्य जनता में उसका प्रचार बढ़ाने के लिए अनेक कथाओं की रचना कर डाली। तुलसी के बीज-वपन, रोपण और उसकी पूजा-प्रतिष्ठा की अनेक और विशेष विधियाँ बनायी गयीं। इसप्रकार ज्येष्ठ मास के शुक्लपक्ष की निर्जला एकादशी तिथि के रोज इसके बीज-वपन तथा आषाढ़ शुक्लपक्ष की हरिशयनी एकादशी तिथि में तुलसी के पौधा को रोपने की रीति प्रचलित है। इसी तरह, कार्तिक मास के शुक्लपक्ष की देवोत्थान या हरिबोधिनी एकादशी तिथि के रोज तुलसी का भगवान विष्णु के साथ विवाह होने के उपलक्ष्य में इस दिन इसकी विशेष पूजा की जाती है। अतएव तुलसी एक अनुपम पौधा है तथा सभीप्रकार से वन्दनीय एवम् पूजनीय है।

नेपालको कृषि अर्थतन्त्रमा मांसाहार

चन्द्र किशोर मल्लिक
विराटनगर-१३

'अहिंसा परमो धर्मः' सनातन हिन्दू धर्मको यो एउटा महत्वपूर्ण सूत्र हो । अहिंसा के लाई भन्ने विषयमा नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालयको शब्दकोषमा यसरी अर्थ दिइएको छ :

- बौद्ध मतानुसार चर र अचरलाई दुःख नदिनु ।
- योगशाष्त्र अनुसार पाँचथरीको यम मध्ये प्रथम (यम भन्नाले अहिंसा, सत्य, अस्तेय, व्रम्हचर्य, अपरिग्रह)
- यसमा मन वाणी र शरीरले कुनै पनि प्राणीलाई कत्ति पनि दुःख नदिनु र सम्पूर्ण प्राणीमा आङ्नो झैं हित गर्नुलाई अहिंसा भनिन्छ ।
- वेद विहीत हिंसालाई अहिंसा ठान्नु ।
- द्विज, गुरु, अग्नि आदिको विधिपूर्वक पूजा गर्दा गरिने हिंसालाई अहिंसा ठान्नु ।

अहिंसाका चार भेद छन्:-

(१). जात्यवछिन्न अहिंसा जस्तै माछाबाहेक अरु प्राणीको हिंसा गर्दिनँ भनी जाति तोकेर गरिने अहिंसा ।
(२). देशवछिन्न अहिंसा जस्तै तीर्थमा हिंसा गर्दिनँ भनी देश तोकेर गरिने अहिंसा ।
(३). कालावछिन्न अहिंसा जस्तै एकादशी, औंसी आदि पर्वमा हिंसा गर्दिनँ भनी काल तोकेर गरिने अहिंसा । र,
(४). समयवछिन्न अहिंसा जस्तै विवाहमा बाहेक अरु बेला हिंसा गर्दिनँ भनी समय तोकेर गरिने अहिंसा ।

उक्त शब्दकोषमा,

- मांसाहार भन्नाले मासु खानु ।
- शाकाहार भन्नाले सागपात, अन्न, फलफुल खानु ।
- फलाहार भन्नाले फल मात्र खानु र फलबाट मात्र बनेको खानेवस्तु ।
- दूग्धत्रयम भन्नाले गाई, भैंसी र बाखीको दूधलाई भनिएको छ ।

मानव समुदाय विभिन्न आधारमा शाकाहारी देखिन्छन् :-
(१). धार्मिक आधारमा,
(२). स्वास्थ्यको आधारमा,
(३). पशु अधिकारको आधारमा,
(४). पर्यावरण र प्रदूषणको रोकथामको आधारमा ।

(१). **धार्मिक आधारमा शाकाहारीको धारणाः–** सनातन हिन्दू धर्म अन्तर्गतका वैष्णव सम्प्रदाय (विष्णु, राम, कृष्ण आदिको उपासक/सेवक) मा दीक्षित समुदाय (गृहस्थ, वैरागी र साधुहरु) ले कुनै पनि प्रकारको जीवको हत्या गर्दैनन् वा मासु खाँदैनन् । शैव समुदायमा अघोरी बाहेक अन्यले माछा-मासु खाँदैनन् । शाक्त समुदायका तान्त्रिक र बलि प्रथा स्वीकार गर्ने बाहेकका सानो समूह (वैष्णवी) ले माछा-मासु खाँदैनन् ।

बौद्ध धर्मावलम्बीभित्रका महायान सम्प्रदायले माछा-मासुको सेवन गर्दैनन् । हीनयान (थेरवाद) र वज्रयान समुदायले माछा-मासु खान्छन् तर मासु उनकै लागि भनी मारिएको हुनुहुँदैन । ताइवानमा लसुन प्याज समेत खाँदैनन् ।

जैन सम्प्रदायका दिगम्बर जैन र स्वेताम्बर जैन सवै शाकाहारी हुन्छन् । श्वेताम्बर जैनका साधक-साध्वीले त कीरा-फट्यांग्रा आफूबाट नमारियोस भनी मुखमा सेतो मास्क लगाई हातमा कुचो लिई हिंड्छन् । यिनीहरु ताजा र सुख्खा फल खान्छन् । गेडागुडी, दूध, मह खान्छन् । लसुन, प्याज, च्याउ खाँदैनन् ।

(२). **स्वास्थ्यका कारणले शाकाहारी :–** रक्तचाप, ह्दयरोग, मधुमेह जस्ता रोग लागेका मानव समूहलाई चिकित्सकले छाला-बोसो भएको मासु, रातो मासु वा जीवजन्तुको भित्री अङ्ग नखाने सल्लाह दिने गरेका कारणले त्यस्ता समूह स्वास्थ्यका कारणले शाकाहारी हुन्छन् । माछामासुको गन्ध मन नपर्ने, स्वाद मन नपर्ने, वान्ता हुने र एलर्जी हुने समूह शाकाहारी हुन्छन् ।

अनाज, फल, तरकारीमा प्रशस्त मात्रामा फाइबर र एण्टी-अक्सिडेण्ट पाइन्छ जसले अनेक रोग हुनबाट जोगाउँछ । मासुजन्य भोजनमा पाइनेजति पोषक तत्व शाकाहार भोजनमा सहज उपलब्ध छन् ।

(३). **पशु अधिकारवादी समूह :–** निरीह, निमुखा जीवजन्तुको हत्या, बलि प्रथा विरुद्धको अभियानमा लागेका समूह शाकाहारी हुन्छन् । यस्ता समूहभित्र धार्मिक कारणले वा मांसाहारप्रति अरुची हुने बहुसंख्यक समूहको संलग्नता देखिन्छ ।

प्रकृतिले मानिसको शरीर मांसाहार गर्न योग्य बनाएको छैन, हिंश्रक मांसाहारीजस्तो मानिसको दाह्रा र नंग्रा हुँदैन, आन्द्रा पनि सानो हुन्छ, मांसाहार पचाउन सक्दैनन् ।

(४). **पर्यावरण र प्रदूषण रोकथामको आधारमा :-** जीवजन्तु पालन र सो को मांसाहारको विरुद्ध रहेका समूह शाकाहारी छन् । यस्तो अभियान विकसित पाश्चात्य मुलुकमा क्रियाशील छ । उनीहरुको भनाईमा गाई, भैंसी, खसी, बाखाको व्यावसायिक पालन भै रहेको फार्ममा रहेका जनावरहरुले दिनभर घाँस पराल आहार चपाई रहँदा गर्ने डकार र वायु त्यागले मिथेन ग्यास उत्सर्जन भै प्रदूषण भै रहेको छ । अतः दूध र मासुका लागि गरिने यस्ता व्यावसायिक पशुपालन बन्द हुनुपर्दछ ।

पशुपालन नै नभएमा मासुको उत्पादन नहुने र मासुको उपलब्धता नभएपछि बाध्य भएर शाकाहारी हुनुपर्ने यस्ता अभियानकर्ताको उद्देश्य रहेको छ ।

पाश्चात्य मुलुकमा विभिन्न किसिमका शाकाहारी देखिएका छन् :-

- ओभो-ल्याक्टो भेजिटेरियन : अण्डा र दूध तथा दूग्धजन्य पदार्थ समेत अन्न, सागपात, फलफूल खाने शाकाहारी ।
- ओभो भेजिटेरियन : अण्डा र अन्य सागपात, अन्न र फलफूल मात्र खाने तर दूध र दूग्धजन्य पदार्थ नखाने शाकाहारी ।
- ल्याक्टो भेजिटेरियन : दूध र दूग्धजन्य पदार्थ तथा अन्न, सागपात र फलफूल खाने तर अण्डा नखाने शाकाहारी ।
- सेमी भेजिटेरियनमा ओभो-ल्याक्टो-भेजिटेरियनका साथै माछा र चिकेन सामेल गरी खान्छन् ।
- केही शाकाहारीले मासु र सो बाट बनेका पदार्थका साथै मह र मैन, छाला र रेश्मी वस्त्र समेतलाई अस्वीकार गर्दछन् ।
- कोही शाकाहारीले मासु र सो बाट बनेका वस्तु, दूध र दूग्धजन्य पदार्थ तथा अण्डा समेत खाँदैनन् ।

मांसाहारीको धारणा:-

सुप्रसिद्ध जीववनस्पति वैज्ञानिक सर जगदिशचन्द्र बसु (सन् १८५८-१९३७) ले पत्ता लगाए कि वनस्पति, रुख-बिरुवामा पनि जीवजन्तु सरह नशा, स्नायु प्रणाली र संवेदनशीलता हुन्छ ।

काँचो रुख काट्दा वा काँचो फल टिप्दा एउटा चिल्लो पदार्थ रस निस्कन्छ । केही झाड, वनस्पतिमा संवेदनशीलता प्रत्यक्ष देखिन्छ, त्यसलाई छुनासाथ त्यो खुम्चिन्छ ।

काँचो रुख काट्नु वा रुखमा लागेको फल टिप्नु हुँदैन । काटनु/टिप्नु भनेको जीवहिंसा हो ।

डकार र वायुत्याग घरेलु अन्य जन्तु कुकुर, बिरालो तथा मानिसले पनि गर्दछ, वायु प्रदूषणको धारणा स्पष्ट छैन ।

दूध दुई किसिमको हुन्छ :-

(१). **स्तनधारी जीवजन्तुको दूध:-** जीवजन्तुको दूध भन्नाले गाई, भैंसी, बाखी, भेंडी, उँटनी, घोडी, गधी, चौरी गाई (नाक) आदिको दूध ।

दूध स-साना बच्चाहरुका लागि पौष्टिकताको प्रारम्भिक श्रोत हो। दूध पचाउन सक्ने क्षमता बच्चाहरुमा मात्र हुन्छ। जवसम्म बच्चाहरु अरु आहार खाँदैनन् तवसम्मको लागि पौष्टिकताको श्रोत दूध नै हो। दूधले पौष्टिकताका साथै रोग प्रतिरोधक क्षमता र निर्जलीकरण समेतको विकास गर्दछ। तर मानिस वयस्क भएपछि दूध पचाउने क्षमता ल्याक्टेसमा कमी हुन थाल्दछ। अतः दूधको सट्टा सो बाट बनेका वस्तु-पदार्थ दही, मही, घ्यू, क्रिम, पनिर, चीज खाने चलन रहेको छ। यसरी दूधलाई दही बनाउँदा मनतातो दूधमा 'जोडन' अर्थात ब्याक्टेरिया (खमिर) हालेर जैवरासायनिक प्रक्रियाद्वारा दही बनाइन्छ। यसरी परोक्ष रुपमा मांसाहार हुन जान्छ।

(२). **वनस्पतिबाट बनाइएको दूधः-** वनस्पति दूध भन्नाले हाडे बदाम पिसेर बनाइएको दूध, नरीवल पानी, भातको मांड, भटमास (सोया) को दूधलाई भनिएको छ।

- गाईले आफ्नो बाच्छा-बाच्छीको लागि मात्र उत्पादन गर्ने दूध खोसेर मानव जातिले आफ्नो लागि संग्रह गर्नु, खानु हिंसा हो।
- माहुरीले आफ्नो लागि मह संग्रह गरेको हुन्छ। तर मानवले महको चाका भत्काउनु, माहुरीलाई धपाउनु वा मार्नु र मह निकालेर खानु हिंसा हो।
- जन्मनुभन्दा अगाडीको प्रारम्भिक रुप अण्डा हो। अण्डा खानु जीव हिंसा हो।

हिन्दू धर्म ग्रन्थमा मांसाहारको प्रावधानः-

- सनातन हिन्दू धर्म अन्तर्गत याज्ञवल्क्य स्मृतिको अथ भक्ष्याभक्ष्य प्रकरणको श्लोक १७७ मा सेधा, गोधा, कछुवा, साही (दुम्सी) तथा खरायोको मासु र सिंही, रोहु, राजीव र सशल्क द्विजहरुको लागि भक्षणीय अर्थात खानयोग्य भनिएको छ।
- मिथिलामा प्रचलित कर्मकाण्ड वर्षकृत्य पद्धति र भक्ष्याभक्ष्य विषयमा विभिन्न स्मृति, संहिता र धार्मिक ग्रन्थको आधारमा माछामासु खाने विषयमा भनिएको छ : वेद तथा स्मृतिमा देवकर्म-पितृकर्ममा मासु विहीत रहेको हुँदा धर्म, अर्थ, काम र मोक्षको साधन मासु हो भनी प्रमाणित हुन्छ। शुक्ल यजुर्वेदीय माध्यन्दिन शाखाको सन्दर्भ दिइएको छ।
- श◊ स्मृति अनुसार सिंही, रोहु, बोआरी काँडावाला माछालाई भक्ष्य भनिएको छ।
- भृगु संहिता अनुसार बोआरी माछा, हारित (विशेष पञ्छी), भेंडाको मासु, पञ्छीको मासु, खसीबोकाको मासु, चित्रमृगको मासु, बँदेलको मासु, राँगाको मासु, खरायोको मासु, कछुवाको मासु र वाघ्रणिस (एक प्रकारका सेतो प्वाँख, रातो शीर र सेतो कण्ठ भएको चरा) बाट पितृवर्ग तृप्त हुन्छन्।
- गौतम संहितामा भनिएको छ, माछा, हरिण, रुरु हरिण, खरायो, कछुवा, बँदेलबाट पितृवर्ग तृप्त हुन्छन्।
- विष्णु संहिताको प्रायश्चित प्रकरण ५१ अध्यायमा भनिएको छ : बोआरी, रहु, राजीव, सिंहतुण्ड तथा विहीत पञ्छीबाहेक अन्य मासु खाएमा तीन रात्री उपवास गर्नु पर्दछ।
- विष्णु पुराणको श्राद्धकल्पको सोह्र अध्यायको तेश्रो अंशमा भनिएको छ : हविस्य वस्तु कछुवा, खरायो, पञ्छीको मासु, बँदेल, छाग-बोका, मृग विशेष, भेंडा तथा वाघ्रणिसको मासु पितृकर्मको लागि आवश्यक हुन्छ।

- स्कन्द पुराण, काशी खण्डमा देवकार्य, पितृकार्यका लागि बोआरी र रहु माछा भक्ष हो भनिएको छ ।
- कुर्म पुराणमा भनिएको छ : काँडावाला माछा तथा भेंडाको मांस भक्ष्य छ तर देव तथा ब्राह्मणलाई निवेदन गरेपछि मात्र ।
- वर्षकृत्यमा कुन प्रकारका माछा-मासु खान हुने, कसरी अर्पण गरी मात्र खाने, कुन खान नहुने विस्तृत रुपमा भनिएको छ, प्राण रक्षा हेतु ब्रह्माले स्थावर जङ्गमको रचना गर्नु भएको छ, अतः खाद्य पदार्थ खाने दोषको भागी हुँदैनन् ।
- यम स्मृतिमा भनिएको छ, फलक, तित्री, बट्टाई भक्ष्य छ ।
- भृगु संहितामा गाउँघरमा रहेका भँगेरा र कुखुरा अभक्ष्य तर वनमा रहेका बगेरी र वनकुखुरालाई भक्ष्य भनिएको छ ।
- मयुर, तित्री, परेवा, कपिंजल, जल पिउने बेला दुवै कान जल स्पर्श गर्ने छाग, बगुला र हाँस प्रजापतिले भक्ष्य भनेका छन् ।

नेपालका वैदिक विद्वान शुक्लयजुर्वेदाचार्य आमोदवर्द्धन कौण्डिन्न्यायनज्यूले आफ्नो रचना लसुन, प्याज नखाने र मासु खाने नेपाली ब्राह्मणहरुका परम्पराको शाष्त्रीय विवेचना पुस्तिकाको प्रकरण ९ देखी १६ सम्ममा मांसाहार र हिंसा अहिंसाको विषयमा लेख्नु भएको छ, जस अनुसार,

प्रकरण ९ मा भनिएको छ, वेदका मन्त्र संहिता शतपथ ब्राह्मणादी ब्राह्मण ग्रन्थ र कात्यायन श्रौत सूत्रादि श्रौत सूत्र ग्रन्थ इत्यादिमा निरुढ पशुबध, अग्निष्टोम सोम इत्यादि यज्ञ गर्ने, ती यज्ञहरुमा छागादि (बोका इत्यादि) पशुहरुको आलम्मन (शाष्त्रमा बताएका रितिले मार्ने काम) गर्ने र विधिपूर्वक पशुका अङ्गहरु होम्ने स्पष्ट विधान छ । यज्ञमा यजमानले र ऋत्विकहरुले पाश्वडारुप मासु अवश्यै खानु पर्छ भन्ने वेदको विधान भएकाले तेसरी मासु नखाएमा विधिलोप हुन गै यज्ञ नै सिद्ध हुँदैन ।

प्राण सङ्कटमा पर्दा, श्राद्धमा, यज्ञमा प्रोक्षित गरिएकोमा ब्राह्माणादिको इच्छा भएकामा तथा देवतालाई र पितृलाई चढाएकामा मासु खानेलाई दोष लाग्दैन ।
प्रकरण १० मा भनिएको छ, वैध हिंसा गर्दा र वैध मासु खाँदा दोष लाग्दैन ।
प्रकरण ११ मा भनिएको छ, प्राण सङ्कटमा अयज्ञियादि मांस पनि खान हुन्छ ।
प्रकरण १२ मा भनिएको छ, पोष्य वर्गको भरणपोषणका निम्ति पनि हिंसा गर्न र मासु ख्वाउन-खान हुन्छ ।
प्रकरण १३ मा भनिएको छ, मांस हवन-मांस भोजनादिका कुरा वेद वेदाङ्ग-स्मृति-पुराणहरुमा सर्वत्र पाइन्छन् ।
प्रकरण १४ मा भनिएको छ, मासु नखाने ब्राह्मण श्राद्धका र यज्ञका निम्ति योग्य हुँदैनन् ।
प्रकरण १५ मा भनिएको छ, सबै युगमा श्राद्धमा मासुको प्रयोग गर्न हुन्छ ।

प्रकरण १६ मा भनिएको छ, हिंसा र अहिंसाको विचार सुक्ष्म दृष्टिले गर्नुपर्छ । यसै प्रकरणमा अगाडी भनिएको छ, कसै कसैले मासु खाँदा मात्रै हिंसा हुन्छ, सांस फेर्दा, पानी खाँदा र दाल-भात, साग-पात खाँदा त हिंसा हुँदैन भन्ने ठानेको पाइन्छ । किन्तु तेस्तो ठनाई न त शाष्त्र सम्मत न त विज्ञान सम्मत नै ।

लेखकले महाभारत वनपर्वको कथा उल्लेख गर्दै त्यसमा 'धर्मव्याध' को प्रसङ्गमा भन्छन् । मान्छेहरु खेतीलाई उत्तम ठान्छन्, त्यो पनि हिंसाले व्याप्त छ, हलो जोत्ने काम गर्दा भूमिमा रहने र अरु पनि धेरै प्राणीलाई मार्छन् । रुखमा, फलमा र पानीमा पनि धेरै जीव हुन्छन् । एक माछाले अर्को माछालाई खान्छ । हिंड्दा मान्छेले खुट्टाद्वारा धेरै जीवलाई मार्छन् । महाभारत शान्ति पर्वको कथा उल्लेख गर्दै भनेका छन्, हिंसा विना यस संसारमा कसैको पनि जीविका चल्दैन, दुर्वल प्राणीको हिंसा गरेर बलिया प्राणी बाँच्दछन् । न्याउरी मुसाले मुसो खान्छ, बिरालाले न्याउरी मुसो खान्छ, कुकुरले बिरालो खान्छ, चितुवाले कुकुर खान्छ, स्थावर जङ्गम सवै प्राणका अन्न हुन् । यो ब्रह्माजीले बनाएको विधान हो । तेसमा, विवेकशील मान्छे अलमलमा पर्दैन । क्रोध र हर्षलाई हटाएका अल्पचेष्टा गर्ने वनमा बसेका तपस्वीहरु पनि वध नगरिकन प्राण-यात्रा चलाउन सक्दैनन् । पानीमा धेरै प्राणीको बास छ, पृथ्वीमा र फलहरुमा पनि त्यस्तै छ । ती प्राणीलाई नमार्ने कोही छैन ।

हिंसा कुन हो र अहिंसा कुन हो भनी विचार गर्ने प्रसङ्गमा वराह पुराणको अष्टम अध्यायमा धर्मव्याधको कथा उल्लेख गर्दै भनेका छन्, पञ्च महायज्ञ (ब्रह्मयज्ञ, देव यज्ञ, भूत यज्ञ, पितृ यज्ञ र मनुष्य यज्ञ) गरेर खाएमा मात्र अन्न शुद्ध हुन्छ । अन्यथा धानका एक एक गेडा पनि एक एक पशुपञ्छी हुन्छन् । ती दिने र खानेका निम्ति महामांस मानिन्छन् । देव पितृलाई नचढाइकन अन्न खाने व्यक्ति मासु नखाए पनि ठूलो हिंसक अधार्मिक हो भन्ने र देव पितृलाई चढाएर मासु नै खाने व्यक्ति पनि निर्दोष र धार्मिक हो भन्ने सिद्धान्त स्पष्ट छ । यस कुरालाई शाष्त्रमा श्रद्धा भएका आस्तिकहरुले राम्ररी मनन गर्नु पर्छ, नास्तिकहरुको कुरा भने आर्कै हो ।

आयुर्वेदका अनुसार मानव शरीरमा तीन प्रकार शारीरिक प्रकृति हुन्छन् - वात, पित्त र कफ । आयुर्वेदले वात प्रकृतिलाई मासु खान छुट दिन्छ । पित्त प्रकृतिलाई यो निषेध गरिएको छ । कफ प्रकृतिवालालाई यदाकदा मासु खान छुट दिन्छ ।

चरकले पनि शारीरिक क्षय, दौर्वल्यतामा मासु खान अनुमति दिएका छन् ।

मांसाहारको विषयमा ऐन-कानूनको व्यवस्था:-

- नेपालको संविधान २०७२ को धारा ३६(१) मा प्रत्येक नागरिकलाई खाद्य सम्बन्धि हक, ३६(२) मा खाद्यवस्तुको अभावमा जीवन जोखिममा पर्ने अवस्थाबाट सुरक्षित हुने हक, ३६(३) मा खाद्य सम्प्रभुताको हक प्रदान गरिएको छ ।
- धारा ९ को उपधारा ३ मा राष्ट्रिय जनावर गाई र राष्ट्रिय पञ्छी डाँफे भनिएको छ ।
- पशु वधशाला र मासु जाँच ऐन, २०५५ को परिभाषा दफा २ (क) मा पशु भन्नाले गाई, गोरु, साँढे बाहेक भाले पोथी नछुट्याइएको मासुको लागि योग्य देखिएको राँगो, भैंसी, खसी/बोका, बाखा, भेंडा, च्यांग्रा, सुंगुर, बँदेल, खरायो र कुखुरा, हाँस, परेवा वा मासुको प्रयोजनको लागि पालिएको अन्य पशुपञ्छी समेत भनिएको छ ।

(ख) मा मासु भन्नाले मानिसले खानयोग्य पशुको मासु भनिएको छ ।

दफा ११ मा मासु विक्री गर्न नपाइनेमा, ११(१) दफा २(क) मा उल्लिखित पशु बाहेक अन्य पशुको मासु विक्री गर्न पाइने, ११(२) मा रोग लागि वा नलागि कालगतिले मरेको पशुको मासु विक्री गर्न पाइने छैन । ११(३) मा छाला सहितको मासु विक्री गर्न पाइने छैन । तर पछि सुँगुर, बङ्गुरमा बँदेलको मासु र पशुको जात चिनाउन आवश्यक पर्ने जति हिस्साको मासु वा पशुको टाउको, खुट्टा, छाला सहित विक्री गर्न यस दफाले बाधा पुऱ्याएको मानिने छैन, भनिएको छ ।

यस ऐनको विशेषता यो देखिन्छ कि संविधानमा उल्लिखित राष्ट्रिय जनावर गाई र राष्ट्रिय पञ्छी डाँफेलाई संरक्षित मानी यस ऐनबाट वध गर्न निषेध गरिएको छ । दोश्रो स्वस्थ्य जनावरलाई वध गरी मात्र मासु बेच्न पाइने व्यवस्था गरिएको छ । तोकिएको पशु र पञ्छीको मासु मात्र बेच्न पाइने, माछाको हकमा केही भनिएको छैन ।

भानुभक्तको रामायणमा मांसाहारको प्रसङ्ग :-

आदिकवि भानुभक्त आचार्यले, महर्षि वाल्मीकिले संस्कृतमा रचना गर्नुभएको रामायणलाई सामान्यजनले बुझ्ने गरी सरल नेपाली भाषामा अनुवाद गर्नुभएको छ ।

आदिकविले सो रामायणको अयोध्याकाण्डको ६० औं श्लोकमा भगवान श्री रामचन्द्रजी, सीताजी र लक्ष्मणजी सहित वनगमन प्रसङ्गमा भारद्वाज आश्रममा पुग्नु अघिको तेश्रो वासमा लेख्नुभएको छ :

"गङ्गा पार तरि मीर्ग मारि पकुवा लाएर खाया तहाँ ।
तेश्रो वास रघुनाथको तंहि भयो एक वृक्षको तल महां ॥"

विश्लेषकहरु भन्छन, महर्षि वाल्मीकिद्वारा रचित रामायणको विभिन्न पाठ र श्लोकमा मह, कन्दमूल, फलका साथै मांसाहारको पनि प्रसङ्ग उल्लेख छ ।

भानुभक्तकृत भाषा रामायणका सम्पादक श्री शिवराज आचार्य कौन्डिन्न्यायनले आफ्नो सम्पादनमा प्रकाशित (वि.सं. २०७३) पुस्तकको मांसाहार प्रसङ्गमा लेख्नु भएको छ कि, अध्यात्म रामायणको अयोध्याकाण्डका छैठौं श्लोकका सर्गको पैलो आद्रिभन्दा पछिका

"तत्र मेध्यं मृगं हत्वा पक्त्वा हुत्वा च ते त्रयः ॥२७॥
मुक्त्वा वृक्षतले सुप्त्वां सुखमाशम ते निशाम"

भन्ने दुई आद्रिहरु मांसद्वेषि वैष्णवमतवादका आग्रहले गीता प्रेसका वैष्णवहरुले हटाएका हुन्, मुम्बई संस्करणमा, खेमराज कृष्णदासका संस्करणमा, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालयका संस्करण (२०५५) मा पनि छन् र तिनको रामवर्मकृत रामायण सेतु भन्ने संस्कृत व्याख्यामा व्याख्या पनि पाइन्छ ।

हिन्दू समुदायमा मांसाहारी:-

भारतका राष्ट्रपिता महात्मा गान्धी स्वयं शाकाहारी थिए तर आफ्ना अनुयायी र शिष्य बिहार दरभङ्गा जिल्ला बेरि ग्राम निवासी गिरीवरधारी चौधरी उर्फ कारोवावु जो महात्मा गान्धीकै पहिरन र आचरणमा बस्दथे, उनले उनको गाउँ बाढीग्रस्त इलाका भएको, वर्षको ६ महिना जलमग्न रहने र खानलाई माछा र भात बाहेक अर्थोक नपाइने भनी निवेदन गर्दा महात्मा गान्धीले उनलाई माछा खान अनुमति दिएका थिए ।

भारतमा राष्ट्रवादी हिन्दूहरुको सांस्कृतिक सङ्गठन राष्ट्रिय स्वयंसेवक सङ्घमा दीक्षित र आबद्धद्वय भारतका पूर्व प्रधानमन्त्री स्व. अटल बिहारी वाजपेयी मांसाहारी थिए तर वर्तमान प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी शाकाहारी छन् ।

सुप्रसिद्ध धार्मिक गुरु रामकृष्ण परमहंश तन्त्र साधना गर्थे र माछा खान्थे ।

प्रतिदिन गीता पाठ गर्ने तर मदिराप्रेमी सन्त नेता तथा पूर्व प्रधानमन्त्री स्व. कृष्णप्रसाद भट्टराईलाई मांसाहारी भनिएको छ ।

नेपालका विद्वान भाषाशाष्त्री आदरणीय प्रा.डा. बालकृष्ण पोखरेलज्यूले उद्घोष दैनिक मिति २०७४ माघ ६ गते शनिवारको आफ्नो लेखको अन्तिम प्रकरणमा लेख्नुभएको छ, मासु खानु वा नखानु धर्मका विषय नभएर आयुर्वेदाचार्य धन्वन्तरीको विषय हो, धर्मले आफ्नो क्षेत्र छोडेर यो खा र यो न खा भन्ने कुनै पनि प्रश्न उठाउनु धन्वन्तरीको अपमान हो । यो खानु र यो नखानु भन्ने आदेश धन्वन्तरीले पनि आफ्नो कारिन्दो डाइटिशियन मार्फत गराउँदै आएको काम हो । आदिकवि भानुभक्तले समेत अपमान नगरेको मीठा मसला धरी तयार पारिएको मासुको पकुवा खाने हाम्रो हक खोस्न पाउन्नन .... रिटर्नड पण्डितहरुले । धर्म र भक्षणलाई एकै तुलाले नजोखौं ।

उद्घोष दैनिकको २०७४ असोज ९ गते सोमवारको अङ्कमा 'दशैंमा पशुबलि' लेख र २०७४ असोज २० गते शुक्रवारको अङ्कमा 'सवै मानिस शाकाहारी भै दिए के होला ?' लेख वर्तमान लेखको सन्दर्भमा पठनीय छ ।

नेपालमा माछा-मासुको खपत:-

मासु उपभोगको तथ्याङ्क अनुसार दक्षिण एसियामा पाकिस्तानपछिको दोश्रो मुलुक नेपाल रहेको छ । पाकिस्तानमा सवभन्दा बढी प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष १४.७ केजी, नेपालमा ९.९ केजी, श्रीलङ्कामा ६.३ केजी, भारतमा ४.४ केजी, बङ्गलादेशमा ४ केजी र भुटानमा ३ केजी खपत देखिन्छ ।

अन्य मुलुकहरुमा अष्ट्रेलियामा १११.५ केजी, अमेरिका १२०.२ केजी, फ्रान्स ८६.७ केजी, बेलायत ८४.२ केजी, रसीया ६९.२ केजी, चीन ५८.२ केजी, दक्षिण कोरीया ५८.६ केजी रहेको देखिन्छ ।

माछा उपभोगमा विश्वको तथ्याङ्क प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष औसत १८.९ केजी, जापानमा ५३.७ केजी, श्रीलङ्का २६.१ केजी, भारत ५.९० केजी, नेपाल २.२० केजी, बङ्गलादेश १९.७ केजी र चीन ३२.८ केजी रहेको देखिन्छ ।

हिमालय टाइम्सले १२ जनवरी, २०१८ मा प्रकाशित गरेको तथ्याङ्क अनुसार विश्वको विकसित मुलुकमा प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष मासुको खपत २५ केजी रहेको, काठमाण्डौ उपत्यकामा १६ केजी रहेको तथा पोषण आहारमा मासुको माग १७ केजी रहेको भनिएको छ ।

नेपालमा खसी बोकाको माग वार्षिक ४० लाख गोटा छ, सो मध्ये आयात ५-७ लाख गोटासम्म हुन्छ समेत भनिएको छ ।

अर्को एक तथ्याङ्क अनुसार विकसित देशमा प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष ८० केजीसम्म मासु खाइन्छ भने विकासशील देशमा ३२ केजी । त्यस्तै अर्ग्यानिक र प्राकृतिक चरणमा हुर्किएको जनावरको मासु फार्महाउस र औद्योगिकरणबाट उत्पादित मासुभन्दा बढी स्वस्थकर र लाभदायी हुन्छ भनिएको छ ।

एक आंकडा अनुसार प्रतिवर्ष दुई लाख खसी नेपालगञ्ज, कृष्णनगर र भैरहवा भन्सारको बाटो भएर मात्र भित्रिन्छ । बीरगञ्ज, विराटनगरको बाटो थप संख्यामा, त्यस्तै दशैंको समयमा तिब्बतबाट हजारौंको संख्यामा च्याङग्रा (हिमाली खसी) भित्रिन्छ । आन्तरिक उत्पादन मागको एक चौथाई पनि छैन । संस्थागत र विकसित खसी बाखा पालन व्यवसाय फस्टाउन सकेको छैन ।

ई. सन् २०१३।१४ मा माछाको आन्तरिक उत्पादन ६४ हजार नौ सय टन थियो भने माग ८० हजार टन । बढी माग सबै आयातबाटै पूर्ति हुन्छ । कुखुरा, हाँसमा नेपाल आत्मनिर्भर रहेको भनिन्छ । ई. सन् २०१३।१४ मा कुखुरा ४,८०,७९,४०६ र हाँस ३,९०,२०९ संख्यामा रहेको तथ्याङ्कले देखाउँछ । ई. सन् २०१३।१४ मा मासुको उत्पादन राँगाको १,७३,९०६ मे.टन, भेंडाको २,६५६ मे.टन, खसीको ५९,०५३ मे.टन, सँगुरको १९,२६९ मे.टन, कुखुराको ४३,१३३ मे.टन र हाँस २२७ मे.टन, अण्डा ८,८२,९१८ गोटा उत्पादन तथ्याङ्क विभागले देखाएको छ ।

कृषि अर्थतन्त्रमा पशुपालनको प्रभाव:-

पाश्चात्य मुलुकजस्तै नेपालमा सङ्गठीत र संस्थागत रुपमा पशुपालन विकास भै सकेको छैन । अहिले पनि सानो स्तरमा गाई भैंसी पालन गरेर सहकारी मार्फत दूध सङ्कलन वा व्यक्तिगत रुपमा दूध विक्री गरी निर्वाहमुखी मात्र रहेको छ । गाई र भैंसीको गोबरलाई वैकल्पिक इन्धन र प्राङ्गारिक मलको रुपमा प्रयोग गर्दछौं त्यो पनि प्रारम्भिक अवस्थामा मात्र छ ।

गाईको बाच्छा-बाच्छीलाई वयस्क नभएसम्म पालन गर्दछौं । बाच्छा वयस्क भएपछि काठमाण्डौ उपत्यकाभन्दा बाहिर खेत जोत्ने कार्य र बयलगाडामा प्रयोग गर्दछौं । पाश्चात्य मुलुकजस्तो बाच्छा-बाच्छीलाई मासुको लागि वधशालामा पठाईदैन न त गाई भैंसी र पशुहरुको डकार र वायु त्यागबाट मिथेन ग्यास हरितगृहको समस्या नै छ ।

निर्वाहमुखी कृषि अर्थतन्त्रमा रहेको नेपालमा वर्षेनी चामल, दाल, नुन, तेल, माछा, मासु, तरकारी आयातमा मात्र अरबौं रुपैयाँ विदेसिन्छ । आयात प्रतिस्थापनको लागि र यस्ता अन्न माछा-मासुको माग अनुसारको आपूर्ति बढाउनका लागि कृषकहरुलाई प्रोत्साहन गर्नुपर्ने आवश्यकता छ ।

निर्वाहमुखी र असङ्गठीत रहेको कृषि क्षेत्र भएको मुलुकमा कृषि उत्पादन, अन्य नगदेबाली, पशुपालनबाट दूध र मासुको उत्पादन, माछाको उत्पादन समेत माग अनुसारको आपूर्ति र सो आपूर्तिको उचित मूल्य कृषकले पाउन सके,

(१). कृषकको आर्थिक स्तरमा वृद्धि हुने, कृषकले प्रोत्साहन पाउने, समग्र अर्थतन्त्र र गार्हस्थ उत्पादनमा कृषि क्षेत्र प्रभावकारी रुपमा बढ्ने हुन्छ ।
(२). मुलुकभित्रै उत्पादन वृद्धि र आपूर्ति व्यवस्थित हुन सके अर्बौं रुपैयाँको विदेशी मुद्रा बचत भै आयात प्रतिस्थापनको साथै समग्र अर्थतन्त्रमै सकारात्मक योगदान पुग्ने हुन्छ ।
(३). वैदेशिक रोजगारबाट फर्केका र पुनः जान नचाहने युवा जनशक्तिले स्वदेशमा परिश्रमको प्रतिफल पाउने अवस्था भए कृषि र पशुपालनतर्फ आकर्षित भै जनशक्तिको उपयोगका साथै जनशक्ति पलायनको समस्या हल हुने हुन्छ ।

मांसाहारको प्रवृत्ति :-

अत्यधिक शारीरिक श्रम गर्ने समुदायहरुमा माछामासुको माग बढी देखिन्छ । कठीन जीवनयापन गर्ने उच्च पहाडी र हिमाली भेगमा मासुको माग बढी हुन्छ । नदी र तालको नजिक बस्ने माझी, थारु, दनुवार र अन्य समुदायमा माछा र जलचरको माग बढी हुन्छ । मरुभूमिमा रहने जनसमुदायमा मासुको माग बढी हुन्छ भने समुद्र किनारमा रहने मछुवारा समुदायमा माछाको माग बढी हुन्छ । पोखरी, नदी र जलाशय हुने तराई र अन्य स्थानमा माछा समेत मासुको माग पनि रहन्छ ।

शाकाहारीको धारणा विपरित मांसाहारीको धारणा छ, हिंश्रक मांसाहारी जनावरको हात हुँदैन, अतः त्यसले नंग्रा र दाह्राको प्रयोगले मासु लुछी काँचो मासु खान्छ । मानिसले हातको प्रयोग गर्दछ र मरमसाला हालेर आगोमा राम्ररी पकाएको स्वादिष्ट मासु खान्छ ।

इसाई धर्मावलम्बीहरुमध्ये क्याथोलिकहरुले वर्षामा केही समय उपवास गरिने लेन्ट भन्ने पर्व मान्छन् । लेन्टको समय र अवधिमा यिनीहरु चौपाया जीवजन्तु र पञ्छीको मासु खाँदैनन् । त्यस्तै दूध र दूधबाट बनेका पदार्थ पनि खाँदैनन् । तर उपवासको समय सकिएपछि खाने आहारमा माछा, समुद्री खाद्यजीव र अण्डा खान्छन् ।

क्रिस्तान धर्मावलम्बीहरुले मनाउने क्रिसमस, ईष्टरजस्ता पर्वहरुमा टर्की चराको मासुको माग बढी हुन्छ । ईस्लाम धर्मावलम्बीले मनाउने सबै चाडपर्वमा मासुको माग हुन्छ, विशेष गरी बकरिद-इद-उल-जोहा पर्वमा त कुर्बानी (बलि) दिने प्रथा उनीहरुको धार्मिक कृत्यमै पर्दछ ।

धार्मिक कारणले मात्र क्रिस्तान र इस्लाम धर्मावलम्बीहरुमा मानिस शाकाहारी हुँदैन ।

हिन्दू धर्मावलम्बी मांसाहारीहरुले सामान्य दिनमा माछामासु खाने गरे पनि दशैं र फागु उत्सव बाहेक अन्य चाडपर्वमा माछामासु खाँदैनन् ।

पोषण विशेषज्ञका अनुसार उमेर, स्थान, शारीरिक श्रम ईत्यादिको आधारमा मानिसको आहाराको आवश्यकता र क्यालोरी निर्धारण गरिन्छ। अत्यधिक श्रम गर्नेलाई निर्धारित पोषण अन्तर्गत सामान्य दाल, भात, तरकारी, सागपातले मात्र पर्याप्त पोषण र क्यालोरी पुग्दैन। अतः तिनीहरुलाई पुरक रुपमा दूध, दही, माछा, मासुको उपभोग पनि आवश्यक पर्दछ ।

सुरवीर, निर्भिक र निडर भावी समाज सन्ततिका लागि मांसाहार:-

मानव समुदायमा बिरामीलाई सूई लगाउँदा हेर्न नसकि बेहोस हुने, अलिकति पनि घाउचोट लाग्दा र रगत बगेको देख्दा बेहोस हुने जस्ता मानसिक भयको स्थिती पनि देखिन्छ।

जन्मेपछि मानिस समेत सवै जीवजन्तुको मृत्यु अवश्यम्भावी छ, तर सोही कारणले आड्ढनो कर्तव्य र कार्यक्षेत्रबाट पलायन हुन कदापि उचित भन्न सकिंदैन। मृत्युपछिको भयत्रास देखाएर वर्तमानको जीवनलाई निराशाजनक बनाउन हुँदैन ।

चिकित्सा विषय पढ्ने विद्यार्थीहरुलाई सर्वप्रथम नाङ्गो हातले मृत शरीर छुन भनिन्छ। उद्देश्य हुन्छ भय र घृणाबाट उन्मुक्ति हुन सक्ने मानसिक अवस्था तयार गर्ने। किनभने उनीहरु उत्तिर्ण भएपछिको सेवा क्षेत्रमा बिरामीको मलमूत्र र रगत केलाउनेदेखी दूर्गन्धित घाउ र पीप तथा चिरफारको सेवा कार्य समेत गर्नुपर्ने हुन्छ। चिकित्सकहरुमा मृतकसंगको भय र स्वयंमा साहस नभएमा सो कार्य सम्भव हुँदैन ।

किराँत समुदायमा १-२ इञ्चको घाउ-चोट र रगत बग्ने ख्याल ख्यालमै हुने उखान छ।

मृत्युदेखी डराउने, बलिदेखी डराउने, रगतदेखी डराउने र मांसाहार नगर्ने भावी सन्तान भयो भने तिनमा सुरवीरता र पराक्रमको अभावमा आत्मरक्षा गर्न नसक्ने हुन्छ। आत्मरक्षा गर्न नसक्ने मानिस, समाजको वा राष्ट्रको बाऱ्य आक्रमणबाट रक्षा गर्न सक्दैन।

आड्ढना पराक्रमी सेवकहरुलाई पृथ्वीनारायण शाहको दिव्य उपदेश थियो -"जाई कटक नगर्नु, झिकी कटक गर्नु" ।

घरपालुवा पशुपञ्छीहरूको व्यवस्थापन नभएमा हुन सक्ने मानवीय सङ्कट:-

आहाराको खोजीमा जङ्गली जनावरहरु मानववस्तीतर्फ आउने र घरपालुवा गाई, बाख्रा मारी खाइदिने, मानिसमाथि पनि आक्रमण गर्ने र हात्तीहरुले घर भत्काई दिने, अन्नबाली नष्ट गरिदिने जस्ता समाचारहरु प्रायः मिडियामा आई रहने गर्छ ।

पशु अधिकारकर्मी र शाकाहारी समूहको आग्रह र सल्लाहमा घरेलु पशुपञ्छीलाई स्वतन्त्र छोडिदिने र पालनपोषण नगर्ने हो भने कस्तो अवस्था आउन सक्छ कल्पना गरौं ।

- मानवस्तीको बालीनालीको विनाश गर्नेछ ।
- जङ्गली र हिंश्रक जनावरहरुले मानववस्तीमा पसी वा मारेर घरपालुवा जनावरलाई लगी खाई दिनेछ ।
- घरपालुवा पशुपञ्छी, माछाको प्रजातिहरु संरक्षणको अभावमा लोप हुने अवस्थामा पुग्नेछ ।
- अत्यधिक संख्या वृद्धि भयो भने पर्यावरण (इकोसिस्टम) असन्तुलन भै मानव जीवन नै सङ्कटमा पर्न सक्ने हुन्छ ।

वर्तमानमा संख्या वृद्धिले गर्दा जङ्गली जनावरहरुको व्यवस्थापन गर्न कठिनाई भै सरकारले ऐन बनाई स्वीकृति लिएर कतिपय पञ्छी र जनावरलाई सिकार गर्न दिने गरी आएको छ, त्यसमा मृग, बँदेल, नाऊर, झारल, कालीज, तित्रा, बट्टाई, परेवा, चाहा मुख्य हुन् ।

वन कार्यालयबाट अनुमति लिई जङ्गली पञ्छी आष्ट्रिच (शुतुरमुर्ग) र बट्टाईको व्यावसायिक विक्री र मासुको लागि पालन कार्य शुरु भै सकेको छ ।

अण्डा शाकाहारी कि मांसाहारी ?

अण्डामा तीनवटा प्रष्ट तह हुन्छन् । पहिलो बाहिरी बोक्रा, दोश्रो सेतो भाग र तेश्रो पहेंलो भाग ।

सेतो भाग प्रोटिनको निकै उत्कृष्ट श्रोत हो । त्यसमा प्राणीको कुनै हिस्सा नहुने भएकाले अण्डाको त्यो भाग पूर्ण रुपमा शाकाहारी हो ।

पहेंलो भागको कुरा गर्दा त्यसमा प्रोटिनसंगै कोलेस्ट्रोल र ङ्ख्याट पनि पाइन्छ । जब कुनै पनि अण्डा पोथीमा भाले लागेर पारिएको वा गर्भाधान भएको हुन्छ, तवमात्र त्यो अण्डा मांसाहारी बन्दछ । अन्यथा अण्डाको पहेंलो भाग पनि शाकाहारी नै हुन्छ ।

बजारमा पाइने धेरै अण्डाहरु बतासे अर्थात गर्भाधान नभएका अण्डा हुन् । अर्थात यी अण्डाबाट चल्ला कोरलिंदैन । यसको अर्थ नकोरलिने बतासे अण्डाहरु विज्ञानको नजरमा शाकाहारी हुन् ।

इतिहासकार डा. महेशराज पन्त (अहं संस्कृतमं पठामी, कान्तिपुर कोसेली, १४ पुष २०७५) शाकाहारी-मांसाहारी शब्दको प्रयोगमै आपत्ति जनाउनुहुन्छ । वास्तवमा मान्छे मांसाहारी मात्रै कसरी हुनसक्छ ? मांसाहारीले पनि शाकाहार त गरी नै हाल्छ ।

यस्तोमा सामिष र निरामिष भन्नुपर्ने उहाँको सुझाव छ ।

संस्कृतमा आमिष भनेको मासु हो । मासु भएको भोजनलाई 'सामिष', नभएकोलाई 'निरामिष' ।

निष्कर्ष:-

धार्मिक कारण श्रद्धा, आस्था र भावनाले माछा-मासु नखाने शाकाहारीलाई सम्मान गर्नुपर्छ । अरुची वा स्वास्थ्यको कारणले शाकाहारी हुनेलाई स्वागत गरिनुपर्दछ । तर सो बाहेकका सबै उमेर समूहका मानिसहरुलाई पोषण विशेषज्ञको राय अनुसार र आ-आफ्नो रुची अनुसार मांसाहारबाट वञ्चित वा अवरोध गर्न हुँदैन ।

ckishor12@gmail.com

महाकवि विधापति

विजयव्रत कंठ
देवधा समस्तीपुर (मिथिला)

मिथिला केर पावन धरी पर,
स्थित अछि एक गाम ।
जन जन केर जिह्वा पर चर्चित,
विस्फी जेकर नाम ।।
धन्य भेलहुँ हम मिथिला वासी,
महाकवि केर पाबि कए।
थकैत नय अछि हमर कंठ,
गाथा हिनक गाबि कए ।।
महादेव केर परम उपासक,
कयलिन गंगा भक्ति ।
राधाकृष्णक वर्णन कयलिन,
अद्भुत् रचना शक्ति ।।
विधापति छथि राष्ट्रक गौरव,
राष्ट्र भेल अछि धन्य ।
खोजि खोजि कल हारल हम,
पाबि नय सकल हम अन्य ।।
कार्तिक धवल त्रयोदशी छल,
भेल हिनक निर्वाण ।
सभ नरनारी मिलजुल गाउ,
महाकवि केर गान ।।

को हुन् कायस्थ ?

मनोज कुमार वर्मा

कायस्थहरू संसारका शृष्टीकर्ता ब्रम्हाका मानस पुत्र चित्रगुप्तका संतान मानिन्छन् । हिन्दुहरूको वर्णव्यवस्था ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शुद्र) मा कायस्थहरूले छुट्टै वर्ण स्थान राख्दछन् । कायस्थ ब्रम्हाको चित्त (शरीर-काया) बाट उत्पन्न भएकोले कायस्थ आफैमा छुटै एउटा वर्ण हो । अतः कायस्थ वर्ण सामाजिक विभाजनको पाँचौ अंग हो । कायस्थहरूले कलमको पूजा गर्छन । चित्रगुप्तका १२ वटा संतान थिए जसले गर्दा कायस्थ वर्ण भित्र १२ वटा शाखाहरूको प्रारम्भ भयो र प्रत्येक शाखामा आफ्नै जातीय विभाजन छ । यस वर्ण शाखाका जाति हरूमा कर्ण, श्रीवास्तव, मल्लिक, निगम, कुलश्रेष्ठ, अम्बष्ठ, अष्ठाना, माथुर, गौड, आदि पर्दछन् ।

कायस्थ (Kayastha)
कुल जनसङ्ख्या
२ करोड
खास आवास क्षेत्र- भारत, नेपाल
भाषाहरुः मैथिली, हिन्दी, असमिया, उर्दू, बंगला, मराठी तथा उडिया
धर्म : हिन्दुत्व

श्री चित्रगुप्तजी महाराजको परिवार

पद्म पुराणको अनुसार श्री चित्रगुप्तजीको दुईवटा विवाह भएको थियो जस मध्ये पहिली स्वास्नी सूर्य दक्षिणार नंदिनी जो कि सूर्यदेवका पुत्र श्राद्ध देवकी छोरी थिइन्, यसबाट ४ पुत्र भएको थियो । अर्की स्वास्नी अर्थात दोश्री स्वास्नी ऐरावतीर शोभावति धर्मशर्मा (नागबंशी क्षत्रिय) की पुत्री थिइन्, यसबाट ८ पुत्र भएको थियो ।

अतः कायस्थको १२ शाखा रहेका छन् (श्रीवास्तव, सूर्यध्वज, बाल्मिक, अष्ठाना, माथुर, गौड, भटनागर, सक्सेना, अम्बष्ठ, निगम, कर्ण तथा कुलश्रेष्ठ । यी बाह्रवटै पुत्रहरुको विवरण तल दिइएको छ । जसको उल्लेख अहिल्या, कामधेनु, धर्मशास्त्र तथा पुराणहरुमा पनि दिइएको छ । श्री चित्रगुप्तजी महाराजका बाह्र पुत्रहरुको विवाह नागराज बासुकीको बाह्र पुत्रीसँग सम्पन्न भएको थियो, जसले गर्दा कायस्थहरुको मावली नागवंश मानिंदै आएको छ र नागपंचमीको दिन विशेष रुपमा नाग पुजा गर्ने गरिन्छ ।

माता नंदिनीका चार वटै पुत्रहरु भारतको काश्मीरको छेउ-छेउ तिर गएर बसे भने माता ऐरावतीर शोभावतिका आठवटै पुत्रहरु गौड देशको छेउ-छेउ बिहार, उडीसा, तथा बङ्गालमा गएर बसे। त्यस समयमा बङ्गाललाई गौड देश भनिन्थ्यो, पद्म पुराणमा यसको उल्लेख पनि रहेको पाइन्छ।

चित्रगुप्त वंशावली

माता सूर्यदक्षिणार नदिनीको पुत्रहरूको विवरण

१. भानु (श्रीवास्तव) - श्री भानु माता नंदिनीका ज्येष्ठ सुपुत्र थिए। उनको राशिको नाम धर्मध्वज थियो। श्री भानु भारतको मथुरा मा गएर बसे। यसै कारण भानु परिवार सँग समबन्धित सबै माथुर कायस्थको नामले चिनिए साथ-साथै सूर्यवंशीको नामले पनि चिनिए।

२. विभानु (सूर्यध्वज)- भटनागर उत्तर भारतमा प्रयोग हुने एउटा जाति नाम हो, जुनकी हिन्दुहरुको कायस्थ जाति अन्तर्गत आउने गरेको छ। इनको प्रादुर्भाव यमराज (मृत्युको देवता तथा पाप पुण्यको अभिलेखक) तथा श्री चित्रगुप्तजी महाराजको पहिली स्वास्नी दक्षिणा नंदिनीको दोश्रो पुत्र विभानुको वंशबाट भएको हो। उनको राशिको नाम श्यामसुंदर थियो। विभानुलाई चित्राक्ष नामले पनि चिनिन्छ। महाराज चित्रगुप्तले उनलाई भट्ट देशको मालवा क्षेत्रमा रहेको भट नदी तिर पठाएका थिए। त्यहाँ यीनिहरुले चित्तौर र चित्रकूट बसाएका थिए। र यिनीहरु त्यहीं रहन सहन गर्न थाले, जसले गर्दा यिनीहरुको वंश भटनागर भनियो। यिनीहरुको वासस्थान भारतको वर्तमान पञ्जाब प्रदेशको भट्ट प्रदेशमा रहेको थियो। यिनको स्वास्नीको नाम मालिनी थियो।

३. विश्वभानु (बाल्मीकि) -श्री विश्वभानु माता नंदिनीका तृतिय पुत्र थिए। उनको राशिको नाम दिनदयाल थियो। श्री विश्वभानुको परिवार गंगा(यमुना को छेउमा गएर बसे , जसलाई प्राचीनकालमा साकब द्विप भनिन् थियो। त्यसकारण विश्वभानु परिवारसँग सम्बन्धित सम्पूर्ण कायस्थ सक्सेना कायस्थको नामले चिनिए साथ-साथै सूर्यवंशीको नामले पनि चिनिए।

४. विर्यभानु (अष्ठाना)-श्री विर्यभानु माता नंदिनीका सबैभन्दा कान्छो पुत्र थिए। उनको राशिको नाम माधवराव थियो। श्री विर्यभानुको परिवार बांस देश (काश्मीर), मा गएर बास लिए। त्यसैकारण विर्यभानु परिवारसँग सम्बन्धित सम्पूर्ण कायस्थ श्रीवास्तव कायस्थको नामले चिनिए साथ-साथै सूर्यवंशीको नामले पनि चिनिए।

माता ऐरावतीर/शोभावतिको पुत्रहरूको विवरण

१. चारु (माथुर) -श्री चारु माता ऐरावतीरशोभावतिका ज्येष्ठ सुपुत्र थिए। उनको राशिको नाम पुरांधर थियो। श्री चारुको परिवार सूर्यदेश (बिहार) देश, मा गएर बसे तथा उनीहरुको राष्ट्रध्वजको चिन्ह सूर्य भएको कारण तिनीहरु सूर्यध्वज भनेर चिनिए।

२. सुचारु (गौड) - श्री सुचारु माता ऐरावतीर शोभावतिका दोश्रो पुत्र थिए। उनको राशिको नाम सारंगधार थियो। श्री सुचारुको परिवार पश्चिम बङ्गालको अम्बष्ठ जनपदमा गएर बसे यसै कारण यिनीहरुलाई अम्बष्ठ भनेर चिनिए।

३. चित्र (चित्राख्य) (भटनागर) -श्री चित्र माता ऐरावतीर शोभावतिका तृतीय पुत्र थिए। उनको राशिको नाम सारंगधार थियो। श्री चित्रको परिवार गौड देश (बङ्गाल), मा गएर बसे यसै कारण यिनीहरुलाई

गौड भनेर चिनिए ।

४. मतिभान (हस्तीवर्ण) (सक्सेना) -श्री मतिभान (हस्तीवर्ण) माता ऐरावतीर शोभावतिका चौथौ पुत्र थिए । उनको राशिको नाम रामदयाल थियो । श्री मतिभान (हस्तीवर्ण) को परिवार निगम देश (काशी), मा गएर यसै कारण यिनीहरुलाई निगम भनेर चिनिए । निगमहरु उत्तर भारतीय कायस्थ हुन्छन् ।

५. हिमवान (हिमवर्ण) (अम्बष्ठ) -श्री हिमवान (हिमवर्ण) माता ऐरावतीरशोभावतिको पाँचौ पुत्र थिए । उनको राशिको नाम सारंधार थियो । श्री हिमवान (हिमवर्ण) को परिवार गौड देश (बिहार), मा प्राचीन करनाली नामक गाउँमा गएर बसे यसै कारण यिनीहरुलाई कर्ण भनेर चिनिए ।

६. चित्रचारु (निगम) - श्री चित्रचारु माता ऐरावतीर शोभावतिका छैठौ पुत्र थिए । उनको राशिको नाम सुमंत थियो । श्री चित्रचारुको परिवार अष्ठाना देश (सानो नागपुर), जो कि नागदेशको नामले पनि प्रसिद्ध रहेको छ मा गएर बसे यसै कारण यिनीहरुलाई अष्ठाना भनेर चिनिए ।

७. चित्रचरण (कर्ण) -श्री चित्रचरण माता ऐरावतीर शोभावतिका साँतौ पुत्र थिए । उनको राशिको नाम दामोदर थियो । श्री चित्रचरणको परिवार बङ्गालको नदिको छेउमा गएर बसे जुन हाल बङ्गालको खाडीनिर स्थित छ । सेवाको भावनाका कारण आफ्नो कायस्थ कुलमा सर्वश्रेष्ठ मानियो यसै कारण यिनीहरु कुलश्रेष्ठ भनेर चिनिए ।

८. अतिन्द्रिय (जितेंद्रय) (कुलश्रेष्ठ) -श्री अतिन्द्रिय (जितेंद्रय) माता ऐरावतीर शोभावतिका सबैभन्दा कान्छो पुत्र थिए । उनको राशिको नाम सदानंद थियो । श्री अतिन्द्रिय (जितेंद्रय)को परिवार बाल्मिकी देश (पुरानो मध्य भारत), मा गएर बसे यसै कारण यिनीहरुलाई बाल्मिकी कायस्थ भनेर चिनिए ।

कायस्थहरुले क्षत्रीय धर्मको पालन गर्दै कयौं बर्षसम्म भारतमा राज चलाएका थिए ।

बधाई

नेपाल चित्रगुप्त समाजका केन्द्रिय सदस्य श्रीमती वीणा सिन्हाज्यूले निम्न सम्मान तथा पुरस्कारहरु प्राप्त गर्नु भएकोमा हार्दिक बधाई तथा शुभकामना

१. नेपाल प्राज्ञ सभा सदस्यमा प्रधानमन्त्री श्री के.पी. शर्मा ओली द्वारा मनोनयन
२. १९७ औं पृथ्वी जयन्ती तथा राष्ट्रिय एकता दिवसको अवसरमा राष्ट्रिय एकता सम्मान
३. इन्डो-नेपाल समरसता आर्गनाइजेशन द्वारा इन्डो-नेपाल समरसता अवार्ड तथा अभिनन्दन पत्र
४. विश्व हिन्दु महासंघ अन्तर्राष्ट्रिय द्वारा हिन्दु संस्कृति सम्मान
५. समाजवादी पार्टीको प्रदेश ३ को केन्द्रिय सदस्य मनोनयन

मिथिला क्षेत्र में प्रचलित कुछ परम्पराएँ

बासुदेवलाल दास, पीएच. डी.
प्राध्यापक, इतिहास विभाग
ठाकुर राम बहुमुखी क्याम्पस, वीरगञ्ज, नेपाल ।

मिथिला क्षेत्र पूर्वकाल से ही दार्शनिक, चिन्तक और विचारकों की भूमि रही है । यहाँ के समाज में अनेक प्रचलन तथा परम्पराएँ प्रचलित देखी जाती हैं । ऐसी परम्पराओं के प्रति लोक में विश्वास देखा जाता है । सामान्यतः इस विषय में वैज्ञानिक रूप से विचार करने पर कुछ हद तक ये अनावश्यक भी लग सकते हैं, परन्तु इन प्रचलनों में अन्तर्निहित व्यक्तिगत तथा सामाजिक भाव-बोध विषयक बातें अति महत्वपूर्ण लगते हैं । ऐसे कतिपय प्रचलनों एवम् परम्पराओं में लोक-कल्याण की भावना भी निहित रहती हैं । वस्तुतः ऐसी ही प्रथाओं और परम्पराओं के द्वारा मिथिला की संस्कृति समृद्ध और सम्पन्न होती है । इसी प्रसंग में मिथिला क्षेत्र में प्रचलित हँसने, रोने, शोणित खिलाने, गाली सुनाने, भोज खिलाने, न'त पूरने तथा व्यवहार करने जैसी कुछ परम्पराओं के विषय में इस आलेख में चर्चा की जाती है । ये परम्पराएँ आधुनिक पीढ़ी के लोगों के लिए, ऐसे देखने में, कुछ अनूठी लग सकती हैं, परन्तु समाज में इनके प्रति गहन आग्रह पायी जाती हैं, जिससे इसकी ऐतिहासिकता का बोध होता है । वर्तमान समय के वैज्ञानिक और तकनीकी विकास के युग में यद्यपि इन परम्पराओं की निरन्तरता में कुछ कमी आ गयी है और कतिपय परम्परा विस्मृत होती जा रही है, तथापि मिथिला के सामाजिक इतिहास के अन्वेषकों और अध्येताओं को यहाँ की सामाजिक परम्परा विषयक कुछ जानकारी मिल सके, इस उद्देश्य से यह आलेख प्रस्तुत किया जा रहा है ।

हँसने की परम्पराः– हँसना हमारे लिए बहुत आवश्यक है । इससे हमरा शरीर और स्वास्थ्य दोनों ठीक रहते हैं । हँसने से प्रसन्नता एवम् प्रफुल्लता होने के साथ ही स्फूर्ति भी मिलती हैं । ऐसे तो हम सभी प्रायः हँसते रहते हैं, परन्तु मिथिला क्षेत्र में एक विशेष अवसर पर हँसने का प्रचलन पाया जाता है । यह अवसर होता है नव स्थापित चूल्हा में प्रथम अग्नि प्रज्वलन का समय ।

मिथिला क्षेत्र के ग्रामीण भागों में सभी के घर में मिट्टी का चूल्हा होता है । इस चूल्हा में जलावन की सहायता से अग्नि प्रज्वलित कर भोजन तैयार किया जाता है । चूल्हा को मैथिली भाषा में चुलहा अथवा चुलही कहा जाता है । चूल्हा बनाने की विशेष कला होती है, जिसको मृत्तिका-कला का एक अंग माना जाता है । चूल्हा बनाने को मैथिली भाषा में "चुलहा पाड़ब" कहते हैं । चूल्हा का निर्माण, खास कर, शुभ मुहूर्त्त में किया जाता है । शुभ मुहूर्त्त को मैथिली बोली में "दिन" कहते हैं, जिसे पुरोहित से पञ्चांग में

दिखा कर पूछा जाता है, और उसी दिन विशेष पर चूल्हा बनाया जाता है। चूल्हा का निर्माण के सदृश ही इसकी स्थापना के भी शुभ मुहूर्त्त अथवा "दिन" होता है, जिसे पुरोहित से पूछ कर निश्चित किया जाता है। मिथिला की परम्परा में चूल्हा को सामान्यतः पूरब तथा पश्चिम की ओर मुख करके ही स्थापित किया जाता है। चूल्हा के विषय में एक उत्सुकतापूर्ण बात यह भी है कि जब चूल्हा जीर्ण हो जाता है तो इसको घर के प्रमुख पुरुष-पात्र के द्वारा अपने दाहिने पैर के तलवे से इस पर प्रहार कर इसको फोड़ा जाता है और इस भग्न चूल्हा की मिट्टी को यत्नपूर्वक बारी में किसी फलफूल के पेंड़ की जड़ में रख दिया जाता है। दूसरी ओर, कतिपय गर्भवती महिला ऐसे भग्न चूल्हा की मिट्टी को खाती भी हैं, ऐसा भी देखा गया है।

मिथिला की संस्कृति में चूल्हा का अपना ही महत्व है। कलात्मक दृष्टि से देखें तो इसमें एकचुल्हिया और दूचुल्हिया जैसे प्रकार होते हैं। दूसरी ओर, दार्शनिक दृष्टि से चूल्हा का अलग महत्व देखा जाता है। चूल्हा में अग्नि को प्रज्वलित किया जाता है। अग्नि पञ्चतत्वों में से एक है, जिसका मानव जीवन के अनेक आयामों पर गहरा प्रभाव रहता है। अग्नि से भोजन बनता है, जो हमारा शरीर को स्वस्थ्य रखता है। अग्नि को हमारी संस्कृति में देवता माना गया है, अतः अग्नि स्थापना होने वाली जगह होने के कारण चूल्हा को भी पवित्र स्थल माना जाता है और प्रत्येक दिन इसको लीपा जाता है।

मिथिला क्षेत्र में नव निर्मित चूल्हा को जब स्थापित करने का अवसर होता है, तब हँसने की परम्परा पायी जाती है। इस अवसर पर नव चूल्हा में प्रथमतः जब अग्नि प्रज्वलित किया जाता है, उस समय घर के सभी लोग वहाँ उपस्थित होकर हँसते हैं। चूल्हा में अग्नि प्रज्वलित करने को मैथिली भाषा में "चुलहा पजारब" कहते हैं। इस समय में घर की प्रधान महिला-पात्र द्वारा चूल्हा में जलावन लगा कर अग्नि प्रज्वलित किया जाता है। इसके लिए तैयारी की जाती है, जिसमें घर के प्रत्येक व्यक्ति के हाथ में थोड़ा-थोड़ा गुड़ (मीठा) दिया जाता है, और जब चूल्हा में अग्नि प्रज्वलित हो जाती है, तब सभी लोग हँसते हैं और हाथ के गुड़ को खाते हैं।

वस्तुतः नव निर्मित चूल्हा में जब अग्नि की स्थापना होती है, तब इसे अग्नि देवता का आगमन मान कर उनको हँसकर अथवा प्रसन्नता पूर्वक सहर्ष स्वागत किया जाना माना जाता है। इससे अग्नि देवता सदैव प्रसन्न रहते हैं एवम् घर में कभी भी चूल्हा बन्द होने की अवस्था नहीं आती है, अर्थात् घर के लोग कभी भी भूखे नहीं रहते हैं, ऐसा विश्वास पाया जाता है। दूसरे शब्दों में, अग्नि देवता की प्रसन्नता से घर में भोजन विषयक सम्पन्नता अर्थात् समृद्धि बनी रहती हैं।

रोने की परम्पराः– इसी प्रकार मिथिला क्षेत्र में रोने की विशेष परम्परा पायी जाती है। रोना भी मानव के लिए आवश्यक है। रोने के भी कई आयाम हैं। सामान्यतः रोने के समय आँखों में आँसू आते हैं। जब शिशु जन्म लेता है, तब वह रोता है, यदि वह नहीं रोता है तो उसे यत्नतः रुलाया जाता है। साधारणतः शिशुओं का रोना स्वाभाविक माना जाता है। इसी तरह, किसी व्यथा, वेदना, दुःख, वियोग, आघात इत्यादि के कारण आँखों में आँसू आते हैं। दूसरी ओर, हर्ष के अतिरेक की अवस्था में भी आँखों में आँसू आ जाते हैं । इसे "हर्ष के आँसू" कहते हैं।

कन्या के विवाह पश्चात् बिदाई के अवसर पर रोने की प्रथा है । इस तरह का प्रचलन प्रायः सभी समाज में देखा जाता है, क्योंकि यह सन्तान के बिछोड़ का अवसर होता है । बेटी का विवाह होने के बाद जब वह पति के घर जाती है, तब उस अवसर पर उसके माता-पिता, भाई-बहन, घर के लोग, संगी-सम्बन्धी सभी के नेत्र अश्रुपूरित हो आते हैं । दूसरी ओर, जब बेटी अपने ससुराल से नैहर (माता-पिता के घर) आती है, उस समय भी रोया जाता है । यह वास्तव में हर्ष का अवसर होता है, जब बेटी अपने जन्मस्थान पर आती है और अपने माता-पिता और परिवार के लोगों के साथ मिलती है । इस के साथ ही, मिथिला की परम्परा में एक ऐसा भी अवसर होता है, जब बेटी ससुराल में होती है और उसके नैहर से जब उसके परिवार का कोई व्यक्ति उसके ससुराल में जाता है, तब वह रोती है । यह अवसर और इस अवसर पर रोने की परम्परा अनुपम लगते हैं । इस अवसर पर जब बेटी रोती है, तब वह अपने नैहर के परिवार के सभी लोगों के नाम उच्चारण कर रोती है । यथा, माय (माता), बाबूजी (पिता), भैया, भौजी, काका, काकी, बहिन इत्यादि के सम्बोधन सहित उच्चारण कर रोने की परम्परा है । इसमें और भी विलक्षण बात यह है कि इसप्रकार बेटी द्वारा नाम और सम्बोधन का उच्चारण कर रोने की आवाज उसके नैहर से आये व्यक्ति को सुनाया जाता है, अर्थात् बेटी इस तरह रोती है कि उसका नामोच्चारण सहित रोना नैहर से आये व्यक्ति स्पष्ट रूप से सुनें । क्योंकि जब वह लौटकर अपने घर आते हैं, तब उनसे पूछा जाता है कि बेटी किन-किन का नाम लेकर रोयी थी ? उनसे घर के प्रायः सभी लोग पूछते हैं कि क्या बेटी मेरा नाम लेकर भी रोयी थी ? इस पर उनके द्वारा यह कहे जाने पर कि बेटी आपका या तुम्हारा नाम भी लेकर रोयी थी, सम्बन्धित व्यक्ति स्नेह और करुणा से ओतप्रोत हो जाता है । इसप्रकार बेटी के प्रति अपार आत्मीयता उद्भूत हो आती है । इसको बेटी का अपने नैहर के लोगों के प्रति अनुराग के प्रतीक के रूप में माना जाता है । दूसरी ओर, घर-परिवार में कुछ ऐसे लोग भी होते हैं, जिनसे कुछ अनबन या खटपट हुए होते हैं, तो वैसे व्यक्ति के नाम लेकर बेटी नहीं रोती है । और जब इस बात का पता सम्बन्धित व्यक्ति को चलता है, तब उसका अभिमान और अहंकार और बढ़ता है तथा इससे परस्पर द्वेष और घृणा में वृद्धि ही होती है ।

इसी तरह, मिथिला की परम्परा में रोने की विधि के अन्य अवसर भी हैं । इनमें एक रोने की विधि तब देखी जाती है, जब किसी व्यक्ति का देहान्त होता है । वैसे तो किसी व्यक्ति का देहान्त अपने आप में एक दुखद अवस्था होती है । ऐसे अवसर पर सभी के आँखों में आँसू आते हैं । मृतक के शव को चिता में अग्नि संस्कार करने बाद श्मशान से जब सभी लोग वापस लौटते हैं, तब मृतक के घर के द्वार पर एक विशेष विधि की जाती है, जिसको मैथिली भाषा में "आगि पानि लोह पाथर छूअब" कहा जाता है । इस अवसर पर सबसे पहले कर्ता और उसके बाद शवदाह क्रिया में सहभागी सभी लोग बारी-बारी से अग्नि, जल, लोहा और पत्थर का स्पर्श अपने बायाँ हाथ के कनिष्ठा अँगुली से करते हैं और सूखी मिर्च को जिह्वा से स्पर्श कराते हैं । इस अवसर पर जब कर्ता द्वार पर पहुँचता है उस समय आँगन में महिला वर्ग रोती हैं । इसके लिए, जब यह समझा जाता है कि कर्ता सहित शवदाह में गये लोग अब द्वार पर पहुँचने वाले हैं, तब रोने के लिए आँगन में महिला वर्ग एकत्र होती हैं और कर्ता के पहुँचते ही रोया जाता है ।

इसी प्रकार, व्यक्ति के निधन पश्चात् उसके श्राद्ध-कर्म के अन्त में भी रोने की विधि होती है । इसमें, द्वादशा श्राद्ध-कर्म के दिन घाट पर के सभी कृत्य समाप्त होने के पश्चात् जब कर्ता-व्यक्ति घर पर आता

है, तब द्वार पर कर्ता के प्रवेश करने के समय आँगन में सभी महिला वर्ग रोते हैं। इस प्रकार रोने के लिए पहले से ही तैयारी की गयी होती है। इसके लिए जब कर्ता घाट पर से घर आने को प्रस्थान करता है, तब उसकी सूचना घर पर दी जाती है और रोने के लिए महिला वर्ग तैयार होती हैं। इस अवसर रोने से रुदन की ध्वनि के साथ मृतक को स्वर्ग में स्थान प्राप्त होता है, ऐसा विश्वास पाया जाता है। इस अवसर पर कहा जाता है कि जितने अधिक लोग रोते हैं, मृतक को उतना ही अधिक भाग्यवान समझा जाता है। इस सन्दर्भ में, मिथिला क्षेत्र में अति कुपित होकर किसी को कुवाक् कहना होता है तो कहते सुना जाता है कि "तोरा कुलमें कोई कननाहरि नहिं रहौ" अर्थात् तुम्हारे कुल में कोई रोनेवाले भी नहीं रहे। अर्थात् इस कुवाक् को कुल का विनाश होवे, ऐसा मनसाय बोधक माना जाता है। इस जगह गोस्वामी श्रीतुलसीदासजी की पंक्ति का स्मरण हो आता है, जब रावण के देहान्त पर मन्दोदरी कहती है – राम विमुख अस हाल तुम्हारा, रहा न कुल कोई रोवनहारा।

शोणित खिलाने की परम्पराः– मिथिला क्षेत्र में शोणित (खून) खिलाने की परम्परा पायी जाती है। इसको मैथिली भाषा में "सिनेह खुआएब" कहा जाता है। सिनेह शब्द का अर्थ स्नेह होता है। इसमें शुभ विवाह के अवसर पर एक विधि की जाती है, जिसको "नहछू" कहा जाता है। मिथिला की लोकबोली में इसे "लहछू" भी कहते हैं। यह विधि वर और कन्या दोनों को, विवाह से पहले, की जाती है। इस विधि में हजाम द्वारा वर के दाहिने हाथ की तथा कन्या के बायेँ हाथ की कनिष्ठा (कनगुरिया) अँगुली में छोटा सा चीरा लगाकर थोड़ा खून निकाला जाता है और उस खून को लाल रंग में रंगी हुई रुई में ग्रहण किया जाता है। इसी को सिनेह कहा जाता है। वर जब बारात लेकर कन्या के घर विवाह के लिए जाता है तब उस रुई को सुरक्षित रूप से कन्या के घर की विधिकरी के समक्ष पहुँचाया जाता है। विधिकरी उस सधवा महिला को कहते हैं, जो विवाह सम्बन्धी विधियों का सम्पादन कराती हैं। उधर, कन्या के खून लगी रुई को भी सुरक्षित रखा गया होता है। जब विवाह की विधि सम्पन्न होती है, तब प्रातःकाल वर के सिनेह को कन्या को एवम् कन्या के सिनेह को वर को किसी भी मधुर मिष्टान्न वस्तुमें मिलाकर खिला दिया जाता है। इसप्रकार सिनेह खिलाये जाने की बात वर तथा कन्या में से किसी को भी पता नहीं होता है। उन्हें इस बात की जानकारी नहीं दी जाती, गोपनीय ढंग से इस शोणित खिलाने की विधि को सम्पन्न कर लिया जाता है। इसप्रकार, परस्पर एक दूसरे के शोणित (खून) खाने से दोनों के खून एकाकार होते हैं तथा परस्पर दाम्पत्य जीवन में प्रेम, स्नेह और मधुरता की वृद्धि होती है, ऐसा विश्वास लोक में पाया जाता है।

गाली सुनाने की परम्पराः– मिथिला क्षेत्र में गाली सुनाने की प्रथा है। इस प्रकार की प्रथा को मनोरञ्जन के रूप में लिया जाता है। समाज में साला-सालीवर्ग एवम् जीजावर्ग के बीच हँसी मजाक करने तथा इस सन्दर्भ में कुछ अश्लील शब्दों का प्रयोग करने की बात देखी जाती है। दूसरी ओर, विभिन्न शुभ सांस्कारिक अवसरों पर गाये जाने वाले गीतों में एक "डहकन" नामक विशेष गीत गाने की परम्परा है। इस डहकन गीतको दूसरे शब्दों में गाली-गीत भी कहा जा सकता है। इस गीत में अनेक अश्लील शब्दों, भावों एवम् अभिव्यक्तियों का प्रयोग होता है। विशेष कर मुण्डन, चूड़ाकरण, विवाह आदि संस्कारों के अवसर पर डहकन गीत गाये जाते हैं। मुण्डन और चूड़ाकरण संस्कारों के समय में ननद और भावी के बीच हँसी मजाक विषयक गीत गाये जाते हैं। ऐसे ही, शुभ वैवाहिक संस्कार अन्तर्गत के कुमरम, लावा

भूजब, बिलौकी, घोघट, चतुर्थी आदि विधियों के सम्पन्न होने के समय पर डहकन गीत गाने की प्रथा है। इसी प्रकार बारात में आये लोगों के भोजनकाल में विशेष रूपसे डहकन गीत गाये जाते हैं। मिथिला की परम्परा में विवाह सम्पन्न होने के दूसरे दिन बारातियों को विशेष मर्यादा पूर्वक निमन्त्रण देकर भोजन कराया जाता है, जिसे "मर्याद भोजन" कहा जाता है। बारातियों में समधीवर्ग के व्यक्ति भी रहा करते हैं। मिथिला की सामाजिक परम्परा में समधीवर्ग के व्यक्तियों को "परमाराध्य बहुविनयसाध्य" सदृश प्रशस्ति द्वारा अभिहित करने की परम्परा है। इससे यह ज्ञात होता है कि यहाँ समधीवर्ग को उच्चस्तरीय मान्यजन के रूप में स्वीकार किया गया है। अब यहाँ यह विचारणीय विषय है कि ऐसे मान्यजन महानुभावों को मर्यादापूर्वक भोजन कराने के अवसर पर डहकन(गाली) गीत गाकर सुनाया जाता है, और इस परम्परा को प्रसन्नतापूर्वक मनोरञ्जन के रूप में स्वीकार किया जाता है।

भोज की परम्पराः– मिथिला क्षेत्र में भोज खिलाने की अपनी खास परम्परा है। भोज का आयोजन प्रत्येक शुभ सांस्कारिक कार्य सम्पन्न होने के अवसर पर एवम् किसी के देहान्त होने पर श्राद्ध कर्म के अवसर पर किया जाता है। भोज की वस्तुओं को मुख्यतः दो प्रकारों में देखा जाता है – कच्ची और पक्की। इनमें भात, दाल, तरकारी इत्यादि वस्तुओं के भोज को कच्ची भोज तथा पूड़ी, कचौरी, मिठाई इत्यादि वस्तुओं के भोज को पक्की भोज कहा जाता है। शिशु के जन्म के उपरान्त छः दिन पर की जानेवाली छठियार विधि के दिन जो भोज का आयोजन होता है, उसमें मछली की अनिवार्यता मानी जाती है। इसीप्रकार कच्ची भोज में घी, साग और बड़ी अनिवार्य होते हैं। कच्ची भोज में आरम्भ में घी और अन्त में दही परोसा जाता है। मिथिला क्षेत्र में एक कहावत प्रसिद्ध है – आदि घी अन्त दही, ताहि भोजन के भोजन कही। इसीप्रकार, प्रायः भोज में परोसी जाने वाली सकरौड़ी नामक मिष्टान्न वस्तु कच्ची भोज में ही रहा करती है। दूसरी ओर, पक्की भोज में घी नहीं परोसा जाता। इसी तरह, एकाधिक तरकारियों को एकसाथ मिलाकर तैयार किया गया तरकारी का एक विशेष प्रकार, जिसे "डालना" कहा जाता है, पक्की भोज में ही परोसा जाता है।

भोज का आयोजन विभिन्न पारिवारिक संस्कार, सामाजिक और धार्मिक अनुष्ठान, व्रत, पर्व और मांगलिक अवसर, खुशी के अवसर इत्यादि अनेक शुभ अवसरों के साथ ही पितृ कर्म के अवसरों पर किया जाता है। ऐसे अवसरों पर अनिवार्य रूप से भोज खिलाने की परम्परा है। भोज के आयोजन के विभिन्न स्वरूप होते हैं। इनमें पारिवारिक भोज में अपने परिवार और उससे सम्बन्धित व्यक्तियों को निमन्त्रण दिया जाता है। ऐसे ही, गाँव के सभी लोगों को निमन्त्रण देकर भोज खिलाया जाता है, जिसे "गमैया भोज" कहते हैं। दूसरी ओर, चार गाँवों के समूह को "चौगामा" तथा आठ गाँवों के समूह को "अठगामा" कहा जाता है। कतिपय सक्षम व्यक्ति जब भोज करते हैं तब चौगामा एवम् अठगामा में निमन्त्रण दिया जाता है। इसी तरह, मिथिला क्षेत्र के समाज में अनेक जातियों की अपनी "जातीय सभा" होती है। इस जातीय-सभा का बहुत महत्व होता है। इस सभा के अधीन कतिपय सामाजिक और अनुशासनिक अधिकार होते हैं, जिन्हें उस जाति के सभी लोग स्वीकार करते हैं। जब समाज में कोई व्यक्ति "सभा का भोज" करते हैं, तब सम्बन्धित जाति के उस क्षेत्र में निवास करनेवाले अनेक गाँवों के लोग निमन्त्रित किये जाते हैं।

भोज में निमन्त्रण देने के अनेक प्रकार पाये जाते हैं। यदि एक घर से एक ही व्यक्ति को निमन्त्रित करना होता हैं तो उसे "घरजना निमन्त्रण" कहा जाता है। ऐसे ही, यदि परिवार से सभी पुरुष पात्रों को निमन्त्रण देना होता है, तो उसे "पुरुष दिशि निमन्त्रण" कहा जाता है। उसी प्रकार, यदि परिवार के सभी सदस्यों को निमन्त्रण देना होता है, तो उसे "स्त्रीगणे पुरुषे निमन्त्रण" कहते हैं। इसको दूसरे शब्दों में "सपरिवार निमन्त्रण" भी कहा जाता है। मिथिला क्षेत्र में किसी परिवार में यदि कोई अतिथि आते हैं, तो उन्हें अलग से निमन्त्रण देने की परम्परा है। इसके लिए "मान भगिनमान अतिथि अभ्यागत समेत निमन्त्रण" कहा जाता है। इस क्षेत्र में कभी-कभी "बरबरना भोज" का आयोजन होता है। इसमें बरबरना शब्द से बारह वर्णों की ओर संकेत किया गया है। मिथिला क्षेत्र के समाज में बारह-वर्ण की अवधारणा देखी जाती है। इस प्रकार के भोजों में स्पृश्य, अस्पृश्य, साधु, सन्यासी, डाँड़ातोड़ इत्यादि सभी प्रकार और जाति के लोग सहभागी किये जाते हैं। निमन्त्रण के साथ ही भोजन करने के समय की जानकारी दी जाती है, जिसे "विजहो" वा "बिज्जो" कहा जाता है।

मिथिला के समाज में भोज का बड़ा महत्व माना गया है। इस अवसर पर निमन्त्रित व्यक्ति अनेक जाति, वंश, वर्ण, लिंग, समुदाय, वर्ग तथा स्तर के होते हैं। भोज में अनेक प्रकार के लोग एकसाथ समान रूप से भोजन में सहभागी होते हैं। इसप्रकार, सभी निमन्त्रित व्यक्तियों में एक प्रकार की आत्मीयता का भाव विकसित होता हैं, जो भोज के सामाजिक महत्व को प्रतिपादित करता है। दूसरी ओर, भोज का आयोजन किसी खास अवसर पर ही किया गया होता है, अतः भोज में सहभागी जनों के द्वारा उस अवसर की सामाजिक स्वीकृति के रूप में भी इसे देखा जाता है। ऐसे ही, भोज को एक प्रकार की सामाजिक प्रतिष्ठा के रूप में भी लिया जाता है।

न'त पूरने की परम्परा:– "न'त" मैथिली भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ होता है निमन्त्रण। इस निमन्त्रण अथवा न'त को, दूसरे शब्दों, में उस अवसर अथवा अनुष्ठान विशेष के विषय में जानकारी के रूप में भी लिया जाता है। समाज में प्रत्येक शुभ और अशुभ कार्य, अनुष्ठान, अवसर आदि पर निमन्त्रण देने की परम्परा है। ऐसा निमन्त्रण अपने कुटुम्बवर्ग के साथ ही समाज के अन्य वर्गों के लोगों के समक्ष भेजा जाता है। मिथिला की परम्परा में कुटुम्ब कहने से समधी, साला, जीजा (बहिनोई), साढू, जमाता, भानजा सदृश नातेदारों को समझा जाता है। निमन्त्रण देने का कार्य प्रायः हजाम जाति के व्यक्ति द्वारा सम्पन्न कराया जाता है। निमन्त्रण देने के माध्यम के रूप में मौखिक, लिखित कागज, सुपारी, तुलसीदल आदि का व्यवहार किया जाता है। इस प्रकार निमन्त्रण आने पर निमन्त्रण भेजने वाले के समक्ष सम्बद्ध कार्य वा अवसर के अनुरूप उचित रीति से वस्त्र, नकद, अन्न(प्रायः चावल), दही, फलफूल इत्यादि भेजे जाते हैं। इसी को "न'त पूरना" कहा जाता है।

समाज में न'त पूरने की व्यवस्था अति सम्वेदनशील होती है। इस समय में कहाँ, किस और कैसे परिवार में न'त पूरना है, इस विषय पर गम्भीरता पूर्वक विचार किया जाता है। इस में अपनी और न'त पूरे जाने वाले परिवार की हैसियत, परस्पर दोनों परिवारों के बीच का व्यावहारिक सम्बन्ध एवम् न'त पूरने का अवसर विशेष के विषय में विचार करना अनिवार्य होता है। यह एक ऐसा गम्भीर विषय होता है, कि

इसमें यदि किसी प्रकार की त्रुटि रह जाती है, तो परस्पर दोनों परिवारों में मनमुटाव बढ़ जाता है और पारिवारिक सम्बन्ध तथा व्यवहार में कटुता उत्पन्न हो जाती है। अतः मिथिला के समाज में न'त पूरने की परम्परा का बड़ा महत्व देखा जाता है।

व्यवहार की परम्पराः– मिथिला क्षेत्र के समाज में "व्यवहार" की परम्परा है। इसमें कुटुम्बवर्ग के परिवारों के सदस्यों के बीच परस्पर भेंट के अवसर पर एक-दूसरे को वस्त्र आदि प्रदान किये जाने के रूप में "व्यवहार" शब्द का प्रयोग किया जाता है। इसके अन्तरगत ऐसा माना जाता है कि यदि कोई व्यक्ति अपने कुटुम्बवर्ग के भीतर के किसी परिवार में अथवा किसी व्यक्ति से भेंट करने जाता है, तो उसे सम्बन्धित जगह के आदरणीय लोग अथवा व्यक्ति के लिए उचित ढंग के वस्त्र साथ लेकर जाना चाहिए। दूसरी ओर, यदि कोई व्यक्ति "व्यवहार" के साथ कहीं जाता है, तो, प्रत्युत्तर में, उसके साथ भी "व्यवहार" किया जाना चाहिए। इस "व्यवहार" में मुख्य रूप से पुरुष पात्र के वस्त्र में धोती और महिला पात्र के वस्त्र में साड़ी होने चाहिए। इसके साथ पुरुष पात्र के लिए गंजी, गमछा, रूमाल आदि तथा महिला पात्र के लिए साया, ब्लाउज के कपड़े आदि होते है। आधुनिक समय में धोती के स्थान पर पैण्ट-शर्ट के कपड़े भी दिये जाने लगे हैं। परन्तु, ध्यान देने की बात यह है कि पुरुष पात्र के वस्त्र के साथ डाराडोरि (कमर में बाँधा जानेवाला धागा विशेष) एवम् महिला पात्र यदि सधवा हो तो उसके वस्त्र के साथ सिन्दूर अनिवार्य रूपसे होने ही चाहिए। सधवा महिला के लिए सिन्दूर के साथ टिकुली, बिन्दी, लहठी, चूड़ी इत्यादि भी दिये जाते हैं।

इस "व्यवहार" की व्यवस्था के निर्वहण में भी न'त पूरने की परम्परा के सदृश परस्पर दिये-लिये जाने वाले वस्त्र आदि के विषय में विचार किया जाता है। "व्यवहार" में सामञ्जस्य बने रहने से पारिवारिक सम्बन्ध ठीक रहता है और इसके साथ ही कुटुम्बवर्गों के बीच परस्पर सौहार्द्रता बनी रहती है तथा आपस में कटुता उत्पन्न होने की सम्भावना नहीं रहती है।

इस प्रकार, मिथिला क्षेत्र के समाज में हँसने, रोने, शोणित खिलाने, गाली सुनाने, भोज खिलाने, न'त पूरने तथा व्यवहार करने जैसी परम्पराएँ देखी जाती हैं।

विद्वानों के विचार में वस्तुतः ये परम्पराएँ आकांक्षा, कामना, श्रद्धा, अभिलाषा, अनुराग, प्रीति, प्रफुल्लता, सहृदयता, सामाजिकता, आत्मीयता, सौहार्द्रता, सहानुभूति, समानुभूति सदृश मानवीय भावनाओं की हार्दिक अभिव्यक्तियाँ होती हैं। यद्यपि, आज के युग में, कतिपय लोग इन्हें सामाजिक कुरीतियाँ भी कह सकते हैं, परन्तु, इन परम्पराओं का जिस युग में उद्भव हुआ होगा, वह युग कैसा रहा होगा और किन परिस्थितियों में ऐसी परिम्पराएँ प्रचलित की गयी होंगी – इन विषयों पर विस्तृत रूप से गहनतम शोध, खोज और अनुसन्धान होने चाहिए, जिससे मिथिला की सांस्कृतिक चेतना विषयक जानकारी प्राप्त हो सके।

CAN TARAI SURVIVE? Or

Leading towards desertification & extreme environmental degradation with special reference to pradesh no. 2

Prof I.C.Dutta, Ph.D

INTRODUCTION

People live in society; we would not have society if we destroy the environment.Tarai is composed of Flat land (Plain), Bhabar, Shiwalik range (Churea- small hill), & Dun Valley from where Mahabharat range begins (Mid hills). Out of seven Province (Pradesh) Tarai includes fully or partially 5 provinces or states viz. Pradesh No. 1, 2, 3, 5, and 7 covering an area 9,766 Sq km. The forest area is 1.78 million ha (Churia 1.37 million ha&Tarai 0.41 million ha) Source: DFRS 2014. Estimated area of paddy farm in Taraihas reducedfrom 10,08635 ha to 934136 ha in 4 years (- 74,499 ha), and Wheat (-5381 ha) reduced *Dept of Agriculture, 2012/13 to 2015/16)*. Revenue from forest products (timber, herbs and miscallaneous) is more than Rs 71 crores (Rs. 716628880) (Dept. of Forest, DFRS 2015/16).

Taraiin province 2 has lowest forest area in comparison to other provinces but 50.3% population of the country is living here (CBS 2011). The population is 2ndhighest in Pradesh no 2 i.e 54, 04,145 after Pradesh No 3. It has highest population density / sq.Km 559 and other Pradesh has almost 50% less or less than Pradesh no 2. It has lowest area 9,661 sq km almost 2 to 3 times less than other Pradesh. Total forest in Province 2 is 260570 ha specifically, 99300 hain Taraiand 161270 ha in Chure. Total Stem volume in whole Tarai =309 m^3 / ha (Churea 147.49 m3/ha &Tarai 161.66m^3 / ha.(DFRS 2014), Land holding 5,74,900 ha (Source: Statistical Pocket Book of Nepal, National Planning Commission 2016). In Tarai agriculture area, agriculture production, fertility and productivity havedeclined during last 40 Years& now.

Province 2 has smallest area but highest population density, imagine the pressure on resources.

CHARACTERISTICS OF CHURIA or SHIWALIK

Outer Terai ends at the base of the first range of foothills called the *Siwaliks* or *Churia*. This range has a densely forested skirt of coarse alluvium called the *Bhabhar*. (a deposit of clay, silt, and sand left by flowing floodwater in a river valley or delta, typically producing fertile soil.

Below the Bhabhar, finer, less permeable sediments force groundwater to the surface in a zone of springs and marshes. In several places beyond the Siwaliks there are Dun valleys (a dull greyish-brown colour) called Inner Terai. These valleys have productive soil. The Tarai ends and the Hills begin at a higher range of foothills called the *Mahabharat* Range.

SOILS OF CHURIA: Upper Chureais characterized by very course Sediments such as loose boulder, conglomerates, Middle Churea- thick beds of multistoried sandstones alternating with subordinate beds of mud stone, Lower churea - very fine grained sediments such as mudstone, siltstone and shale. *(Pariyar 2008 in States of Nepal forest DFRS/FRA 2016)*. The region is composed of unconsolidated loose materials originating from soft rocks like mudstone, sandstone, siltstone, and shale

DRAINAGE SYSTEM: Tarai is drained by numerous largest rivers: Koshi in the east, Gandaki in the center, Karnali & Mahakali in the west. All these originate from Himalayas. 48 rivers systems originate from Chure which irrigate several hectares of land in Nepal and India. One of the biggest concerns is the tendency of minor and major rivers to change their courses due to flooding events. The Chure range covers about 12.8% of Nepal's total land area and spreads in 36 districts. Churia region is geologically young and dynamic, structurally weak, ecologically fragile. The Chure is youngest mountain in the world and have high slope (slope > 31%).

CHURE BIODIVERSITY

The Chure is a hotspot of biological diversity and home for much wildlife. A total of 666 different species of flora is found: [240 trees, 144 shrubs, 187 herbs, 70 climbers, 22 ferns and three epiphytes) including 305 species having medicinal values. (Source: FRA/DFRS, 2014)]The region also serves to recharge the ground water for the lower plains. So, any typesof negative activities can affect the geography. There are 527community, 16 collaborative, 55 Leasehold, and 4 religious forests with an area of 77344 ha, 41264 ha, 237.38 ha and 47.89 ha respectively.

(David Suzuki quotes: ***I cannot imagine anything more important than air, water, soil, energy and biodiversity. These are the things that keep us alive which are possible from forests.)***

IMPORTANCE OF CHURIA REGION

Churia ecosystem provides important economic as well as environmental benefits to local people and the nation. It maintains hydrological connectivity, GROUND WATER RECHARGE ZONE OF TARAI. Ecosystem diversity is considered as field school for ecologists and geologists. It is rich in biodiversity and it is habitat for major tiger prey species. Degradation of churia is affecting seriously the LIVELIHOODS OF LOCAL PEOPLE (upstream and downstream both), and the economy of the local people as well as of the nation. **IF CHURIA IS GONE, LIFE IS GONE.**

FOREST TREES OR STEM ≥ 10cm DBH and REGENERATION in CHURE & TARAI

Total number of stems /ha is 616.5 including Tarai and Churea).Forest total no. of stems 583.30 million, otherwooded land stems /ha 85.80, OWL no. of stems 1.28 million, other land no. of

stems per ha90.86, Other land no. of stems 73.09 million. No. of Seedlings /ha (<1.3 m ht 49454, No. of Saplings/ha>1.3 m ht<5cm DBH 2620, No. of Saplings/ha 5-10cm DBH 698, Total No of Seedlings, Saplings /ha 52772. In addition, stem Volume 309.15 m3 /ha in forest, it is 269.15 million m3, other wood Land Stem 45.64 m 3/ha, total OWL Stem volumeis 0.63 million m 3,Other land Stem volume 14.73 m3/ha which is total 13.31 million m3. Besides, carbon in forestsoil, litter & debris and tree (DBH≥ 10 cm) were 65.10, 0.66, 202.16 t/ha respectively.(Source: DFRS 2014, State of Nepal's Forest)

INTERNATIONAL AIRPORT NIJGARH (BARA)- DEFORESTATION

Total No of stems 5851520, Total volume (1231920 m3) in area 8000 ha,Monetary loss due to volume harvestestimated: NRs 43471441060, NRS 43462137600 More than 43 Arabs NRs. Loss of CO2 sequestration t/yr: 745224.48, Monetary loss due to CO2 sequestration= NRs 424777954. Price: considering Royalty of Sal @1000 NRs/cft, 1m3= 35.28 cft (GoV, Nepal , 2011), CO2 increment = 0.65 t/yr Price: US$ 5 /ton CO2(Mandal et al., 2014 & Molly and Yin, 2013) (Total Biomass= stem biomass+ branch biomass+ leaf biomass+ root biomass. Total carbon= 0.47* Total Biomass Equivalent).Total 2439426 ton of biomass likely to be lost due to construction of international airport in Bara district.At the same time, 5851520 stems may be lost so 2772075 m3 volume of wood likely to be harvested. This can create the great havoc in the forest and forest ecosystem.

CARBON LOSS DUE TO MADAN BHANDARI RAJMARG

Total 54802.47 tons carbon stock will be lost after the construction of the MadanBhandari highway. Importantly, carbon stock is significant part of environment. The environmental regulation depends upon the forest cover. The carbon storage and carbon sequestration are the main function of vegetation. The harvesting of trees for construction of international airport can damage 2521220 ton carbon stock in Bara district. This will be a great environmental loss.

Monetary loss due to volume 60255.18 cubic meter: NRs 2,12,58,02,750 (> 2 Arab NRs). Loss of CO2 sequestration due to harvested plants: 16199 t/yr. Monetary loss due to loss of CO2 sequestration: NRs 92, 33,432 (> 92 Lakhs NRS). The consequence will be great loss in the forest vegetation and environment.

MAJOR PROBLEMS AND ILLEGAL ACTIVITIES

Natural hazards, Earthquakes, severe thunderstorms, flooding, landslides, drought, and famine depending on the timing, intensity, and duration of the summer monsoons, Environmental - current issues:Deforestation (overuse of wood for fuel and lack of alternatives); contaminated water (with human and animal wastes, agricultural runoff, and industrial effluents); wildlife conservation; vehicular emissions. The condition is very fragile and soil is very unstable.

BURNING ISSUES of CHURE

The proposed ChureMadanBhandariRajmarg and international airport in Bara district will be a big problem. The forest stock and carbon loss can be challenging for environment and local

SO NOT VERY APROPRIATE FOR HUMAN SETTLEMENTS: Sponge effect of forest vegetation is reduced. Frequent flooding and meandering of rivers in Tarai is destroying fertile farm lands. Soil loss is due to river bank cutting and bed scouring. No top soil in Churia is found. Rising riverbed and flooding- (39 Villages in Dhanushadisrictwere severely affected by floods in 2006). Land degradation due to accelerated soil erosion in Churia hills, river/stream bank cutting, flooding in low land, Sediment deposition, Settlement and agricultural land, River beds, River/stream bank cutting and sediment deposition in Tarai, River Bed Rising-flooding. Land encroachment, over exploitation of forest resources, uncontrolled livestock grazing, land tenure conflict, excessive sand/stone/debris extraction/collection, and other anthropogenic activities are causing severe environmental degradation.

people. The population migration rapidly increased from mountain areas to Terai, foothills and Chure. Without Considering The Long Term Effect of Deforestation and EIA for The International Airport andMadanBhandari Raj marga, the decision taken by the Govt is not wise at all and appreciable. Conservation and livelihoods issues isseen to be in isolation with the Indian border. Forests are not any more for subsistence needs only, market forces are changing the life style and affecting the natural resources, and food security of Nepal is linked to conservation of Churia and development of Tarai. Moreover, 50% landslides in Churia are of geological origin. Process of erosion is accelerated due toforest degradation and loss of protectivesoil cover. Unscientific use of land, farm practices, Encroachment of forest for cultivation, heavy extraction of sand gravel and boulders are responsible for erosion.

ENCROACHMENT AND ILLEGAL MIGRATION

Government's turning deaf and dumb, why? Madhesi Perspectives: No Encroachment from Madhesi People!

- MIGRATION FROM HILLS TO TARAI: Internal migration volume increasing after the control of endemic malaria in the Tarai (Plain) and Inner Tarai Valleys since the early 1950s. From 1961 to 2001. From 1961 onward, the absolute volume of inter district migration increased by 7 times during the last 40 years.

Migration of people from hills to Tarai reported 13 lakh 26 thousand 8 hundred 60.

- Politicalissue- people migrate from hills and mountains to churia and Tarai (encroachment) resulting into barren land or reduction in agricultural activities.
- Wrong planning of the government without considering impacts, affect and effects of deforestation and international airport as well as proposed ChureRajmarg construction.

OVERALL CONSEQUENCE TARAI DESERTIFICATION AND LIFE CRITICAL.

RastrapatiChure conservationprogramme has not been functioning well due to lack of budget. So, the consequence is greatand unrepairableloss of Biodiversity.Socioeconomic condition will deteriorate difficult to restore and no regular flow of adequate budget.Even plantation program is launched simultaneously it will take at least 80 years to recover.

ARE WE READY TO WAIT FOR SUCH A LONG TIME? CAN WE SURVIVE WITHOUT FOREST, WATER AND FRESH AIR?

CONSEQUENCES in DOWN STREAM is SERIOUS

- Frequent damage, destruction or loss of property and in some cases even loss of human life in ChuriaTarai landscape.Land productivity deterioration,Negative impacts on livelihood and long - term economy,slow process of desertification from frequent damage through above mode of land degradation,over all environmental degradation
- Water table going down due to Churia deforestation, Sand, silt, gravels filled up in agri-land reducing agri-land area and hence low production, food deficit in more than 22 districts of Tarai (FAO, 2010), Loss of CO2 capture from atmosphere reduced or concentration and Volume of CO2 in the atmosphere will increase hence shortage of O2 resulting into breathing problem and suffering from different diseases, Scarcity of Drinking water and irrigation in agri-fields resulting into less vegetable and grain production leading to poverty and hungry. Question of survival and livelihoods, Frequent flooding leading to loss of human, cattle and houses, loss of agri- crops.Increased Environmental pollution like air, water and noise due to absence of forest.Bilateral Relation: India and Nepal may be affected, needs to resolve this problem for the people of both country.

IMPACTS

- Loss of natural resources particularly forest, biodiversity, NTFPs, ecosystem, Low Fertility, Productivity and Production of agricultural crops are the impacts. Number of Crops in a year reduced to one in general and in comparison to past 25 years, Agriculture land reduction due to filling of sand and gravels.People will be becoming poor. High soil andwater erosion, Tarai in Nepal, Bihar & UP State in India will be highly affected.All the revenue from selling logs if it is going to Sanghiya government will be disastrous.It seems to be highly political issue.
- There are high chancesof further migration of people from hills to Chure,Bhabar and Tarai exerting extra pressure on all resources and also to diffuse madhesi population in order to get votes during election.Degazetting of RastrapatiChureMadheshTarai conservation Board.MadanBhandaryhighway (East –west) - Is it necessary or appropriate in the vicinity of 1 to 8 KM of East West MahendraRajmarg.?
- Around 8000 ha forest clear felling for the purpose of International Airport at Nijgarh. Natural hazards and land degradation, landslides and floods are major hazards due to heavy rainfall, weak geology, deforestation, traditional cultivation, free grazing etc.Churia watershed is poorly stocked and drainage system is also very poor. Gullies erode by head, bed and side cutting and deposits in rivers. Poor water management practices in

up- stream.Unscientific land use and farming practices. lack of conservation education, Policies, acts, laws etc. Loss of biodiversity, Increasing settlement, and overgrazing, illegal trade in floral and faunal species are the main causes.

LIKELY SOLUTIONS

- Stop Environmental degradation activities like construction of Road on Chure ridge

IMPLICATIONS ON MADHESI PEOPLE AND LEADERS: Churia is the region of concern for Madhesi, because it affects their livelihoods directly. Exclusion is evident: government's deaf & dumb nature on encroachment-punishment; in some cases they motivate people to do so. Strict Protection Regime and Go Back Original Place Policy are necessary. Projects are not for Madhesis.

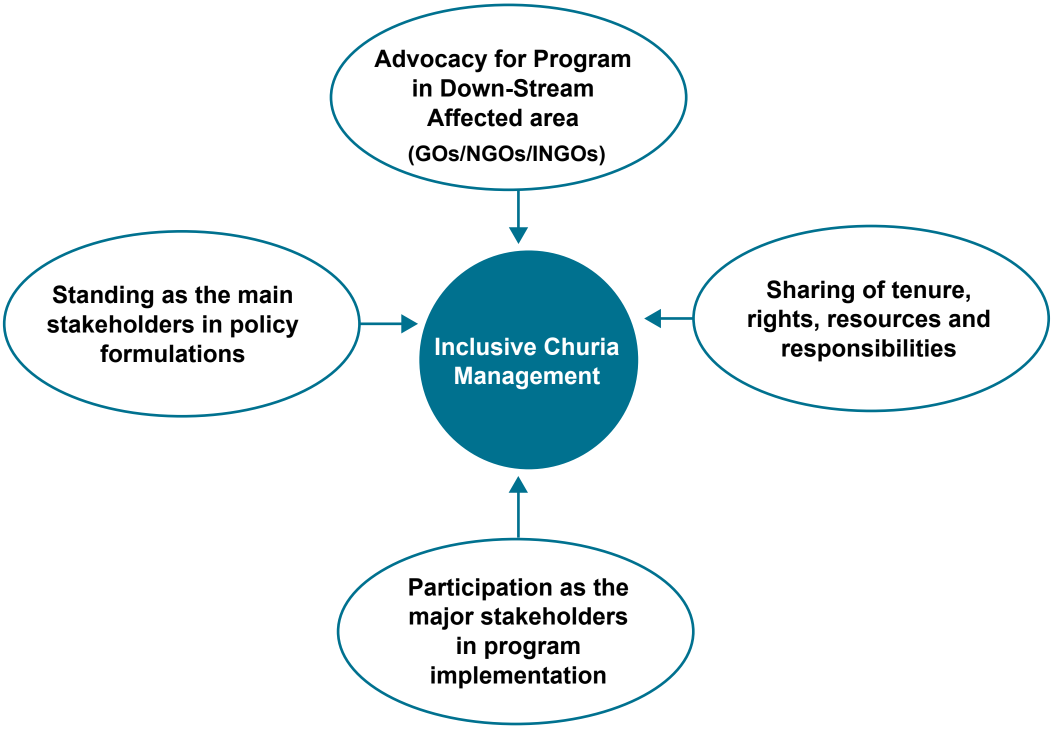

Spaces for Involvement of Madhesi Socio-Political Leaders

- Stop construction of International airport at Bara Nijgarh. Look for alternative suitable sites for airport like west of BardibasRatukhola (700 ha Land).Or expand Simara or Janakpur airport to be International airport or any other alternative sites. Stop immediately clear felling of trees/ forest
- Stop migration of Hill people to settlement in churea and Terai.
- RastrapatiChure project should be under the Direct control of either or and Prime Minister, State government etc.
- Large Scale plantation in churia and Tarai. Embankment in all river system and spurs creation Supported with soil anchoring plantations.
- Develop Nurseries to raise required Crores of seedlings for plantation
- Large Scale Plantation in Chure and Tarai needed
- Settlement of migrated people having no LalPurja
- Local level and leaders cooperation for ChetanaJagao (Conciouness) and settle illegal settlement issues
- Clear policy statement on settlements & encroachments
- Agroforestry in Tarai and Churia, Stream control- including reopening the filled up channels
- Regulation on removal of stone, gravel and sand,
- Planting on stream margins, adjoining land and public land, Create conservation Ponds
- Support to agriculture, animal husbandry and horticulture
- Use of higher quality of planting and sowing material- Clonal Eucalyptus, Napier hybrids, Grafted seedlings etc.

WAY FORWARD

Issue Way-out

Deforestation: Why charges againstMadhesis only? Why not to migrants from hill?

Encroachment: Stop now! Or Allow Madhesitoo to encroach!

Infrastructure Development: Only for legal settlements, stop developing infrastructure where illegal encroachers settlement Land-degradation

Land Degradation: Stop deforestation and encroachment. Compensate the farmers downstream. Lost Productivity and Employment Compensate the down-stream affected people: Environmental Services: Payment for environmental services to Downstream People

OXYGEN PRODUCTION

- One can survive 11days without food, One can survive 3 days without water, One cannot survive 3 minutes without Oxygen, One person needs 550 liters of O2 / day
- This comes from 11000 liters of air. A human breathes about 9.5 tons of air in a year but oxygen makes upon 23% of that air. Two mature trees can provide enough oxygen for a family of four.“1 pound of Oxygen= 0.3977 litre ,1 Acre= 0.405 ha (Source: www.thoughtco.com). "One acre of trees annually consumes the amount of carbon dioxide equivalent to

that produced by driving an average car for 26,000 miles.

- " A 100-ft tree, 18" diameter at its base, produces 6,000 pounds of oxygen.“ "On average, one tree produces nearly 260 pounds of oxygen each year. one acre of trees also produces enough oxygen for 18 people to breathe for a year."The amount of oxygen produced by a tree depends on the species of tree, its age, its health, and also on the tree's surroundings.
- According to the Arbor Day Foundation: "A mature leafy tree produces as much oxygen in a season as 10 people inhale in a year." Here are some other quoted figures regarding the amount of oxygen produced by a tree:

२४ लाख रूख काटेर बिमान स्थल बनाउने कि बिकल्प खोज्ने ?

डा. नागेन्द्र प्रसाद यादव, वनविज्ञ

बाराका निजगढमा किरव ८००० हे वन विनाश गरेर अन्तराष्ट्रिय विमानस्थल निर्माण गर्ने भएछ जसको लागि सानो ठूलो गरि २४ लाख रुख काटिने छ। यसवाट कति वातावरणीय असर पर्नेछ ? यस ८००० हे भित्र २ वटा साझेदारी वन र केही सामुदायिक वन पर्दछ। यी वन उपभोक्ताको आवश्यकता कहाँवाट पुरा गर्ने ? वातावरणीय समस्या न्युनीकरणको लागी ६ करोड विरुवा रोप्नु पर्दछ जसको लागि ३८ हजार हे वनक्षेत्र चाहिन्छ त्यो कहाँ छ ? अन्त विरुवा रोपेर यस क्षेत्रको आवश्यकता पुरा गर्ने सुनिश्चितता के छ ? प्रदेश नं.२ को ८००० वन काटेर अन्तराष्ट्रिय विमानस्थल र स्मार्ट सिटी निर्माण गरेर प्रदेशले के पाउने छ ? प्रदेश नं.२ को क्षेत्रफल सबभन्दा कम ९ हजार ६६१ वर्गकिलोमिटर छ जसमा सबैभन्दा कम ४.३६ प्रतिशत वन क्षेत्र छ तर जनघनत्व सबैभन्दा बढी छ। यस अवस्थामा विकासका नाममा वनक्षेत्रमा राजमार्ग, रेलवे, विद्युत लाइन, विश्वविद्यालय, रंगशाला र सुरक्षा निकायका क्याम्पस विमानस्थल निर्माण गर्ने निर्णयले प्रदेश २ का जिल्लामा प्राकृतिक स्रोत वनक्षेत्र अझै घट्ने निश्चित नै छ। यस्तो सरकारी नियतका कारण प्रदेश २ का जनता झनै पीडित बन्ने छन्। 'राज्यको स्रोतसाधानमा सबैको बराबरी हक लाग्छ।' 'स्रोत साधनको न्यायोचित वितरण हुनुपर्छ'। अहिले रुख काटेको सट्टा रुख रोपे पनि प्रयोग गर्न ८० वर्ष लाग्छ तवसम्म कहाँवाट वनपैदावारको आपुर्ती गर्ने।

रुख नकाटि विमानस्थल निर्माण गर्ने विकल्प छ। कत्रो विमानस्थल वनाउने ? लण्डनको हेथ्रो विमानस्थल १०५० हे को छ र काठमाडौंको करिव २५० हे को छ। तराईमा कति ठूलो विमानस्थल वनाउने ? यसको विकल्पको रुपमा १.विद्यमान विमानस्थल जनकपुर वा सिमरालाई विस्तार र आधुनिकिकरण २. विमानस्थल निर्माण गर्न बर्दिवासको रातुखोला पश्चिममा रहेको नदी उकासबगर क्षेत्रको प्रयोग जहाँ ७००हे भन्दा वढी खाली क्षेत्र छ ३. सागरनाथको मसुरियाका २७००हे मा विमानस्थल र स्मार्ट्सिटी वनाउन सकिन्छ। यस क्षेत्रमा काठमाण्डौं भन्दा दोब्बर विमानस्थल बनाउन सकिन्छ। देशको प्राकृतिक स्रोतको वुद्धिमतापूर्ण प्रयोग गरेमात्र देश समृद्ध हुन्छ नाराले हुदैन। यसमा प्रदेश २ को ठूलो भूमिका छ। हेरौं नेताजीहरुको वुद्धी कहाँसम्म पुग्छ। रुख काट्ने नियत हो कि बिमानस्थल वनाउने।

- "A single mature tree can absorb carbon dioxide at a rate of 48 lbs./year and release enough oxygen back into the atmosphere to support 2 human beings."

(Source- *McAliney, Mike. Arguments for Land Conservation: Documentation and Information Sources for Land Resources Protection, Trust for Public Land, Sacramento, CA, December 1993*)

CONCLUSION

Churia region is extremely important for Tarai& the nation, so its conservation should be a national and provinces priority. Detail information on various aspects need to be in place for better interventions. Integrated Churia Conservation adopting holistic approach and complete technical package implementation have shown promising results. Churia conservation efforts need to be scaled up many times. Integrated Churia conservation is neither one time business nor any single agency's whole responsibility. Pradesh and DoF Should be able to take lead role in the Churia Conservation. It is a very serious issue which can impact food security. Two to ten times more efforts will be needed to maintain and improve the situation.Prevention of fire and grazing can help immensely. Agro forestry on all possible sites will help. Vegetative, bioengineering andengineering control of erosion related issues will help. Large Scale Production of suitable seedlings is an urgent need. Climate will Change (Warming) could be reduced by planting trees.Above all strong commitment from Central and local governments and their coordination among and with forest department local users is needed.Considering all the problems and burning issues, their impacts seems that Tarai cannot survive and leadto desertification slowly and gradually.

RECOMMENDATION

Declare Churia as protected zone of Nepal.Bhabhar zone to be treated as reclamation area- riverside plantations, agro forestry, and community plantations etc.Tarai should be treated as production zone- activities similar to Bhabhar and support for agriculture and animal husbandry.

THINK SERIOUSLY, ACT AT ALL LEVEL, UNITE PEOPLE AND ALL PARTIES, SOLVE PROBLEMS and SAVE TARAI FROM DESERTIFICATION AND LET ALL SURVIVE.

Hearty Congratulations to Dev Chandra Lal Das for

1. International Civil Aviation Organization (ICAO) Head quarter, Montreal, Canada appointed as a Aerodrome Design and Operation Panel WHM Expert Group Member
2. International Civil Aviation Organization (ICAO) Asia and Pacific Region, Elected as a Chairman of Aerodrome Operation Panel, WHM working Group by all Asia and Pacific countries
3. Airport council International (ACI), Canada, an organization of International airports, appointed as a Global Instructor.

कायस्थ समुदाय के अनमोल रत्न: "अमिताभ बच्चन"

वीणा सिन्हा

उत्तरप्रदेश के बस्ती जिले का पुराना नाम श्रावस्ती था। श्रावस्ती इसलिए, क्योंकि श्राव नामक राजा ने इसे बसाया था। श्रावस्ती छोड़ कर जो कायस्थ देश में अन्यत्र जा बसे, वे श्रीवास्तव कहलाए, जैसे मथुरावाले माथुर। कवि हरिवंशराय बच्चन अर्थात् अमिताभ बच्चन के पिता ने अगर अपना उपनाम 'बच्चन' नहीं चुना होता, तो वे हरिवंशराय श्रीवास्तव कहलाते। वे पिछली सात पीढ़ियों से इलाहाबाद के वासी थे, जहाँ हिन्दी सिनेमा के सबसे ज्यादा चमकीले सितारे अमिताभ बच्चन का 11 अक्टूबर 1942 की शाम को जन्म हुआ था ।

सन् 1942 की जिन सर्दियों में अमिताभ बच्चन का जन्म हुआ, बच्चन दंपति इलाहाबाद में बैंक रोड पर मकान नंबर 9 में रहता था । कविवर सुमित्रानंदन पंत भी सर्दियों में अलमोड़ा छोड़कर इलाहाबाद आ जाते थे। वे बच्चनजी के घर के निकट रहते थे। नर्सिंग होम में पंतजी ने नवजात शिशु की तरफ इशारा करते हुए कवि बच्चन से कहा था, 'देखो तो कितना शांत दिखाई दे रहा है, मानो ध्यानस्थ अमिताभ।' तभी बच्चन दंपति ने अपने पुत्र का नाम अमिताभ रख दिया था।जिसका अर्थ है, "ऐसा प्रकाश जो कभी नहीं बुझेगा" । यद्यपि इनका अंतिम नाम श्रीवास्तव था फिर भी इनके पिता ने इस उपनाम को अपने कृतियों को प्रकाशित करने वाले बच्चन नाम से उद्धृत किया। यह उनका अंतिम नाम ही है जिसके साथ उन्होंने फिल्मों में एवं सभी सार्वजनिक प्रयोजनों के लिए उपयोग किया। अब यह उनके परिवार के समस्त सदस्यों का उपनाम बन गया है।कालांतर में माता-पिता के लिए अमिताभ सिर्फ 'अमित' रह गया और उनकी माता उन्हें मुन्ना कहकर पुकारती थीं। तेजी जी की बहन गोविंद ने अमिताभ का घरेलू नाम 'बंटी' रखा।

बच्चन ने दो बार एम. ए. की उपाधि ग्रहण की है । मास्टर ऑफ आर्ट्स (स्नातकोत्तर) इन्होंने इलाहाबाद के ज्ञान प्रबोधिनी और बॉयज़ हाई स्कूल (बीएचएस) तथा उसके बाद नैनीताल के शेरवुड कॉलेज में पढ़ाई की जहाँ कला संकाय में प्रवेश दिलाया गया। अमिताभ बाद में अध्ययन करने के लिए दिल्ली विश्वविद्यालय के किरोड़ीमल कॉलेज चले गए जहां इन्होंने विज्ञान स्नातक की उपाधी प्राप्त की। अपनी आयु के २० के दशक में बच्चन ने अभिनय में अपना कैरियर आजमाने के लिए कोलकता की एक शिपिंग फर्म बर्ड एंड कंपनी में किराया ब्रोकर की नौकरी छोड़ दी।

बच्चन ने फिल्मों में अपने कैरियर की शुरूआत ख्वाज़ा अहमद अब्बास के निर्देशन में बनी सात हिंदुस्तानी के सात कलाकारों में एक कलाकार के रूप में की, उत्पल दत्त, मधु और जलाल आगा जैसे कलाकारों के साथ अभिनय कर के। फिल्म ने वित्तीय सफ़लता प्राप्त नहीं की पर बच्चन ने अपनी पहली फिल्म के लिए राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार में सर्वश्रेष्ठ नवागंतुक का पुरस्कार जीता।इस सफल व्यावसायिक और समीक्षित फ़िल्म के बाद उनकी एक और आनंद (१९७१) नामक फ़िल्म आई जिसमें उन्होंने उस समय के लोकप्रिय कलाकार राजेश खन्ना के साथ काम किया। डॉ. भास्कर बनर्जी की भूमिका करने वाले बच्चन ने कैंसर के एक रोगी का उपचार किया जिसमें उनके पास जीवन के प्रति वेबकूफी और देश की वास्तविकता के प्रति उसके दृष्टिकोण के कारण उसे अपने प्रदर्शन के लिए सर्वश्रेष्ठ सहायक कलाकार का फिल्मफेयर पुरस्कार मिला।

१९७३ में जब प्रकाश मेहरा ने इन्हें अपनी फिल्म जंजीर (१९७३) में इंस्पेक्टर विजय खन्ना की भूमिका के रूप में अवसर दिया तो यहीं से इनके कैरियर में प्रगति का नया मोड़ आया। यह फ़िल्म इससे पूर्व के रोमांस भरे सार के प्रति कटाक्ष था जिसने अमिताभ बच्चन को एक नई भूमिका एंग्री यंगमैन में देखा जो बॉलीवुड के एक्शन हीरो बन गए थे, यही वह प्रतिष्ठा थी जिसे बाद में इन्हें अपनी फ़िल्मों में हासिल करते हुए उसका अनुसरण करना था। बॉक्स ऑफिस पर सफलता पाने वाले एक जबरदस्त अभिनेता के रूप में यह उनकी पहली फ़िल्म थी, जिसने उन्हें सर्वश्रेष्ठ पुरूष कलाकार फ़िल्मफेयर पुरस्कार के लिए मनोनीत करवाया। हृषिकेश मुखर्जी के निदेर्शन तथा बीरेश चटर्जी द्वारा लिखित नमक हराम फिल्म में विक्रम की भूमिका मिली जिसमें दोस्ती के सार को प्रदर्शित किया गया था। राजेश खन्ना और रेखा के विपरीत इनकी सहायक भूमिका में इन्हें बेहद सराहा गया और इन्हें सर्वश्रेष्ठ सहायक कलाकार का फ़िल्मफेयर पुरस्कार दिया गया।

“कभी-कभी” फिल्म ने इन्हें सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का फिल्मफेयर पुरस्कार के लिए नामित किया और बॉक्स ऑफिस पर यह एक सफल फ़िल्म थी। १९७७ में इन्होंने “अमर अकबर एन्थनी” में अपने प्रदर्शन के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का फिल्मफेयर पुरस्कार जीता। इस फ़िल्म में इन्होंने विनोद खन्ना और ऋषि कपूर के साथ एनथॉनी गॉन्सॉलनेज़ के नाम से तीसरी अग्रणी भूमिका की थी। १९७८ इनके जीवन का सर्वाधिक प्रशंसनीय वर्ष रहा और भारत में उस समय की सबसे अधिक आय अर्जित करने वाली चार फिल्मों में इन्होंने स्टार कलाकार की भूमिका निभाई।इन्होंने एक बार फिर कसमे वादे जैसी फिल्मों में अमित और शंकर तथा डॉन में अंडरवर्ल्ड गैंग और उसके हमशक्ल विजय के रूप में दोहरी भूमिका निभाई। इनके अभिनय ने इन्हें सर्वश्रेष्ठ अभिनेता के फिल्मफेयर पुरस्कार दिलवाए और इनके आलोचकों ने त्रिशूल और मुकद्दर का सिकन्दर जैसी फिल्मों में इनके अभिनय की प्रशंसा की तथा इन दोनों फिल्मों के लिए इन्हें सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का फ़िल्मफेयर पुरस्कार मिला। इस पड़ाव पर इस अप्रत्याशित दौड़ और सफलता के नाते इनके कैरियर में इन्हें फ्रेन्काइज ट्रूफो नामक निर्देशक द्वारा “वन मेन इंडस्ट्री” का नाम दिया।

१९७९ में पहली बार अमिताभ को मि० नटवरलाल नामक फिल्म के लिए अपनी सहयोगी कलाकार रेखा के साथ काम करते हुए गीत गाने के लिए अपनी आवाज का उपयोग करना पड़ा। फिल्म में उनके

प्रदर्शन के लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार पुरुष पार्शवगायक का सर्वश्रेष्ठ फिल्म पुरस्कार मिला। १९७९ में इन्हें काला पत्थर (१९७९) में सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार दिया गया और इसके बाद १९८० में राजखोसला द्वारा निर्देशित फिल्म दोस्ताना में दोबारा नामित किया गया जिसमें इनके सह कलाकार शत्रुघन सिन्हां और जीनत अमान थीं। दोस्ताना वर्ष १९८० की शीर्ष फिल्म साबित हुई । १९८१ में इन्होंने यश चोपड़ा की नाटकीयता फिल्म सिलसिला में काम किया, जिसमें इनकी सह कलाकार के रूप में इनकी पत्नी जया और अफ़वाहों में इनकी प्रेमिका रेखा थीं । इस युग की दूसरी फिल्मों में राम बलराम (१९८०), शान (१९८०), लावारिस (१९८१) और शक्ति (१९८२) जैसी फिल्में शामिल थीं, जिन्होंने दिलीप कुमार जैसे अभिनेता से इनकी तुलना की जाने लगी थी ।

१९८२ में कुली फिल्म में बच्चन ने अपने सह कलाकार पुनीत इस्सर के साथ एक फाइट की शूटिंग के दौरान अपनी आंतों को लगभग घायल कर लिया था । बच्चन ने इस फिल्म में स्टंट अपनी मर्जी से करने की छूट ले ली थी जिसके एक सीन में इन्हें मेज पर गिरना था और उसके बाद जमीन पर गिरना था। हालांकि जैसे ही ये मेज की ओर कूदे तब मेज का कोना इनके पेट से टकराया जिससे इनके आंतों को चोट पहुंची और इनके शरीर से काफी खून बह निकला था । इन्हें जहाज से फोरन स्पलेनक्टोमी के उपचार हेतु अस्पताल ले जाया गया और वहां ये कई महीनों तक अस्पताल में भर्ती रहे और कई बार मौत के मुंह में जाते जाते बचे ।

बाद में ये मियासथीनिया ग्रेविस में उलझ गए जो या कुली में दुर्घटना के चलते या तो भारीमात्रा में दवाई लेने से हुआ या इन्हें जो बाहर से अतिरिक्त रक्त दिया गया था इसके कारण हुआ। उनकी बीमारी ने उन्हें मानसिक और शारीरिक दोनों रूप से कमजोर महसूस करने पर मजबूर कर दिया और उन्होंने फिल्मों में काम करने से सदा के लिए छुट्टी लेने और राजनीति में शामिल होने का निर्णय किया ।

१९८४ में अमिताभ ने अभिनय से कुछ समय के लिए विश्राम ले लिया और अपने पुराने मित्र राजीव गांधी की सपोर्ट में राजनीति में कूद पड़े।उन्होंने इलाहाबाद लोक सभा सीट से उत्तरप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री एच.एन. बहुगुणा को इन्होंने आम चुनाव के इतिहास में (६८.२५) के मार्जिन से विजय दर्ज करते हुए चुनाव में हराया था । हालांकि इनका राजनीतिक कैरियर कुछ अवधि के लिए ही था, जिसके तीन साल बाद इन्होंने अपनी राजनीतिक अवधि को पूरा किए बिना त्याग दिया । उसके बाद वह कई समस्याओं से जुझते हुए तथा चुनौतियों का सामना करते हुए आगे बढ़ते रहे । कुछ वर्षो बाद उनकी फिल्मों में पुनःवापसी हुई ।

अमिताभ बच्चन ने १९९० की फिल्म अग्निपथ में माफिया डॉन की यादगार भूमिका के लिए राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार जीते । मोहब्बतें (२०००) फिल्म में स्क्रीन के सामने शाहरुख खान के साथ सह कलाकार के रूप में वापस लौट आए। आज भी वे अभिनय से जुड़े हुए हैं ।

अमिताभ बच्चन (Amitabh Bachchan) को बॉलिवुड के सबसे बड़े सम्मान दादा साहेब फाल्के पुरस्कार (Dadasaheb Phalke Award) के लिए चुना गया है । केंद्रीय मंत्री प्रकाश जावड़ेकर (Prakash

Javadekar) ने इस उपलब्धि पर अमिताभ बच्चन को बधाई दी है ।

दादा साहब फाल्के पुरस्कार भारत सरकार की ओर से दिया जाने वाला फिल्मी दुनिया का सबसे बड़ा पुरस्कार है । यह किसी व्यक्ति विशेष को भारतीय सिनेमा में उसके आजीवन योगदान के लिए दिया जाता है । इस पुरस्कार में ज्ञण लाख रुपये और स्वर्ण कमल प्रदान किया जाता है ।

साल 2018 में विनोद खन्ना को इस सम्मान से नवाजा गया था । इस बार यह सम्मान अमिताभ बच्चन को दिया जाएगा और यह टटवां दादा साहब फाल्के सम्मान होगा ।

अमिताभ ने अपने करियर में अनेक पुरस्कार जीते हैं, जिनमें दादासाहेब फाल्के पुरस्कार, तीन राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार और बारह फिल्मफ़ेयर पुरस्कार सम्मिलित हैं । उनके नाम सर्वाधिक सर्वश्रेष्ठ अभिनेता फिल्मफेयर अवार्ड का रिकार्ड है । अभिनय के अलावा बच्चन ने पार्शवगायक, फ़िल्म निर्माता, टीवी प्रस्तोता और भारतीय संसद के एक निर्वाचित सदस्य के रूप में १९८४ से १९८७ तक भूमिका निभाई है । इन्होंने प्रसिद्ध टी.वी. शो “कौन बनेगा करोड़पति” में होस्ट की भूमिका निभाई थी यह भूमिका, और यह अभी भी जारी है । यह टीवी शो बेहद ही चर्चित तथा सफल है ।

बच्चन पोलियो उन्मूलन अभियान के बाद अब तम्बाकू निषेध परियोजना पर काम कर रहे हैं। अमिताभ बच्चन को अप्रैल २००५ में एच.आई.वी. एड्स और पोलियो उन्मूलन अभियान के लिए यूनिसेफ के सद्भावना राजदूत नियुक्त किया गया था ।

३ जून, १९७३ को इन्होंने बंगाली संस्कार के अनुसार अभिनेत्री जया भादुड़ी से विवाह कर लिया । इनकी दो सन्तानें हैं, श्वेता नंदा और अभिषेक बच्चन, जो एक अभिनेता भी हैं और जिनका विवाह ऐश्वर्या राय से हुआ है।आज अमिताभ बच्चन भारत के १० वें सबसे धनी व्यक्ति हैं ।

इस प्रकार अमिताभ बच्चन कायस्थ समाज के वर्तमान के सबसे चमकीले सीतारे हैं । इस कायस्थ समाज के महामानवों उनके जन्म दिन (११ अक्टूबर) ढेर सारी शुभकामना तथा बधाई !

हार्दिक बधाई

श्री दिनेश कुमार लाल ज्यू लोक सेवा आयोग द्वारा चयनित भई विमा समितिको निर्देशक पदमा पदोन्नति हुनु भएकोमा हार्दिक बधाई तथा सफल कार्यकालको शुभकामना

LONG LASTING RELATIONSHIPS

Er. Shiv Bhushan Lal

"Relationships cannot be understood by the language of money ..because some investments may never give profit but they sure make us rich."

Relationships are the way in which two or more people are connected, by blood, by marriage, by work, by intimacy, by interests, or by friendship. I recently came across this very imposing image of a whole family sitting around the dining table, eating but all with their smart phones and tabs in hand. They weren't talking with each other but indulged in the cybernetic activities. With the fast advent of technology, our social relationships have changed from real to virtual one. We are losing the very essence that makes us human. The human touch. Earlier networking meant our family, friends, colleagues and social ties whereas now it has shifted to Facebook, Instagram and Twitters. We are constantly attached to our phones, checking it after every alert tone. Technology has had deepest impact on our relationships. The nearest interactions we have is with our family, we need to care for it and nurture it to keep it blooming.

Our focus has shifted from our ties with people to ties with the phone. Our society has become more individualistic, communications which is the very essence of any relationship is lost. We are becoming isolated, posing a threat to our closeness with our troupe. Nowadays, relationships are temporarily built, less meaningful and more distracting. All our timelines passes through different types of people close to us. Our parents who love us selflessly, being there in success and failures, thick and thin, friends to enjoy good and bad times with, spouse to love and care for, and the most important relationship is with our self.

Every relationship that an individual is bound to deserves affection, trust, respect and gratitude, be it with family, friends or social circle. If our ego comes in our way, the feeling of entitlement and expectations take over and ruins the very essence of any relationship. As long as we are sharing love and commitment we give our relationship a chance to grow.Having a good relationship with everyone is important. It keeps us grounded, in touch with reality, making us aware of our duty towards the other person. It makes us committed, builds our moral character, and helps gain trust.

It provides us the ability to differentiate between rights and wrong, gives understanding our cultural values and norms within which society exists and enhances our relationship skills. It helps develop and cultivate virtue, become humble and dependable. Our social relationships are the foundation of the world we live in. Peace and happiness are essential for co-existence of any kind of relationships.

Even in professional life, a successful career means building positive relationship with our seniors, subordinates and colleagues. Relationships at each and every place requires lending a listening ear in order to communicate effectively, leading to success of both personal and professional lives. All relationships are dynamic, changing with time and place so it is important to respect each other's decisions and opinions. Spend quality time, acknowledging and celebrating each person and preserving good communication needs to be done regularly in order to sustain healthy relationship and create strong bonding. Without our social relationships, life becomes futile.

"Do what you did in the beginning of a relationship and there won't be an end." - Unknown

तुम हो न संग मेरे ?

पैबंद लगे इन सपनों में
एक प्रश्न जो चुभता रहता है

तुम हो न संग मेरे ?

कई बार तुम्हें जब टोका है
मुझसे मिलने से राका है
तब तब दिल ने यह पूछा है

तुम हो न संग मेरे ?

जब बिना दूध की चाय मिले
बस नाम की थोडी आय मिले
फिर भी मैं तुमसे पूछुंगा

तुम हो न संग मेरे ?

रजनीश कर्ण

UNDERSTANDING OUR UNIVERSE

Vatsaladitya Das
Class 7 | Shree Adarsha Secondary School
Birganj, Parsa (Nepal)

Introduction:

Universe is a huge place that holds everything that exists in the space. Simply, the universe can be defined as a collection of different types of stars, planets, asteroids, comets, gases, tiny particles of broken rocks, etc. It is a home of infinite number of both living beings and non-living things. This universe contains various things inside it. Some are productive and some are destructive. In this article we will discuss about some of the things contained by the universe.

The Universe:

The universe is of great importance to everyone and everything that exists. The universe is so big that till date no one has been able to completely discover it. Some say that the universe is endless and limitless and some suggest that there is an end of the universe but it is so far away that it will take billions of years to discover it actually even when we travel at a speed twice as fast as the speed of light. All the things that are in the universe came into the existence because of some special parts of the universe. But, if the things in the universe are made with the help of those special parts of the universe then how were they made? How did the universe create them for the first time? The combined form of these questions is that how the universe was created?

There is a theory that is quite famous in the world which is known as "The Big Bang Theory". According to this theory, at the beginning of everything the universe was of the size of a proton. Suddenly, it exploded and huge amount of matter and energy was exerted by it into the space. That was the time when the universe started to expand. Enormous amount of gaseous substance, energy and matter was created in that explosion. Slowly, due to mass of those substances and their gravitational force, all the matter started to get combined with each other. Gradually, with the combination of huge amount of matter and energy, stars were created. These stars, due to gravity, started rotating in a circular path. With the collection of huge number of stars, galaxies stared to form. The left over matter that did not combine in the stars started getting combined and formed the planets, asteroids, comets, etc. The left over tiny fragments of matter roamed freely in space in the form of gas and dust. The planets and the asteroids stared to revolve around stars forming solar systems accept some who were travelling freely

in the space. The solar systems along with some other lonely stars, started to revolve around each other forming huge and massive bodies known as galaxy. Some stars were left alone in the gathering and are travelling freely in the space. After a lot of time, the universe that we see came into existence. All this creation took 13.6 billion years. Though no theory has been able to exactly prove that how the universe was created, The Big Bang Theory is the most famous one to explain the creation of the universe.

The universe has a lot of things inside it. Some of them are beautiful and safe and some are dangerous and tricky. It has things that have an explanation like planets, stars, asteroids, etc. and it even possesses things that don't have a proper explanation like black holes, energy, gravity, dark matter, etc. Discovering the universe is like walking in a large dark room with just a burning candle as a source of light. There can be anything surprising in the universe. Those things can be beyond our imagination and the known laws of nature.

The universe has an extreme importance for everything. Due to creation of the universe both living and non-living things have been created. The universe is both a creator and a terminator. If it has created something, it is sure to get destroyed.

Stars:

Stars are very beautiful but dangerous creations of the universe. They hold planets in their orbits and provide them with pure energy. Stars maintain the universe by not letting planets, asteroids, comets, and other things from flying here and there. They are the heart of solar systems. They are burning balls. They are made up of gases such as hydrogen, helium, etc. They possess enormous amount of energy and heat. There are many types of stars, each having their own size and colour. The yellow stars are the ones with least energy, low heat and longer life than other types of stars. The red ones possess more energy, heat and less lifespan than the yellow ones. The blue ones possess more energy, heat and less lifespan than the red ones. The white stars are said to be the ones containing the most amount of energy, heat and the least lifespan than any other type of stars. The average surface temperature of the sun, which is one of the yellow stars, is estimated to be 5500°C.

Solar Systems and Planets:

Solar systems are known as the collection of planets, satellites, asteroids, comets, etc revolving around a sun. Some solar systems consist of two suns instead of one. Such solar systems are known as Binary Solar Systems. In such solar systems, the two stars revolve in a circular path with its centre made at the middle of the distance between them both. The other planets, asteroids, comets, etc revolve around the path the other two stars revolve. Such solar systems are not generally found. The general solar systems found in the universe are those having only one sun, as like ours. In our solar system there are 8 planets (excluding Pluto) that revolve around the sun. In other solar systems, it is possible that there may be planets more or less than ours. It is also possible that some of the solar systems may also contain life on at least one of its planets as like on Earth.

Planets are the spherical shaped balls that hold life or other things on them. Our solar system consists of 8 planets (excluding Pluto) that are Mercury, Venus, Earth, Mars, Jupiter, Saturn, Uranus and Neptune. Among these 8 planets, according to current discoveries, visible life only exists on our home planet Earth. Planets are generally made of hard substances. Some are made of rocks & soils, some of ice, some of molten substances, some of hard & solid carbon, some of gases and many other substances.

Black Holes:

Black holes are the mysterious parts of the universe. They possess gravitational forces so high that even light, the fastest travelling natural thing in the universe, can't escape it. It is a destructive creation of the universe that helps it by not letting it get over populated. It is a mysterious ditch in the universe made of something still not completely known by us. It is made for consuming everything. With every feast, its size gets larger. Its consuming powers are so high that it can eat a star thousand times massive than itself. According to some famous theories about the creation of black holes, they are created when massive stars, due to lack of fuel, high mass and high gravity collide on and in themselves. Due to this collision high amount of matter and energy is compressed in a single point which gives birth to a black hole. A big and massive star creates a powerful black hole while small stars cannot result in a black hole after death. According to some theories, black holes are made of dark matter but it is not proved yet. Those theories that explain the creations of the black holes are also not proved yet. Black holes, due to their mysterious appearance and dark colour, are nearly impossible to detect in the dark space. Still some pictures of it have been possible to capture due to the developed telescopic technologies. Black holes are of various sizes. There are small ones and the massive ones. The super massive black holes are known as 'Pulsar'. These black holes are easier to detect because they contain round belts of light made of sparkling broken particles of stars and glowing gases. Due to the light belt, the black holes can be seen easily as they look like a dark spot in a disk of light. Such black holes are found freely roaming in the space. Many of the galaxies also possess these black holes in their centre. One such black hole named 'Sagittarian A' is situated in the centre of our own galaxy.

Dark Matter:

The universe has a mysterious energy which has not been fairly explained by the scientist yet. That mysterious energy is known as "Dark Matter". The presence of dark matter has not been completely proved yet. Dark matter is a part of our universe that is very hard to detect. They are transparent matter and so light passes through it making it much difficult to detect even in places having light. According to some scientists, this dark matter has a very important role in this universe. Scientists believe that the dark matter is one of the main causes of the formation of the very first star. When the universe was created it had a lot of gas but it was not enough dense and weighted to collapse and create a star. So, there was a need of another substance that can add some extra weight and density to the gases and form the very first star. Dark matter was the perfect solution for this problem. Due to the dark matter our universe became as it is now. Dark matter helped the universe to make it a better place and is still helping it to hold everything in the right place in the form of gravitational force. Since everything

has the composition of dark matter, so everything has gravitational force as well. Some have less while others have more. The objects that are small in size have less dark matter and thus, less gravitational force while the objects that are larger in size have more dark matter and thus, more gravitational force. According to various theories, dark matter, in the form of negative energy, helps to balance the amount of positive energy in the universe and stops the overflow of the positive energy which saves the universe from getting disturbed and damaged. According to some other theories, dark matter works as a terminating agent. The dark matter, in the form of black holes, ends the overgrowth of matter in the universe by eating or sucking them. But still no theory has strong proof of the existence of dark matter.

In this way, we see that our universe is an amazing thing made by the nature. There are trillions of things not even discovered in the universe but still mankind is trying its best to discover them. We are privileged to live on our earth, which is one of the important parts of the universe. Thanks to the creator of the universe.

मोवाईल सिमप्रयोग सम्वन्धमा नेपाल दूरसञ्चार प्राधिकरणको

अत्यन्त जरुरी सूचना

नेपाल सरकारले विद्युतिय प्रविधिमार्फत जनतालाई सरकारी सेवा प्रवाह गर्ने उद्देश्यले नागरीक एप्स (Citizen Apps) तयार गरी लागु गर्न गई रहेको छ । उपभोक्ताहरूले प्रयोग गर्ने मोवाईल नम्बरलाई नागरीकको पहिचानको माध्यम बनाउदा सहज र सरल समेत हुने भएकोले उपभोक्ताको मोवाईल नम्बर नै सरकारी नागरीक एप्स (Citizen Apps) संग लिंक गराउने उद्देश्य रहेको छ । यसको लागि सम्पुर्ण उपभोक्ताहरूले आफ्नो नाममा दर्ता भएको सिम मात्र प्रयोग गर्ने र यदी अन्य कसैको नामको सिम प्रयोग गर्नु भएको भए आफ्नो नाममा रजिष्ट्रेशन गरेर मात्र प्रयोग गर्नु हुन सम्वन्धित सवैको जानकारीको लागि सूचना प्रकाशित गरिएको छ ।

नेपाल दूरसञ्चार प्राधिकरण

श्रीकुञ्ज, कमलादी, काठमाडौं

फ्याक्स ९७७-१-४२५५२५०

इमेल : ntra@nta.gov.np
info@nta.gov.np

THE ONLY CHILD

Awanti Prakash
Class: 10, Euro School, Hattigauda
Daughter of: Om PrakashLal Das
and Prakriti Prakash

Being the only child is very advantageous. You get all the care and love of both your parents. Besides getting all your needs taken care of, your wishes are fulfilled immediately without a second thought. You are treated like a Princess! I was one of them; an only child. My family was just my dad, my mom and me. I did as I pleased, I got all their attention. But there was something missing -- companionship. All of my friends have siblings and a lot of humorous incidents to relate about them. But I didn't have anyone, so no amusing incidents either. Whenever we visited an orphanage, I always wanted to take one of those children home. I would tell my mom and ask her if we could adopt one of those small little babies who had no parents. She would just smile and say, "We will visit them again with some sweets. As time went by, I got used to the loneliness and actually enjoyed being the only child. However, there were people who would say, "You should tell your parents to get a brother for you." I would just smile awkwardly because I was happy with my life of freedom. No one to fight or argue with over toys, books or ownership, while most of my friends were always complaining about how their siblings spoilt their books or misplaced their favorite shirt.

Last year, this one incident changed my life. One day my mom fell ill. When I asked her about it, she said that it was one of the usual virus infections, but it went on for days. When she saw how worried I was, she said she was going to have a baby! I was so excited, but at the same time couldn't believe the good news. I was very impatient as each day came and went. During this period of waiting I suddenly realized that... I wouldn't be called "the only child". I became confused as to whether I wanted a sibling or not. I had mixed feelings. On one hand it could be exciting to see a baby sister or a brother, and on the other hand, I had to share my parents. A question haunted me: Would they love me or the baby more? I would have to share my toys, books and favorite things too. My neighbors, friends, teachers and relatives kept asking whether I wanted a sister or a brother and I asked myself, "Do I have a choice?" Some relatives hinted that it could be a boy. "Don't worry you'll have a boy," they would chorus. That was when I decided what... I wanted a sister!

Soon the countdown started and the time came for mom to go to the hospital. The next day saw us all in the hospital's waiting room. I was beside myself, hoping that my wish would be

granted. At around 6:45 pm, my dad called me and took me with him to the labor room. Pushing the door open, I saw a nurse carrying a little baby. My eyes widened with joy. Another nurse said, “Congratulations you have a baby girl.” It was a GIRL!!! I jumped with happiness. My life changed within a second. It was the last minute of being a “single child”. I am no more alone now. I have forgotten how it was to be a single child, or the only child. Now she gets all the attention because she is the youngest one. My parents devote their time to her, my relatives always keep asking about her, everyone exclaims over her, “Aww, how nice is she!” Well, I think it’s her time that she should be treated like a little Princess. My way of life has changed. But this new arrival has had a good influence on my way of living. I am independent, responsible, less careless, thoughtful and loving. My little sister has taught me things I would never have learnt as a single child. I give her attention, affection and appreciation, and I have learnt to give affection truly to my parents, relatives and friends too. I have learnt to appreciate life with all its blessings and stopped taking things for granted. Now I am happy, carefree and fun loving. Now that my baby sister is my responsibility and I have become an older sister, my life has changed for the good. I feel no jealousy, envy or selfishness. ‘23rd October, 2018’ I will never forget that incredible day!

सम्बन्धित सरकारी तथा अन्य निकायहरूलाई (बिद्युत, खानेपानी, टेलिफोन तथा ढल निकास) सार्बजनिक सूचना

- सडकलाई अनाधिकृत रुपमा आफ्नोनिजी कार्यक्क्रमको लागि प्रयोग नगर्नुहोस् ।
- आफ्नो नियमित तथा आकस्मिक कार्यक्रम लागुगर्दासडक संग सम्बन्धित निकायको स्वीकृति प्राप्त गरि मात्र सडक सिमा भित्र काम गर्नुहोस् ।
- सम्बन्धित निकायहरुले आफ्नो कार्य सम्पादन गर्दा सकेसम्म समन्वयात्मक ढंगले काम गर्नुहोस्
- सडकलाई प्रयोग गरिसकेपछि लथालिंग अवस्थामा त्यतिकै नछोड्नु होस् ।
- सकेसम्म एकपटक एउटा कार्यको लागि सडक भत्काइसकेपछि फेरी सोहि कार्यको लागि सोहि सडक नभत्काउनुहोस् ।
- खानेपानी तथा ढल निकास गर्दा सडकलाई असर नपार्ने गरि कार्य सम्पादन गर्नुहोस् ।
- सडकलाई भत्काउने काम सकेसम्म कम सवारी चाप भएको समयमा मात्र गर्नुहोस् ।

डिभिजन प्रमुख,
डिभिजन सडक कार्यालय
अछाम

WAR AND PEACE

Selina Prachi

When wars and destruction totally cease,

In our world of god there shall be peace.
People must learn to get along,
Not blame others but themselves for being wrong.
They fight for control, fight for land,
They fight for superiority, fight for position of grand

But Some just need a helping hand.

How funny is it to see the selfishness of our community

Who are on the verge of doubting thier own sanity
We must get rid ourselves of this vanity,
And embrace peace, through humanity.

Wars make children so much tougher,
We laugh away on the fact that thier innocence have to suffer.
We should fight for peace instead,
Otherwise watch the worst and be prepared,

Gandhi, Martin and millions lived and died for peace,

The respect we have given them only through their showpiece,

Love more than war is better,

But it seems they remain hidden in words for now and latter.

THE 'CORRECT' WAY TO COLONISE SOLAR SYSTEMS

Prashant Karn
IOE pulchowk (2076)

Planets seem like the obvious places to live on, but they're not ideal. It's like living on the outside surface of houses. Not space efficient at all; not to mention the problems with keeping the temperature right, or the wind and the rain out.

That's what planets are like. Turning Mars into a brand new earth by terraforming its surface and atmosphere sounds awesome in theory, but it is an incredibly big hassle and frankly just silly in reality. Mars can't hold on to a thick atmosphere like earth, so it'll need to be constantly replenished, and from who knows where. And if you think about it, the scale of it is absolutely overkill! Humans don't need an entire planet sized atmosphere to survive. It is infinitely easier to build entire air-tight cities that are self contained and full of breathable air, supporting as much population of people as Mars will ever have.

That is where the gears start turning in the heads of futurists like myself. If we're going to have to do with self contained air tight cities anyway, why even put them on Mars? We live inside our houses, not on the outside walls, and that has allowed us to build houses in the hottest deserts and the coldest tundras on Earth. These self contained cities could be anywhere, as long as we have a power source to keep the inside sustainable for people to live in. It could be on jupiter for all we know. Or on the moons of Neptune. It could be inside the asteroids in the asteroid belt, creating artificial gravity through controlled rotation. If you get a bucket, fill it with water, and then start spinning holding it, even when it's horizontal, the water doesn't spill. There seems to be a force forcing the water to stick to the bucket. Now it's not a force, it's just inertia, but as long as it acts like a force it is good enough for us to use as gravity. One can imagine large rotating cylindrical habitats, with people living on the inside surface. And not just people, we could have houses and fields and farms.

You can look up and see cows crazing on the ceiling of this giant structure. We could have lives as comfortable and typical as on Earth, with forests and plants and animals, and even rivers and lakes and seas in large enough habitats. It only needs to be filled with a relatively small amount of air, and controlling the temperature and climate inside becomes trivially easy. There can be a bright light in there as a replacement for the sun, which cycles through light and dark

just like day and night. There couldn't be a more perfect solution for increasing the living space for future humans. These habitats are called O'Neill Cylinders, and they are revolutionary. We probably aren't that far off from making the first one of these really soon, perhaps to orbit around the Earth, holding the permanent homes of anything up to a hundred thousand people. And then there is really no limit to how many of these we can build.

So here is the plan. Instead of colonising planets by turning them like Earth, we extract the materials from them to build these habitats. It might be sad to see a majestic planet like Mars turned to nothingness… a land once huge and promising, perhaps it could have supported another few billion people to help with population control… but that number is just nothing when you compare it the population that will fit into all of those habitats made from Mars-material - which is at least a Quintillion individual people. Can't wrap your mind around it? Think about it like this: Right now the estimation is that Earth will have a population of ten billion in at least at some point in the near future, and that will be towards the peak of over-population with the current standards. Now imagine a THOUSAND such Earths orbiting the sun, with the same overpopulating people in all of them, in a ring of Earths around the sun where the Earth orbits now. That will be an immense ring, with thousands of continents, millions of countries, all with their own governments and landmarks and Google-sized companies threatening privacy everywhere. There will be youtube channels with planet sized fanbases, and at least one religion with over a hundred billion followers. But this is not enough… now you have to imagine a THOUSAND such rings of Earths, orbiting the sun in a gigantic carpet of planets; multiply all those numbers by a thousand. But we're still not there… it is another HUNDRED of these carpets, now with billions of continents and biomes, ecosystems and animal species so diverse they are indistinguishable from alien species, not to mention the diversity of cultures in humanity itself. That is how many people will fit in a relatively tiny cloud of orbiting habitats, small enough to share a single latency free internet, made from the insides of only ONE planet. And Mars isn't even that big of a planet… and we still have all the asteroids and moons and dwarf planets to work with. Perhaps Earth will be spared for cultural reasons, but it has still got more material than any other rocky bodies in the solar system. Not to mention the new idea called 'Star-lifting' which is the process of extracting materials from the Sun itself, and the Sun contains more material than any planet can ever contain. This is a scale on a level we can't even imagine. Even if we conquer the entire Milky Way galaxy, every one of its habitable planets in each of the hundred billion stars in the traditional way, the population won't get anywhere near the number of people we can fit in this tiny space around the sun.

Clearly the classic sci fi shows like Star Wars and Star Trek got it all wrong! Going off in thousand-year multiple generation trips to completely new star systems just because we ran out of livable planets here just sounds incredibly silly now. Sure there will be travellers and colonisers to other systems, but we aren't running out of space here any time soon. And then in time we'll have the entire galaxy colonised in this way, with such an unfathomably large number of individuals, humanity can't even be called humanity any more… as humans will have inevitably split into countless individual species that look nothing like each other.

Going all the way back, the plan is, first, we disassemble Mercury with robots and automation. Could take a thousand years, but in the time scales we are discussing, a thousand years isn't much for a start. A thousand years ago, we had castles and kingdoms. Even before we send off self replicating robots to do that task, we will have built very large scale infrastructure right here on Earth, such as orbital rings, which are solid rings going all the way round the earth, connecting cities and making space flight trivially easy. And we could have launch loops, which are similar structures, or even space elevators, the highest things connected to the ground we'll ever build, dwarfing the current tallest building by a factor of fifty thousand. We will certainly have at least a few rotating habitats already orbiting the Earth, or even other planets, and permanent manned bases on Mars, the moons of Jupiter, or even Titan, the largest moon of Saturn. As well as floating balloon bases in the atmosphere of venus.This looks quite far away, but it will certainly be less than a few centuries from now, even less if certain technologies like fusion power are successfully developed. We will certainly see all the automation we need for this task well within our lifetimes, considering 'lifetimes' don't become indefinite within some of our lifetimes with advancement in medical technology. Also considering artificial intelligence doesn't go out of hand and turn humanity into a dystopian mess just because some greedy company wanted an AI to build more paper-clips without instructing it to not turn people into paperclips, or dogs… or every other possible thing impossible to define by definition. Or the other extreme… humanity gets everything it wants inside virtual worlds in computers, and eventually there are no people left, just simulations of humans. Or a nuclear disaster, or a genetic one… or even a political one. Perhaps a new type of particle will be discovered in the particle accelerators around the world, called a strangelet, which theoretically could grow, turning the surrounding particles into strangelets, until the entire Earth has been consumed and turned into a strangelet, in form of a single tiny glowing quark star. Considering we don't already see thousands of stars around the galaxy which already have clouds of rotating habitats with advanced Alien civilisations in them, perhaps the truth is that we never really get to that point for all the listed and countless more reasons…

It is hard to tell what direction humanity will take. But the job of futurists and writers is to assume it goes well up to that point, and then think about the incredible scale our civilisation will achieve in the far future, and the incredible structures they will make. The McKendree Cylinder is a rotating habitat so huge, just one can contain the entire population of the Earth as it is right now. You won't be seeing your neighbours when you look up from your home in this cylinder, you'll just see… clouds. And the sky, and birds and the weather. Then there are ring-worlds, a rotating habitat the size of Earth's orbit around the sun, probably even bigger, using the sun itself as the energy source. There are shell-worlds, just planets but with thousands of layers of living space held up by giant pillars, or artificial multilayered hollow planets around black holes. One of the most interesting of these structures conceived by futurists is a rotating cylinder with the usual radius, but so unimaginably long it wraps around the sun and goes around the solar system countless times, creating an almost infinitely long tube of civilisation. Or perhaps a huge mesh of interconnected cylinders spanning the far reaches of the solar system. Or a huge mesh of those cylinders completely full of computers so powerful, they are capable of simulating more human minds than could possibly physically exist in the Universe, or even

more than the number of individual atoms in the Universe. There is no limit to the imagination of what a civilisation like ours could achieve in the far future. Take this article as an introduction to the tiniest of a percent of what is covered in the countless science fiction and futurism works, from Isaac Asimov's to Isaac Arthur's.

रेत, लहर, पत्थर प्रेम

जूही, विशाखापत्तनम

है गीली रेत पर फैले हुए, भींगे हुए दो बदन।
पुकारे लहर सागर की, हवा भी चल रही सन्-सन्।
है थोड़ी बूंदाबांदी सी, हिलोरें ले रहें हैं मन,
रहा चल पत्थरों की ओट में उन्मुक्त प्रेम मिलन॥

है उपर आसमान अनंत, नीचे मरुभूमि सी जमीन,
क्षितिज भी मुस्कुरा कर दूर से बरसाती नेह असीम।
जलधि की श्वेत लहरों संग सजी है दृश्य ये रंगीन,
कनीज के प्यार में खोया हुआ है एक शहजाद सलीम।

तरंग का वक्रगति से शिला पर टकराके होता टूटन।
लहर की सुनके गर्जन सिमट कर होता है आलिंगन।
है थोड़ी बूंदाबांदी सी हिलोरें ले रहे हैं मन।
रहा चल पत्थरों की ओट में उन्मुक्त प्रेम मिलन॥

न कोई आस एक दूजे से, ना कोई शर्त, ना बंधन,
है दोनों की जुदा राहें, मगर अब एक है धड़कन।
इसे साहित्य कह लो, प्रीय या आध्यात्म या दर्शन,
कहो एहसास या ईमान या फिर भाव का संगम।

रहे वो पास हो दूर, नूर हो इश्क का कायम।
जले ज्योति मुहब्बत की, दिलों में, जां में आजीवन।
है थोड़ी बूंदाबांदी सी हिलोरें ले रहे हैं मन।
रहा चल पत्थरों की ओट में उन्मुक्त प्रेम मिलन॥

राजयोग (अष्टांयोग) कुण्डलीजागरण तथा अष्टसिद्धी साधना

देवेन्द्र कुमार चौधरी
तेलवाली अनुसन्धान कार्यक्रम
नवलपुर

हिन्दूहरुको धार्मिक ग्रन्थ, चार बेद, गीता, महाभारत, अठार पुराण, रामायण, महाभारत आदि मात्रको अध्ययनले मात्र धर्मको सम्पूर्ण ज्ञान हुदैन । योग बसिष्ठ पुस्तक जुन राम र बसिष्ठको सम्वाद हो । यसको ज्ञान बसिष्ठले रामबाहेक लक्ष्मण तथा अन्य भाईहरुलाई दिनुभएन । यसमा योग साधना तथा भगवत प्राप्तीको बारेमा बर्णन गरिएको छ । धर्मग्रन्थ ऐना हो जसले मान्छको स्वाभाव देखाउंछ । जिवमा ४ दोष हुन्छ, भ्रम: बस्तुलाई ठिकरुपले पहिचान नगर्ने, प्रमाद: अरुको दोषमात्र देख्ने, आफनो दोष नदेख्ने । विप्रलिप्सा: गल्ति गरेमा दोषलाई छुपाउने, आफु गल्ति नगरेको भन्ने, जुन विषयमा अनुभव छैन त्यसमा अनुभवी मान्ने । भगवानसित अनन्त प्रेम र विश्वास भएपछि अन्नत जन्मको संचित पाप नष्ट भइ भगवत प्राप्ति हुन्छ । कर्मयोगी संसारलाई अंग मानेर कर्म गर्छ । कर्मयागी लाभ, हानि, मान अपमान, अनुकुलता, प्रतिकुलता, सुख, दुखबाट टाढा रहन्छ, त्यसैले उसको अन्त:करणमा राग, द्वेस, हर्ष, शोक, दुख आदि विकार हुदैन जसले गर्दा उ कर्म बन्धनमा फस्दैन । कर्मयोगीको कर्मको प्रवाह संसारतिर रहन्छ । त्यसैले मन शुद्ध रहन्छ । कर्मयागी कर्ममा बांधिदैन, आफनो लागि कर्म गर्दैन त्यसैले उसको मन साफा रहन्छ, उ कर्मफलको भोक्ता बन्दैन । त्यसैले उसको कर्म समाप्त भई हान्छ र कर्म बन्धनबाट मुक्त हुन्छ । साधारण मानिस आशक्ति, ममता, इच्छा, राखेर कर्म गर्छ त्यसैल त्यसको कर्मको प्रवाह आफनोतिर हुनछ । साधारण मानिस कर्मफल भोग गर्छ त्यसैले उ माया, मोह, इर्सा, द्वेश, लाभ, हानि, मान, सम्मान सित जोडिन्छ र कर्म बन्धनमा बांधिन्छ ।

योगी तथा सिद्ध महात्माहरुले साधनाको आठ खुडकिला पार गरेर सिद्धी प्राप्त गर्नुका साथै संसारका सम्पूर्ण शक्तिको अनुभव गर्न सक्छ ।

१. यम २. नियम ३. आसन ४. प्राणायाम ५. प्रतीहार ६. धारण ७. ध्यान ८. समाधि

१. यम : यसमा साधकले आफुलाई साधना योग्य बनाउन १३ वटा सत्यहरु व्यवहारमा अपनाउनु पर्दछ । जस्तै सधै सत्य बोल्नु पर्दछ । ९त्वगतजागलिभकक० सबै जिबहरु मानिस, जनावर, धनि, गरिब, ठूला, साना, बलियो, कमजोर आदि यो श्रीष्टीमा सबै जिबहरु बराबर छन भनि सबै सित समभाव

भत्रगबष्तिथ राख्ने, घमण्ड नगर्ने, विचारवान सहि विचार राख्ने, नम्र व्यवहार राख्ने ञ्यमभकतथ, अहिंसा अरुलाई दुख नदिने लयलष्लवगचथ, आत्म नियन्त्रण (Self control) आफना ५ कर्मेन्द्रिय, ५ ज्ञानेन्द्रिय मन, बचन, कर्ममा नियन्त्रण राख्ने, प्राणले मनलाई, मनले, बिचारलाई, बिचारले इच्छा (चाहनालाई) सन्चालन गर्छ र चाहनाले जिबात्मालाई कर्म गर्न प्रेरित गर्छ । कर्म गर्नमा जिबात्मा स्वतन्त्र हुन्छ । जिबात्माले गरेको राम्रा र नराम्रा कर्मको उपभोग आफै गर्छ तर परमात्माले उपभोग नगरी सांक्षी भएर हेर्छन । धर्मको आचरण गर्ने, मुटुलाई बलियो बनाउने, अती दुख सहन सक्ने, गरिब दुखि माथि दया गर्ने मानबिय गुणले युक्त, दुख तथा सुखमा समभाव राख्ने, आफुलाई दुख पर्दा दुखि नहनु, आफुलाई चाहेको बस्तु प्राप्त हुंदा अती खुसी नहुने । मान गरेमा, नगरेमा उतेजित नुहने, अपमान, गाली गरे पनि सहन गर्न सक्ने, इर्सा तथा द्वेस, घमण्ड नगर्ने, गरिब, दुखिलाई आफुसक्ने जती सहयोग गर्ने । अरुले गल्ती गर्दा क्षमा दिने आदि १३ वटा सत्य हुन जसलाई साधकले आफनो जीवनमा अपनाउनु पर्दछ ।

२. नियम : अहिंसा अरुलाई दुख नदिने (noninjury) योगीले अहिंसा भावाना राख्नाले उसको नजिक रहेका पशु, चरामा पनि अहंसा भावना हुन्छ । बाघ, हरिण, सर्प, मानिस साथमा बस्छ र कसैले अरुलाई मार्छ भन्ने चिन्ता हुदैन । अहिंसाले यो श्रीष्टीका सबै जिब एकहौ एक आपसमा मिलेर बस्नुपर्छ भने एकताका भावना प्राप्त हुन्छ । अहिंसाको भावना भनेको आफनो जिबिको पार्जनको लागि चाहिने सम्पती भन्दा बढी भएको सम्पती गरिब, दुखि, असहाय, कमजोर, बिरामीको उपचारमा लगाउने हो ।

अपरिग्रह : कुनै बस्तु प्राप्त गर्न लोग नगर्ने, आफुले आर्जन गर्न नसकी अरुले आर्जन गरेको सम्पती पाउने चाहनालाई लोभ भनिन्छ । लोभले कर्म गर्ने शक्तिलाई कमाजोर बनाउछ ।

ब्रम्हचर्य पालन : बिर्यको नास हुन नदिने अर्थात बिहे नगर्ने, पारिवारिक मायाजालमा नफस्ने । यसबाट विचारमा, शुद्धता, कर्ममा शुद्धता भन्ने बुझिन्छ । आफुमा भएका शक्ति बौधिक, सामाजिक, धार्मिक कार्यमा लगाउने । यसले कुनै कुरालाई गहिरो सित सोच्ने, बिचार गर्ने र बुद्धि विवेक बढाउनमा मद्दत गर्छ ।

तपस : शरिरको शुद्धता, आन्तरिक बिचारमा, मनमा, कर्ममा शुद्धता राख्ने, भगवानमा आस्था राख्ने, ब्रत राख्ने आदि ।

३. आसन : सिद्ध महात्माहरुले पद्मासनमा बसेर साधना गरी सिद्धी प्राप्त गर्छन ।

४. प्राणायाम : यो दुई सद्ध प्राण र आयामले बनेको छ यसको अर्थ प्राण बायुलाई नियन्त्रण गरेर समना ९क्गाउचभकक० गर्नु हो । प्राणबायु भनेको पुरै ब्रम्हाण्डमा भएको सम्पूण शक्ति हो । यो ताप, विद्युत, प्रकाश तथा चुम्बकको मिश्रणले बनेको हुन्छ । यसलाई दुई भागमा विभाजित गरिएको छ । भौतिक तथा मानसिक प्राण । भौतिक प्राण जसले शरिरलाई कर्म गर्न बस्न, घुम्न, हिडन बोल्न,

मद्दत गर्छ । मानसिक प्राण यसमा बुद्धि, विवेक, बिचार (thought), अहंकार (egoism), चेतना (consciousness) आउंछ । प्राण दुई किसिमको हुन्छ । मुख्य प्राण र सहायक प्राण ।

१. मुख्यप्राण : श्वास, प्रश्वास क्रिया । यसको केन्द्र बिन्दु मुटु हो । जन्म देखि मरने बेलासम्म जिब शवास लिने र छाडने गर्छन । गुरु गोरखनाथले भन्नु भएछ ।

"हंकारेण बहिरती सःकारेन बिसेती पुनः
हंसोहं सोहं जिबो जपती सर्बदा" ।

अर्थात प्रत्येक जिब हंको आबाजले श्वास छाडछन र सःको आवाजले श्वास लिन्छन, जन्म देखि मृत्युसम्म श्वास छाडने र लिने गर्छन । यसलाई अजपा गायत्री मन्त्र पनि भनिन्छ । जिब नचाहेर पनि यो मन्त्रको जाप गरी रहन्छ । श्वास लिदा ब्रम्हाण्डमा भएका सम्पूर्ण शक्तिहरु शरिर भित्र प्रवेश गर्छन तथा श्वास छाडदा शरिर भित्रका सम्पूर्ण बिकारहरु गलत बिचारहरु बाहिर निस्कन्छ । श्वास लिन सकेन भने जिबको अर्थात शरिरको मृत्यु भएको बुझिन्छ । सिद्ध योगीहरु श्वास लिदा ब्रम्हाण्डमा हुने तथा भइरहेका सम्पूर्ण प्राकृतिक घटनाहरुको बारेमा जानकारी प्राप्त गर्छन । जस्तै भुईचालो, आउने, ज्वालामुखि फुटने, बाढी पहिरो आउने आदि । ब्रम्हाण्डमा भइरहने विभिन्न घटनाहबाट आउने ध्वनि तरङ्गहरु (sound wave) लाई शुक्ष्म विश्लेषण गरी जिबजन्तुहरु चरा, मानिस, जनावरको मनको स्थिति, चाहना (खेचरी) विद्याबाट थाहा पाउनुको साथै स्वास छाडदा भइसकेको तथा हुने घटनाहरुबारे थाहा पाउछन । किनकी ॐ शब्दबाटनै सबै जिबहरुको भाषाको बिकास भएको हुन्छ ।

सहायक प्राणबायु

२. अपानबायु : यसको केन्द्रबिन्दु नाइटोको तल हुन्छ, यसले शरिरको तल्लो भागलाई क्रियासिल बनाइ शरिरका बिकार मल मुत्र, नराम्रा रगत, महिलामा मासिक धर्मका रगत, पसिना, गर्भमा रहेका बच्चालाई बाहिर निकाल्नमा मद्दत गर्छ ।

३. समानबायु : यसको केन्द्र बिन्दु नाभि हो, यसले खाएका बस्तुहरुलाई पचाउनमा मद्दत गर्छ र रसलाई शरिरको विभिन्न अंगहरुमा पुऱ्याउन मद्दत गर्छ ।

४. ब्यानबायु : यसको स्थान सम्पूर्ण शारिर हो । यसले शरिरको अंग हात, खुट्टा चलाउन, मोडन, खुम्च्याउन तथा रगतलाई विभिन्न भागमा पुऱ्याउन मद्दत गर्छ ।

५. उदानबायु : यसको केन्द्र बिन्दु घांटी हो । यसले खाना खान र पानि पिउनमा मद्दत गर्छ । यसले शुक्ष्म शरिर (microbody) लाई स्थुल शरिरबाट अलग गरेर बिभिन्न लोकमा घुम्नमा मद्दत गर्छ । (Aestral travelling) ।

६. नाग : खाना खांदा डकारको रुपमा बाहिर निस्कने बायु ।

७. कुर्म : आंखा खोल्न र बन्द गर्नमा मद्दत गर्ने बायु ।

८. कुकर : हां छी गर्नमा मद्दत गर्ने बायु,

९. देबदत : सुतेर उठेपछि जिउलाई तन्काउनमा मद्दत गर्छ ।

१०. धनन्जय : शारिर मरेपछि पेटमा रहिरहने हावा ।

प्राणायाम : यसको ३ खडकिला हुन्छ । पुरक, कुम्बहक, रेचक ।

पुरक : नाकको दांया प्वाल औलाले बन्द गरी बायां प्वालबाट फोक्सो भर्ने गरी श्वास लिने ।

कुम्बहक : श्वांसलाई केहिबेर भित्र राख्ने ।

रेचक : यसमा बांया प्वाल औलाले बन्द गरी दांया प्वालबाट श्वासलाई बाहिर फाल्ने ।

अपरे नियता हारा :, प्राणाण प्राणेषु जुहति । (गिता छठा अध्याय)

अर्थात नियमित आहार, बिहार गर्नेलेनै प्राणायामबाट फायदा लिन सक्छ । नियमित आहार बिहार भन्नाले बढि नखाने, बढि नसुत्ने, बढि काम नगर्ने भन्ने बुझिन्छ । कम खाने, बढि खाने, बढि सुत्ने, बढि काम गर्नेले प्राणायामबाट फायदा लिन सक्तैन । बढि खांदा अलस्य आउंछ । ठिक खाने, ठिक समयमा सुत्ने, ठिक समयमा काम गर्ने । काम गर्ने, खाने, सुत्ने समय तोकेर जीवन चर्या निर्धारण गर्नुपर्दछ । यसो गर्दा मन शान्त रहनको साथै मानसिक तनाब कम हुन जान्छ ।

अपाने जहबति प्राणेपाणं तथापरे ।
प्राणापाणगती रुद्ध्वा प्राणायाम परायणाः । (गिता चौथा अध्याय)

प्राणलाई प्राणमा अपान बायुलाई अपानमा शवन गर्न अर्थात रोक्नाले मन शान्त हुन्छ, यसलाई स्तम्बृत प्राणायाम भनिन्छ । यसले मन शान्त हुनको साथै मन एकाग्र हुन्छ । प्राणको स्थान हृदय (माथि) र अपानको स्थान गुदा (तल) हुन्छ । श्वास बाहिर निकाल्दा बायुको गती माथि र श्वास भित्र तान्दा बायुको गती तल हुन्छ । योगीहरु पहिने बाहिरको बायुलाई दांया नाकको प्वाल औलाले बन्द गरी बांया नाकको प्वाल (चन्द्र नाडी) बाट भित्र लिन्छ र त्यो बायु हृदयमा प्राणबायुलाई साथमा लिएर नाभिहुदैं अपान बायुमा मिल्न जान्छ । त्यसैले श्वासलाई बाहिर निकाल्दा श्वासको कार्य र भित्र तान्दा अपान बायुको कार्य हुन्छ । यसलाइ पुरक भनिन्छ । फेरि त्यो प्राणबायु र अपमान बायु दुईटैको गतिलाइ रोकिन्छ । यसमा नत श्वास बारिहर जान्छ नत भित्र आउंछ । जसलाई कुम्भक भनिन्छ । प्राण, अपान मिसिएको बायुलाई बांया नाकको प्वाल औलाले बन्द गरी दांया नाकको प्वाल (सूर्य नाडी) बाट बाहिर निकाल्छ । शरिरबाट बाहिर

निस्कने प्राणबायुलाई अपान बायुमा हवन गर्ने यसलाई रेचक भनिन्छ। यसको अनपात १:४:२ हो अर्थात श्वासालाई १ सेकेण्डमा फोक्सोमा भर्ने (पुरक) ४ सेकेण्डसम्म रोकेर राख्ने (कुम्भक) २ सेकेण्डमा शरिरबाट बाहिर फाल्ने (रेचक)। त्यसपछि यो क्रिया फेरी नाकको बांया प्वाल औलाले बन्द गरी दांया प्वालबाट पुरा श्वास लिने र बायां प्वालबाट श्वास बाहिर निकाल्ने। दुइटै नाकको प्वालबाट एकपटक श्वास लिने र फाल्ने काम भएमा एउटा प्राणयाम हुन्छ। यस प्रकार १५ देखि ३० मिनेटसम्म प्राणायाम गर्दा नारी संस्थानलाई शुद्ध पार्छ। हाम्रो ढाडभित्रको मध्य नाडिलाई शुषमना नाडि यसको बांयापटिको लाई इदा (सूर्य नाडि) जुन नाकको बांया तर बांया अण्डकोषसित सम्बन्ध राख्छ। प्राणायामबाट शारिरको बिभिन्न भागमा रगतको राम्ररी संचालन भई शरिर रोग मुक्त हुन्छ, पाचन शक्ति बढछ, जिउ स्वस्थ रहन्छ, श्वासलाई बढि समयसम्म रोकेर राख्ने क्षमतालाई बढाउछ। मनमा एकाग्रता आई मन शान्त रहन्छ। रोग विरुद्ध लडने शक्तिको विकास हुन्छ। ब्रम्हचर्य पालनमा सहयोग गर्छ। यसले उच्च रक्तचाप, पिनास तथा मानसिक रोग निको पार्नमा मद्दत गर्छ। इदा सुर्यनाडी पिंगला चन्द्रनाडीको अधिकतम प्रयोग गर्दा योगीहरु दुइटै नाकको प्वालबाट एकनासले लगातर श्वास लिन सक्छ। इदा, पिंगला र सुषुम्नासहित श्वासको विज्ञान बुझ्ने वितिकै समाधि सम्भब हुन्छ। मेडिकल साइन्सले बानिस ३ देखि ५ मिनेटसम्म श्वास लिन सकेन भने मानिसको मृत्यु हुन्छ भन्छन तर साधनाद्वारा श्वास नफेरी योगी महिनौसम्म बांच्न सक्छ। त्यसका लागि साधना, विश्वास र समर्पण चाहिन्छ।

५. प्रतिहार : संसारको सबै बस्तु प्राप्तीबाट आफनो इच्छालाई छाडने, कुनै बस्तुमा आफनो लगाब नराख्ने, किनकी बस्तु प्राप्तीबाट त्यसको सुख केही समय पछि समाप्त हुन्छ र फेरि अर्को बस्तु प्राप्त गर्न मनमा इच्छा उत्पन्न हुन्छ। यसरी मनमा एकपछि अर्को इच्छा बढदै जान्छ र बस्तु प्राप्त नभएपछि मन अशान्त रहन्छ, अर्को प्रति इर्सा, द्वेष, हिंसा उत्पन्न हुन्छ। मानिसको मर्ने बेलासम्म सम्पूर्ण इच्छाको पूर्ति हुन सक्दैन। तसर्थ मनको आन्तरिक तथा बाह्य शुद्धता कायम राख्न जरुरी हुन्छ। जुन व्यक्ति संसारमा बस्न चाहन्छ, सुख भोग गर्न चाहान्छ। धन सम्पती संग्रह गरी भोग्न चाहन्छ त्यो संसारी हो, साधक होइन जो व्यक्ति निगुण, निरंकारी तथा प्राणबायु माथि नियन्त्रण राख्छ, जो संग योगबल हुन्छ त्यो व्यक्ति योगी हो। त्यसलाई निराकार ब्रम्हको प्राप्ति हुन्छ। जिवात्मा र परमात्मा एउटै शारिररुपी रुखमा निवास गर्छन। जिवात्मा कर्म गर्न स्वतन्त्र हुन्छ, राम्रा र नराम्रा कर्म गर्न र कर्मफल भोग्न स्वतन्त्र हुन्छ र परमात्माले जिवात्माले गरेको कर्मलाई भोग नगरी द्रष्टा सांक्षी बनेर हेरीरहन्छ। कर्मयोगीलाई लाभ, हानि, मान, सम्मान, अनुकुलता, प्रतिकुलता, सुख, दुखले छुदैन त्यसैले उसको अन्तःकरण शुद्ध हुन्छ, मनमा राग, द्वेष, हर्ष, बिषाद (दुख) हुंदैन।

६. धारणा : मानिसले आफनो मनलाई नियन्त्रण गरी एकाबिचारमा केन्द्रित गर्नेलाई धारणा भनिन्छ। मनको विभिन्न अबस्थान हुन्छ। शिप्ताबस्था (wandering mind), बुढाबस्था (forgetful mind), विक्षिप्ताबस्था (distracted mind), एकाग्रता (one pointed mind), निरुधाबस्था (controlled mind) मन चन्चल हुन्छ, मन एकठाउंमा अडिरहदैन, राम्रा र नराम्रा बस्तु देखेपछि पाउने चाहना जागृत हुन्छ र त्यो बस्तु नपाएपछि मन अशान्त हुन्छ। त्यसैले योगीहरु मलाई पूर्ण नियन्त्रणमा राख्छन र शरिर बाच्नसक्ने आबश्यकता बाहेक अरु केही इच्छा उसको मनमा हुदैन। धारणले हामीलाई कुनै

कुरालाई गहिरोसित सोच्ने, बिचार गर्ने क्षमतालाई बढाउंन आत्मबल बढाउनको साथै सकारात्मक सोच्न सक्ने क्षमतालाई बढाउंछ। कुनै बस्तु वा विषयमा सकारात्मक हुन सिकाउछ।

७. ध्यान : साधकको मन एकाग्र भएपछि कुनै बस्तु भगवान राम, कृष्ण, शिब वा निराकार ब्रम्ह, अल्लाहमा ध्यान केन्द्रित गर्नमा मद्दत गर्छ। कुनै बस्तु वा विषयमा शुक्ष्म विश्लेषण गर्ने क्षमतालाई बढाउछ। सकारात्मक सोच शाक्तिलाई बढाउछ। प्रतिकुल परिस्थितिमा समस्या समाधान गर्न क्षमतालाई बढाउछ।

८. समाधि : यो योगीको साधनाको अन्तिम अबस्था हो। यो अबस्था प्राप्त गर्न निकै कठिन हुन्छ, यसलाई तुरीया अबस्था पनि भनिछ। यो अबस्था प्राप्त गर्न योगीले प्राणबायुलाई शरिरको तल्लो भागबाट तानेर माथिल्लो भाग टाउकोको सहश्रार्ध चक्रमा राख्छन। यो अबस्था प्राप्त गरेपछि शरिर अंगहरु निस्कृय हुन्छ खाली श्वास मात्र चलि रहन्छ। सर्प र बिच्छुले टोकेमा थाहा पाउदैन। यस अबस्थामा योगीले ब्रम्हाण्डमा भईरहेको बिभिन्न घटनारु, ग्रहहरुको स्थिती प्रत्यक्ष हेर्न र अनुभव गर्न सक्छ। यसले योगी त्रिकालदर्शी अर्थात भूत, बर्तमान, भविष्यतको ज्ञाता हुन्छ। श्रृष्टिको विराटरुप समुद्र, नदि, पहाड, आकाश, सम्पूर्ण जिबहरुको विकास, विनाश भइरहेको हेर्न सक्छ। यो अबस्था योगीको लागि निकै आनन्ददायी हुन्छ। पशुपन्छिको भाषा (खेचरी विद्या) को ज्ञाता हुन्छ। सबै जिबहरुको मनको कुरा बुझ्न सक्छ। साधक समभाव राख्ने हुन्छ। महिनौ योगी खाना, पानि बिना बाच्न सक्छन। बाच्न शक्ति प्रकृती सूर्य तथा हावाबाट पाउंछ। समाधि अबस्थामा जांदा योगीहरु शरिर क्षय नहुने अबस्थामा राखेर बर्षौ समाधिमा जान सक्छन। लामो सयम समाधिमा जांदा शरिर क्षय भएर जीबनै गुमेको घटना पनि पाइन्छ।

कुण्डली जागरण तथा अष्टसिद्धी साधना

देवेन्द्र कुमार चौधरी (बरिष्ठ बैज्ञानिक)

यो शरिर ५ तत्व पृथ्वी, हावा, पानि, आकास, तापको समिश्रणले बनेको हुन्छ जसलाई पञ्चभूत पनि भनिन्छ। यो ब्रम्हाण्ड पनि पांच तत्वले बनेको छ। पृथ्वी तत्वले शरिसलाई कडा बनाउंछ। हाड, मासु, पृथ्वीतत्वमा भएका पानिबाट बन्छ। यसले शरिरलाई उभिन, हिडनमा मद्दत गर्छ। छाला तत्व नशाहरुले हावामा भएका इथर तत्वले बनेको छ, जल तत्वले शारिलाई नरम बनाउंछ, आगो तत्वले खाएको बस्तु पचाउने, शरिरलाई गर्मी दिन्छ, काम गर्ने शक्ति दिन्छ, यसले डर, त्रास, माया मोह, घृणा,... सुखको अनुभव व्यक्तिले गर्छ। इच्छा, चाहना इथ्थरमा भएको पानि तत्वले उत्पन्न गर्छ। हावा तत्वले शरिरलाई मोडन, दौडन, बस्न, हात, खुट्टा, तन्काउन, तथा हिडनमा मद्दत गर्छ। मानिस आफनो बुद्धिको प्रयोग मात्र १० देखि १५ प्रतिशतसम्म गर्न बांकी शक्ति खेर गएको हुन्छ। मष्तिष्कमा भएका अधिकतम बुद्धिको प्रयोग अष्टचक्र साधनाको प्रायोगले गर्न सक्छ।

१. मुलधार चक्र : यसको स्थान गुदा र प्रजनन अंगको मध्यमा हुन्छ, यसलाई गंगा, जमुना, तथा सरस्वती पनि भनिन्छ । यसको सम्वन्ध ढाडमा भएको इदा (सूर्यनाडी), पिंगला (चन्दनाडी) सित हुन्छ ।... मुलाधार चक्र बलियो भएको व्यक्ति कर्मठ सन्तोषि तथा दुख परेको बेला अरुलाई सक्दो सहयोग गर्ने हुन्छ । लगातार प्राणायाम र साधना गर्नाले मानिसमा काम गर्ने अठोट, दृढ शाक्तिको हुन्छ । मानिसमा सकारात्मक सोचको विकास हुन्छ ।

२. स्वाधिष्ठान चक्र : यसको स्थान लिभर तथा भुडी नजिक हुन्छ । यो शाक्तिको भण्डार हो । प्राणायामबाट शक्ति माथि जान्छ, मानिस आशाबादी हुन्छ, जहां पनि रमाईलो गर्ने जीवन .... सयम हुन्छ ।

३. मनिपुरा चक्र : यसको स्थान नाइटो नजिक हुन्छ । पेटमा बच्चा हुंदा यहिंबाट आमाको शरिरबाट खाना पाउंछ । यसलाई शरिरको मध्यभाग ब्रम्ह स्थान भनिन्छ । कुण्डली शक्ति यहां पुगेपछि योगी ब्रम्हज्ञान प्राप्त गर्छन । पाचन कृयामा प्रयोग हुने विभिन्न (engymes) ले खाएको बस्तुहरु पचाउनमा मद्दत गर्छन र पचेको रस रगत, नशाहरु बन्नमा प्रयोग हुन्छ । यो चक्र कमजोर भएमा व्यक्ति आंटेर काम गर्न सक्तैन, अरु ठुला मान्छेसित बोल्दा डराएर बोल्छ । चक्र बलियो भएमा मानिस आंटिलो, भय रहित दृढ सोच तथा सहयोगी भावना भएका हुन्छ । अरुमाथि विश्वास गर्ने हुन्छ । व्यबसायमा लगानि गर्न डराउदैन, आटिलो हुन्छ ।

४. अनाहत चक्र : यसको स्थान मुटु नजिक हुन्छ । अनाहत चक्र कमजोर भएका मान्छे मुटु कमजोर हुन्छ । बोल्दा अरुलाई होच्याएर बोल्ने, शंकालु स्वभावका, आलोचक हुन्छ । बच्चाहरुलाई पिटन खोज्ने, भित्र असन्तुष्टी तथा छटपटाहट हुन्छ । कहिपनि सुख शान्तिको अनुभव गर्न सक्तैन । साधनाको चक्र बलियो भएमा योगी अत्यधिक गर्मी, चिसो सहन गर्न सक्ने हुन्छ । सहयोगी भावना, नरम स्वभाव भएका आटिलो हुन्छ । साधनाबाट योगीले परकाया प्रवेशको सिद्धी पाउंछ ।

५. विशुधा चक्र : यसको स्थान घांटी नजिक हुन्छ । कुण्डलिनि शक्ति यहां पुगेपछि साधकले भूत, बर्तमान तथा भविष्यको ज्ञाता, त्रिकालदर्सी हुन्छ । साधना गर्नाले बाक सिद्धी प्राप्त हुन्छ । कसैलाई बरदान अथवा श्राप दिएमा सत्य हुन्छ ।

६. आग्नेय चक्र : यसको स्थान दुई आंखाको मध्य भागमा हुन्छ । कुण्डलिनी शक्ति यहां पुगेपछि आज्ञा चक्र उत्तेजित भई आफुले इच्छा गरेको बस्तु भौतिक तथा आध्यात्मीक सबै प्राप्त हुन्छ ।

७. सहश्रार्ध चक्र : यसको मुख्य स्थान टाउंकोको मध्य भागमा जसलाई ब्रम्हरन्ध पनि भनिन्छ । योगीकहरु यहींबाट प्राण त्याग गर्छन । शरिरका ७२००० नशाहरु यहां पुगि रगत संचारमा मद्दत गर्छन । शरिर स्वस्थ रहन्छ । साधकले प्राणबायुलाई मुलाधारबाट यहां पुरयाई अत्यधिक आनन्दको अनुभव गर्छन । यस अबस्थामा साधक ब्रम्हाण्डमा भइरहेको घटनाहरु, ग्रह, नक्षत्रको स्थिति, समुन्द्र, आकाश, पाताल, जीवजन्तुको विकास, विनास बारे थाहा पाउंछ । अष्टसिद्धी प्राप्त साधक त्रिकालदर्शी हुन्छ अर्थात भूत, बर्तमान, भबिष्यको ज्ञाता हुन्छ । सिद्ध योगीहरु ब्रम्हाण्डको विराटरुपलाई हेर्न सक्छ ।

अष्टसिद्दी साधना

१. अनिमाः साधकले आफुलाई सानो भन्दा सानो अनु बराबर बनाउन सक्ने हुन्छ। अदृश्य हुने शक्ति प्राप्त हुन्छ।

२. महिमाः आफुलाई अग्ला पहाड जस्तो बनाउन सक्ने हुन्छ।

३. लघिमाः साधकले आफुलाई कपास जस्तो हलुको बनाउन सक्छ। योगीहरुले नदिमा बहि आएको वेला पानिमा हिडेर तर्ने गर्थे भनि सुनिन्छ।

४. गरिमाः आफुलाई अत्यधिक गरहुंगो कसैले पनि उचाल्न नसक्ने बनाउन सक्छ।

५. प्राप्तीः साधकले आफनो शुक्ष्म शरिरबाट पुरै ब्रम्हाण्ड सूर्य आदि ग्रहहरुको भ्रमण गर्न सक्छन, त्यहांको गतिविधिहरु र स्थितिबारे थाहा पाउन सक्छन।

६. परकाया प्रवेशः आफनो शुक्ष्म शरिरलाई अरु जीवहरुमा प्रवेश गराई सबैको मनको भावना सुख, दुख, विकास, विनाशको अनुभव गर्न सक्छ। सम्पूर्ण जिब, जन्तुहरुको भाषा (खेचरी विद्या) को ज्ञाता हुन्छ। आफना भौतिक तथा आध्यात्मिक बस्तुहरु चाहेको बखत पाउन सक्छन।

७. इस्तभाः (Power of creation) साधकले बिभिन्न जिबजन्तुहरु बाघ, हात्ती, मानिस, सुन, चांदी आदिहरुको समय परिस्थिति अनुसार संकल्प शक्तिबाट निर्माण गर्न सक्छ।

८. बयभाः ब्रम्हाण्डमा भएका सम्पूर्ण शक्तिहरु साधकको नियन्त्रणमा हुन्छ। (Perfect control over elements) हावाको दिसालाई परिवर्तन गर्न सक्ने, सूर्य उदयलाई रोक्न सक्ने, आफनो संकल्प शक्तिबाट पुरै ब्रम्हाण्डलाई बिनास गर्न सक्ने तथा श्रीष्ठी गर्न सक्ने गुण प्राप्त हुन्छ। अत्यधिक गर्मी तथा चिसो सहन सक्ने, महिनौ खाना तथा पानि बिना बाच्न सक्ने आदि। बाच्ने शक्ति प्रकृती सूर्य र हावाबाट पाउंछ। साइबाबालाई -३, गौतम बुद्धलाई -५ र हनुमानलाई -८ सिद्धी प्राप्त थिए।

देवेन्द्र कुमार चौधरी, बरिष्ठ बैज्ञानिक,
तेलबाली अनुसन्धान कार्यक्रम, नवलपुर।

यस वर्ष **चित्रगुप्त परिवार निर्देशिका** (Chitransh Family Directory) प्रकाशित गर्ने निर्णय गरिएको छ। तसर्थ काठमाडौंमा वसोवास गर्नुहुने सम्पूर्ण चित्रांशहरूले आफ्नो पारिवारिक विवरण नयाँ ढाँचाको फारम (New form) मा फोटो सहित उपलब्ध गराई दिनु हुन हार्दिक अनुरोध गर्दछौं।

नेपाल चित्रगुप्त समाज

मिलन

गणेशकुमार लाल
अध्यक्ष
नेपाल मिथिला प्रज्ञा प्रतिष्ठान
मलंगवा न.पा. वार्ड नं. ०२ / प्रदेश नं. ०२

मेलवोर्न शहर मे एकटा स्थान अछि। यि स्थानओहि देश के अनुसार गलि अछि। रास्ता के चौडाई लगभगपन्द्रह फिट । अहि स्थान के नाम छैक वेस्टो वर्ल्ड । यि गलि के स्थानियभाषा मे कोरीडोर कहलजाइत अछि। अहि गलि के किछ स्थान मे विरान अछि त किछ स्थान मे रात्रि मे अधिकचहलपहल। ग्रीष्मऋतु मे विदेशीप्रर्यटक के अधिक भिड लागल रहैत छैक।

अहि गली मे एकटा सिनेमा घर अति प्रसिद्ध छैक । अहि के नाम मैनटोरो रोज अछि ।शशि शेखर अचानक घुमैत घुमैत अहि गली मे पहुँच गेलाह । अहि ठाम हुनकर साक्षात्कार अजीब स्थितिउत्पन्न केलक। विरानजगह एकटा पार्क,पार्क मे जगहजगहआदमीके बैसवाक हेतु बेन्च राखल छल। अहिपार्क मे बहुतकिसिमके फूलखिलल छल। बिजली के व्यवस्थाबहुत वढीया छल। चारुकताजगमगाइत छल।

बिजली के खम्वापर एक कात मे अचानकहिनकर दृष्टि एकटा महिला पर पडल। ओ शशि शेखर के देख क आगा जेबाकप्रयास शरु केलक। आ पन मुँह के दुपट्टा सभ्कापी लेलक। ओ सोचलक जे हमरे जका रात्री के समय मे घुमवाक हेतु ओहो आयल हैत। ओ महिला मुडी कशशि शेखर के दिश देख लागल। साथे धिरे-धिरे उठि क चलबाकप्रयास केलक।

सिनेमाहलओहि स्थान स लगभगवीस मिटर केदूरी पर छल। अहि सिनेमाहल मे रात्रि केसमय बुधवार केदिनहिन्दीसिनेमा‘प्यासा’लागल छल। शशि शेखर सिनेमाहल के नजदिजाअपन टिकट कटा सुरक्षितजगह परबैस गेलाह ।किछ क्षण बादओमहिलाआबि गेलआशशि शेखर के नजदिक बैस गेल।

सिनेमानिर्धारितसमय पर शुरु भ गेल ।किछ विज्ञापन,किछ अंग्रेजीगीत ,गीत परओ महिलाआनन्दीत भ गेल ।तत्पचातहिन्दीसिनेमा‘प्यासा’शुरुभेल। ओ महिला एक टक लगेने देख लागल। सुरुवात मेत ओकिछ आनन्दित भेल ।धिरे-धिरे हिन्दी केडायलग ओकरा समभ्क स बाहर केबात भगेलैक।

हिन्दीसिनेमा के शब्द परदेशी, दरीया, जुल्फ, शहनाई, घुघट, तकदीर, मिलन, आतुरता, अतिरेक, कभि-कभि, अचानक, यादगार इत्यादीशब्दमहिला के समभ्क मे नहीअबैत छल। ओ शशि शेखर के आव-भाव स सम्भ्कैत छल जे यि लडका हिन्दी के फिल्म बराबर दखैत अछि आओहि भाषा के बुभ्कैत अछि।

अचानकओ शशि शेखर क हात-पर हात ध देलक आउपरोक्तशब्द के वारेमे वतेवाकआग्रह केलक। शशि शेखर ओही समय मे ओहीमहिला स नाम पुछि लेलक। ओ अपननाम ऐलिना बतेलक।

अहि समय मे अचानकशशि के एकटा कवि के बात आदआबि गेलैक
तुम्हारी कसम मै तुम्हारा नही
भटकतीलहर हूँ, किनारा नहीहूँ।

हिन्दीशब्द के यथाअंग्रेजीभाषा मे ऐलिना के क्रमश: सम्झाबलागल। ऐलिना के ध्यानफिल्म के दिशकममुदाशशि के बात पर अधिक रुप स अटक लागल।

मध्यकालमात्रपन्द्रह मिनट के लेल भेल। अहि समय मे बाहर आबिदुनु आदमी एक-एटा पैष्टी आ एक -एकटा बियर पिलक। फेर अपनअपन स्थान पर जाक बैस गेल। सिनेमाहाँल मे अंग्रेजीगीत फेर स पर्दा पर शुरु भेल। शायद यि ओहि देश अष्ट्रेलिया के ग्राहकमनोरंजन के उपाय भ सकैत अछि।

दोस्तीअहाँ के स्वस्थ रखवाकउपाय मे मददगार भ सहैत अछि। एकटा शोध के अनुसार दोस्ती करवालालोक अकेले रहबाला के तुलना मे ज्यादा स्वस्थ रहैत छैथ आलम्बाउमेर से हो जिवैत छथि। दोस्ती मे जीवनकआनन्दअवैत अछि। दोस्ती मे लिंग भेद नहीमानैत अछि। दोस्ती सामाजिक स्तर पर आदमी के बहुत सबल बनवैत अछि। उदाहरण के लेलयदिअहा लेखक छी त पाठक के रुप मे अनगिनत दोस्त भेट जेताह। ओ अहा के लिखवाक लेलप्रोत्साहित करैत रहताह।

मेलवोर्न के एक समुद्र तट पर डालफिन माछ देखवाकलेल आई शशि शेखर पहुचल। छुट्टी के दिन रहैक। बहुतलोक सब यथा स्थान पर कोई मैगो आइसक्रिमखाइत, कोई भेनेलाआइसक्रिककोई स्लाईस त कोई अंगुर, स्लाईस, फास्ट फूड। अपन-अपनमाोबाइलफोन स समुद्र मे उल्लासित, तंरगितलहर आ अहि रहल मे उछलैत कुदैत डालफिन, मंटा, डैफकिन सहित अनेक किसिम के माछ के नजारा अदभूत छल।

अहि समुद्री तटपर एलिनाअपन सहेली सब संगे मोवाइलएप पर समुद्रीलहर के फोटो खिचैत अचानकशशि के नजदिकपहुँच गेलिह । शशि के आँखिकिछ समय के लेल चौधियागेल तथाओ पतनुकान करबाक लेल पैर वढाब लागल। एलिनाबहुतसभ्यतथाआदरपूर्वक तरीका स विनम्रता के साथशशि के आदर केलक। फेर सब साथी सहेली के बारे मे शशि के बारे मे सामान्य परिचय करेलक। ओहि सहेली मे एकटा छलिह जैफरिन रेलिष्ट ओ से हो स्पेस कम्निकेसन इन्जिनियरिगङ्गअध्ययन मेलवोर्न इन्भरसिटी मे क रहल छलिह। अपन परिचयआदर पूर्वक शशि के देलक आनजिक राखल बेनच पर बैसवाक लेल आग्रह केलक।

कविअयाजगुललिखैत छथि
एक हीदिनकाहसना - बसना,
होते है बनजारे फूल।
अपनी एक हँसी के बदले
ले लो जग के सारे फूल।
काटो के है नगर मे रहते कोमल -कोमलव्यारे फूल।

अहि भेट घाट मे दू घण्टा बित गेल शशि बेन्च पर स उठि गेल । ऐलिनाअपनजूतापहिरलाके बादपोशाक ठिक कर लागल । वो बायाहात मे अंगुठी पहेरने छलिह ।स्पष्ट रुप स ओ विवाहितानही छलिह । वो विशेषखूबसूरतिमहिलानहीछलिह,ओकर जवानीशबाबे पर छल । अच्छा त आबहम सब चलैत छी । सोमवार के भेट भ सकैत अछि ।

नहि .... आबवुधबार के दिन कहाँ पुछलक शशि -शेखर । जबाब भेटल । सिनेमाहाल मे वुधबार के दिनसिनेमाहाल के गेट पर ऐलिनाअपन सामान्यपोशाक मे शशि -शेखर के इन्तजार मे अंगुर खाइत छलिह ।

शशि -शेखर अपनकार स दूर स ऐलिना के देख लेलक ओ जलदी स कार के कात लगेलक आ ऐलिना के धनयवादकहलक । आई सिनेमाहाल मे अपौन द रिभर नाम के सिनेमालागल छल ।

अचानक कनाडा मे रहि रहल ऐलिना के माता-पिता के कनाडा आबक लेल फोन आयल । बहुतमनोवियोग तथाजल्दवाजी मे ओ कनडा शशि -शेखर के याद करैत कनाडा चलि गेलिह । समय-समय पर ऐलिनाशशि -शेखर के याद मे फोन करैत रहलि । तथा समुद्र किनार के दृष्य पठबेत रहलिह ।

"यहपोर-पोर दर्द है यह नही मिटेगा मन दीप मे ही डालते बस जी रहे है हम ।"

यस स्मारिकमा प्रकाशित सम्पूर्ण लेख तथा रचनाहरुको मौलिकता तथा सामग्री सम्बन्धी सम्पूर्ण जवाफदेही लेखक स्वयं हुनेछ । सम्पादक मण्डलको कुनै जवाफदेही हुने छैन ।

– सम्पादक मण्डल

आदर्श विवाह

निभा रानी

कर्ण कायस्थ मिथिला की है शान,
आदर्श विवाह से होती उनकी पहचान..!!
न कोई ताम झाम,न कोई हो हंगामा ,
बड़ी ही शालीनता से होती यहां शादियां.!!
वर्षो पहले एक "परंपरा" बना है,
होगी शादियां बिना दहेज के,
आज भी रखा है हमने इसे सहेज के,
इस आदर्श पे सबको चलना है !!
सोशल मीडिया पे भी अच्छी शाख मिलने लगी,
देख कर मन मेरा हर्षित होने लगी!!
सहसा दिल मे एक "टिस" सी उठी है,
क्या सच मे शादियां बिना दहेज के हो रही है ??
देता है कुछ सम्पन्न परिवार बेटियों को तोहफा,
गाड़ी ,फ्रीज, ट.ख्, ब्क्ष्, और सोफा!!!
कोई ख़र्च रहा "लाखों" दिखाने को अपनी शान,
कोई कर्ज में डूब रहा है बचाने को अपनी मान!!
कर रहे हैं ये सब बेटियों के खुशहाल जीवन के लिये,
कोई मजबूर हो रहा है अपनी जान तक बेचने के लिये!!

पन्नप रहे हैं अजीबो(गरीब रिवाज,
पड़ने लगा हैं मध्यम और निम्न वर्ग पर दवाब!!
हम मांगते नहीं दहेज मुँह खोल के,
पर हर घर मे रखते है बेटा को तोल के !!
गरजो न दे पाए उचित मोल का उपहार,
होती है उन बहूओं पे मानसिक अत्याचार!!
साहनी पड़ती है सबको अजीब सा तिरस्कार,
"कन्यादान" से भी बड़ा होती है क्या कोई उपहार???
निभा करती है सभी से कुछ सवाल ???
क्यों हो रहा है इस तरह का बवाल ???
क्या अब यहां भी बहु(बेटियां जलाई जायगी??
क्यों आदर्श विवाह में आदर्श धुमिल होने लगी ??
क्या हम खोने लगे हैं अपनी शान??
क्या बदल जायेगा कर्ण(कायस्थ की पहचान??
"कर्णकायस्थ" मिथिला की है शान....
आदर्श विवाह से होती उनकी पहचान......

DAD, YOU ARE MY INSPIRATION

Kinjal Das, Class V B,
Good Shepherd School,
Bagdogra, Siliguri

Dad, ou are a fighter as you

Fight for us

Dad, you are a carpenter
As you skilfully, carved my desires into reality

Dad, you are a painter
As you simply painted
Your dreams for us to fulfil

Dad, you are a Director,
As you happily shaped my
Life into true success

Dad, you are a tailor
For you selflessly stitched
Our lives with efforts, patience, love
And affection

Dad, you are my Inspiration
As you magically achieved a big
Space for yourself in my heart

Dad, I love you,
And you barely even
Know how much I do

नेपाल चित्रगुप्त समाज

NEPAL CHITRAGUPTA SOCIETY

Sinamangal-9, Kathmandu, Nepal

Affix PP size photo and submit one auto size photo for I.D. Card

MEMBERSHIP APPLICATION FORM

General Member ☐ Life Member ☐ Other Member ☐

PERSONAL INFORMATION

1.0 FULL NAME		1.1 SEX: Male ☐ Female ☐	
1.2 FATHER'S NAME		1.3 DATE OF BIRTH	
1.4 NATIONALITY		1.5 CITIZENSHIP NO/DISTRICT	
1.6 BLOOD GROUP		1.7 MARITAL STATUS	
1.8 NAME OF SPOUSE		1.9 SPOUSE'S EDUCATION	
2.0 NUMBER OF CHILDREN		Son ☐	Daughter ☐
2.1 HIGHEST QUALIFICATION		2.2 UNIVERSITY	

PROFESSIONAL INFORMATION

2.3 DESIGNATION		2.4 STATUS Permanent ☐ Temporary ☐ Retired ☐	
2.5 ADDRESS OF OFFICE			
2.6 PHONE	2.7 FAX	2.8 EMAIL	

MAILING ADDRESS

2.9 House No		3.0 Tole	
3.1 Area		3.2 Ward No	
3.3 GPO Box		3.4 District	
3.5 Phone		3.6 Fax	
3.7 Mobile		3.8 Email	
3.9 Emergency Contact No			

RECOMMENDATION/PROPOSER

4.0 NAME			
4.1 Membership Number			
4.2 Signature		4.3 Date	

For Official Use Only

Date of Application ....

Membership Type...............................

Verified by...............................

Date of Verification ....

Approved by ....

Date of Approval ....

Registration No...............................

Membership No ☐

Office Seal

DECLARATION

ॐ यमाय धर्मराजाय श्री चित्रगुप्ताय वै नमः

I shall confirm to the constitution, by-laws, code of ethics and rules and regulation of Nepal Chitragupta Society .

I declare that the information I have supplied in this form are complete and correct if enrolled.

Date	Month	Year

Signature of the applicant

298/28, Srivinayak Marg, Sinamangal-9, Kathmandu, Nepal.Phone: 9841238706, 9851038523, 9841265991

सभ छोडि गेल ओ

आदित्य 'अरविन्द'
अहमदाबाद, दि. ०३ फरवरी

सभ कें कनैत दृग मोड़ि गेल ओ,
कोना कहू सभ किछु छोड़ि गेल ओ ।
अखनहि तऽ आयल छल जे मासो ने बीतल,
सभ कें लगाय कोर, छल ओहि मे ओ रीतल ।
बूझि नहि पड़ैत किन्तु, छल चन्द्र मुख हांसल,
पावि अपन लोक बीच, सभ मोद अपन बांटल ।
नहि अछि लगैत आइ सभ छोड़ि गेल ओ,
सभ कें कनैत दृग मोड़ि गेल ओ ।
सभ भाई आ बहिन संग, मामा आ मामी संग,
मौसा आ मौसी संग केलक कतेक रंग ।
हास ओ परिहस, अछि सभटा जे भेल भंग,
हाय विधि भेल बाम हारल ओ जीतल जंग ।
किछुओ ने भेल तखन कतऽ चलि गेल ओ,
सभ कें कनैत दृग मोड़ि गेल ओ ।
शिक्षाक उच्च शिखर प्राप्त कैल जाय दूर देश,
चिकित्सक बनि सेवा कैल शहर शहर आ विदेश ।
जीतल सभहक प्रेम विदेशो मे जे सदैव,
कोना छीनि लेलक ओ हीरा जे हा दैव ।
किछुओ ने बाजल आ सभ छोड़ि गेल ओ,
सभ कें कनैत दृग मोड़ि गेल ओ ।
विश्वास जे छल अटल ओकरा मे भूरि भूरि,
आगुए बढैत गेल ने देखल ओ पाछू घूरि ।
अपने चढि उच्च शिखर खींचल ओ कतेक हाथ,
कैल ओ कतेक मदद देल सदैव सभहक साथ ।
किन्तु सभ छोड़ि अशेष दूर चलि गेल ओ,
सभ कें कनैत दृग मोड़ि गेल ओ ।
दादीक छल ओ बनल आंखिक जे नयनतारा,
अवितहि लिपटि जाइत छल बनि ओ अनमोल हार ।
माय बाप पोसल सदैव प्राणहु सँ बढि कतेक,
दुःख दर्द त्यागि, ओकर चिन्ता जे छल करैत ।
तकरा ओ बिसरि कोना निर्मोही बनि गेल ओ,
सभ कें कनैत दृग मोड़ि गेल ओ ।
बहिनक छल बनल भातृ प्रेम अचल अटूट,
तहिना ओ छल रखैत छोट बहिनक ख्याल खूब ।
पथ प्रदर्शक छल बनल हरदम ओकर डेग डेग,
नहि भेल निमिष मात्रहु जे रोकि सकल ओकर प्रेम ।
से आइ कोना सभ छोड़ि छाड़ि दूर चलि गेल ओ,
सभ कें कनैत दृग मोड़ि गेल ओ ।

डा. आदित्य मल्लिक(अप्पू) के स्मृति मे मौसा जीक हृदय वेदनाक किछु शब्द ।

महेशवाणी

चन्दा दत्त

भोला हमर बर कारी हे सुन्दर छथि गौरी
भोला लय कयलन्हि कठिन प्रण हे सुन्दर छथि गौरी
भेटि गेलन्हि तपसी भिखारी हे सुन्दर छथि गौरी
सउँसे देह मे भस्म लगौने, गलामे सर्पक माला हे
सुन्दर छथि गौरी

भेटि गेलन्हि बुढवा भिखारी हे सुन्दर छथि गौरी
ठोढ नमरल छन्हि, गाल भोकरल छन्हि
देखयमें अस्सी बरस के हे, सुन्दर छथि गौरी
एहि बुढबासँग गौरी कोना रहथिंन्ह

नहि छन्हि सासु ननदि हे गौरी कोना रहथिन्ह
गौरी पहिरथि पाट पटम्बर
शिवजी पहिरथि बाघछाला हे सुन्दर छथि गौरी
पूरी नहि खेथिन्ह जिलेबी नहि खेथिन्ह

मागै छथि भांगाक गोला हे सुन्दर छथि गौरी
महल में नहि सुतथिन्ह पलंग पर नहि सुतथिन्ह
सुतथिन्ह भोपरी मरैया में, गौरी कोना रहथिन्ह
कार नहि चढथिन्ह मोटर साइकिल नहि चढथिन्ह

मगाय छथिन्ह बसहा सबारी हे, सुन्दर छथि गौरी
भोला हामर बर कारी हे सुन्दर छथि गौरी

नचारी

भोला वैसल छी वरी दूर यो, कोना करब दर्शन

दर्शन करैला नयन तरसैइया, कोना करब दर्शन यो ।

भोला छी वरी दूर ।।

बहुत दुर सँ अहाँ लग ऐलहूँ कंकर पत्थर पेरौ में गरल,

जल्दी सँ दियौ दर्शन यो ।

भोला छी वरी दूर ।।

फूलमाला चढवै लय हाथ फरकैया,कोना कल चढायव वेलपत्र यो । भोला छी वडी दूर ।।

ॐ नमः कोना जाप करब हम, हृदय कपइया थरथर यो ।

भोला छी वरी दूर ।।

दु:खिया के भोला सब दु:ख हरवै, सब पर र हव सहाय यो ।

भोला छी वरी दूर ।।

श्री चित्रगुप्त महाराज मंगलाचरण

श्री गिरिजासुत सुमिरि के, ब्रम्हसुता उर धार।
चित्रगुप्त पूजन कथा, वरंणू मति अनुसार॥
कर प्रणाम जगदीशते, हम सब करत करजोर।
कृपासिन्धु यह कामना, सफल करहु सब मोर॥
कलमबंद कायस्थ कुल, शरणो तेरे मात।
ज्वाला यमुना मध्य की, रखनी तेरे हाथ॥
चित्रगुप्त की चरण रज, शिरधीरे करहूं प्रणाम।
निज अपनो सुत जानि के, करिए पूरण काम॥

श्री चित्रगुप्त स्तुति

जय चित्रगुप्त यमेश तव, शरणागतम् शरणागतम्।
जय पूज्य पद पद्मेश तव, शरणागतम् शरणागतम्॥
जय देव-देव दयानिधे, जय दीन बन्धु कृपानिधे।
कर्मेश जय धर्मेश तव, शरणागतम् शरणागतम्॥
जय चित्रअवतारी प्रभो, जय लेखनीधारी विभो।
जय श्याम तन चित्रेश तव, शरणागतम् शरणागतम्॥
पुरुषादि भगवत अंश जय, कायस्थ कुल अवतंश जय।
जय शक्ति बुद्धि विशेष तव, शरणागतम् शरणागतम्॥
जय विज्ञ क्षत्रिय धर्म के, ज्ञाता शुभाशुभ कर्म के।
जय शान्तिमय न्यायेश तव, शरणागतम् शरणागतम्॥
तव नाथ नाम प्रताप से, छूट जाय भव त्राय ताप से।
हो दूर सव क्लेश तव, शरणागतम् शरणागतम्॥
यह दीन अनुरागी हरी, चाहे दया दृष्टि तेरी।
कीजै कृपा करुणेश तव, शरणागतम् शरणागतम्॥

NEPAL CHITRAGUPTA SAMAJ

Express

Hearty Congratulations & Best Wishes to Chitransh

Dr. GOURI SHANKAR LAL DAS

FOR
RECEIVING THE FOLLOWING COVETED AWARDS/FELICITATIONS

- ***National Good Conduct Award (Rastriya Sadachar Samman)- 2075 B.S. instituted by Transparency International, Nepal***
  (Awarded & felicitated by Shree Khemraj Regmi, Former Honorable Chairman, Council of Ministers on January 9, 2019 for his honesty, responsibility, unbiased behavior, simple imitable life style. He is the 4th recipient of this distinguished award in Nepal)

- ***Mahendra Narayan Nidhi National Award-2074 BS***
  (Awarded & felicitated with Cash Prize of Rs 50101.00 by MrsVidya Devi Bhandari,Rt. Honorable President of Nepalon February 25, 2019 for his meritorious services in diverse fields of Health, Education, Human rights, Peace, Democracy, Social justice, Non-violence)
- ***Balram Joshi Gyan Vigyan Rastriya Puraskar, 2075***
  (Awarded & felicitated with a cash prize of Rs 50101.00 by Dr B. R. Joshi GyanBigyan National Academy on April 19, 2019 for his multi-faceted personality and as a distinguished Medico-scientist)
- Felicitation by Lions Club of Kathmandu on the occasion of Silver Jubilee ceremony of the Club by Shree Ram Baran Yadav, Rt. Honorable Former President of Nepal on Fagun 12, 2075 for his long community service and as a prominent senior doctor.
- Felicitation by Nepal Leprosy Relief Association (NLRA) on the occasion of Golden Jubilee ceremony of NLRA by Shree Nand Bahadur Pun, Rt. Honorable Vice-President of Nepal on Jestha 3, 2076.
- Felicitation jointly by the Ministry of Women, Children and Senior Citizen and Federation of Senior Citizen, Nepal on the occasion of 28th International Senior Citizen Day by Shree Krishan Bahadur Mahara, Rt. Honorable Speaker of the parliament on Ashwin 15, 2075
- Felicitation by Nepalese Society of Medical Oncology (NESMO) on July 6, 2019 on the occasion of the First International Conference of Immuno-Oncology.
- Felicitation by ChitraguptaSewaSamiti, JanakpurDham on the occasion of 52nd Annual Meeting and Chitransh Conference by Hon RatneshwarLalKayastha, Chief of Province No 2 on Ashwin 4, 2076
- Felicitation by Pokhara Aged Shelter, Pokhara-13 on Asad 4, 2076
- Felicitation by Magnum Pharma Pvt Ltd on the occasion of 10th Anniversary for his tremendous contributions in the field of social service and health care on Shrawan 15, 2076.

शुभ दिपावली, चित्रगुप्त पूजा तथा छठ पर्व २०७६
को हार्दिक मंगलमय शुभकामना

माँ भगवती क्याटरिङ्ग एण्ड स्वीट सर्भिस
डिल्लीबजार, काठमाडौं
रामु महाराजः ९८४१३४३२४०, ९८५१०१२१७१

नेपालचित्रगुप्त समाज

नवौं वार्षिक साधारण सभाको लागि महासचिवको वार्षिक सांगठनिक प्रतिवेदन २०७६

अशोक कुमार कर्ण
का.वा. महासचिव

आज यस नेपालचित्रगुप्त समाजको नवौं वार्षिक साधारण सभामा उपस्थित हुनु भएका आदरणीय सम्पूर्ण संस्थापक, आजीवन तथा साधारण सदस्यज्युहरु लगायत अतिथिगण तथा आजको हाम्रो निमन्त्रणालाई स्वीकार गरेर उत्साहका साथपाल्नु भएका सबै चित्रांशहरुमा म अशोक कुमार कर्ण, नेपाल चित्रगुप्त समाजको कार्यवाहक महासचिव, यो वन्द सत्रमाहार्दिक स्वागत तथा अभिनन्दन गर्दछु ।

आज यहाँहरुको उपस्थितिले यस नेपाल चित्रगुप्त समाजलाई उचित दिशानिर्देश प्राप्त हुनेछ भन्ने विश्वास राख्दै प्राप्त निर्देशन अनुसार कमी - कमजोरीहरु तथा त्रुटीहरुलाई सुधार गरेर यस संस्थालाई आगामी दिनहरुमा अझ प्रभावकारी ढंगले प्रस्तुत हुन बल मिल्नेछ भन्ने समेत विश्वास लिएको छु ।

आदरणीय सदस्यज्यूहरु, अब म आ.व. २०७५/२०७६ मा भएका कार्यहरुको विवरण बुँदागत रुपमा प्रस्तुत गर्दछु ।

१. संस्थाको vision, mission र objective लाई लक्षित गरी समाज अगाडि बढिरहको छ र भगवानश्री चित्रगुप्तको कोटेश्वर/वालकुमारी स्थित मन्दिर निर्माण अत्यन्तै अन्तिम चरणमा पुगिसकेको र भारतवाट भगवानश्री चित्रगुप्तको मूर्ति १-२ दिनभित्रै काडमाडौं आइपुग्ने क्रममा रहेको हुँदा उचित साइत अनुसार मन्दिरमा मूर्तिको स्थापना गरी प्राण प्रतिष्ठा समेत गरी यसै वर्षदेखि चित्रगुप्त पूजनोत्सव कार्यक्रम एवं समारोह कोटेश्वर/वालकुमारी अवस्थित मन्दिरवाटै प्रारम्भ गरिने अवगत गराउँदछु ।

२. नेपाल चित्रगुप्त समाजको नयाँ website निर्माण गरिएको र सो को address w.w.w. nepalchitragupta.org.np रहेको र अबका दिनहरुमा नियमित रुपमा सो website update भइरहने कुरा समेत उपस्थित सम्पूर्ण सदस्य महानुभावहरुलाई जानकारी गराउन चाहन्छु ।

३. देशमा बेला-बेलामा आइपर्ने विपद् र प्राकृतिक प्रकोप जस्तै वाढी, पहिरो, आगलागी जस्ता दुर्घटनाहरु भएका समयमा यस नेपाल चित्रगुप्त समाजले नगद, खाद्यान्न तथा लत्ता कपडाहरु उपलब्ध गराई पिडित जिल्लाका पिडित परिवार र व्यक्तिहरुलाई सहयोग गरिरहेको समेत जानकारी गराउँदछु ।

४. विगतवर्षको चित्रगुप्त पूजनोत्सव समारोहको अवसरमा ७५ वर्ष पूरा गर्नु भएका १३ जना चित्रांश दीर्घजीवी महानुभावहरुलाई उहाँहरुले आ-आफ्नो क्षेत्रमा गर्नु भएको योगदान समेतको कदर गर्दै

प्रमाणपत्र प्रदानगर्ने र दोसल्ला ओढाई सम्मानितगर्ने कार्य गरिएको जानकारी गराउँदछु ।

५. चित्रांश समाजका विभिन्न व्यक्तित्वहरुलाई उहाँहरुले आ-आफ्नो क्षेत्रमा तथा चित्रांश समाजमा पुऱ्याउनु भएको विशिष्ट योगदानको कदर गर्दै सम्मानित गर्ने कार्य गरिएको अवगत गराउँदछु ।

यस चित्रांश समाजका विभिन्न कार्यहरु सुचारु ढंगले चलोस र कार्यसमिति सदैव क्रियाशील भै रहोस् भन्ने उद्देश्यले कार्य समितिका सदस्य लगायत आजीवन तथा साधारण सदस्यज्यूहरुको समेत सहभागिता हुने गरी विभिन्न समितिहरु गठन गरेका छौं । सोही क्रममा भगवान श्री चित्रगुप्त महाराजजीको मन्दिर निर्माण कमिटी अत्यन्तै तदारुकताका साथ निरन्तर कार्य गरिरहेको कुरा यहाँहरुलाई निवेदन गरिसकेकै छु । चित्रांशवन्धुहरुको काठमाडौं उपत्यका भित्र भगवान चित्रगुप्त महाराजको भव्य र आकर्षक मन्दिर निर्माणको अभिलाषा यसै वर्ष पूजा अगावै पुरा हुनेछ भन्ने पुनःविश्वास दिलाउन चाहन्छु ।

दाताहरुबाट प्राप्त रकम र पूजनोत्सव पश्चात वचत भएका रकम मन्दिर निर्माणमा खर्च गर्नुको साथै वित्तीय संस्थाहरुमा वचत गरी राखेका छौं, सो को विस्तृत विवरण कोषाध्यक्षज्यूबाट सभामा प्रस्तुत हुने नै छ ।

अन्यकार्य प्रगति सम्बन्धमा

- चालु आर्थिक वर्षको सबै कार्यको प्रगती र प्रतिफल राम्रो होस् भन्नाका लागि विभिन्न समितिहरु जस्तै पूजनोत्सव समिति, स्मारिका प्रकाशन समिति, शैक्षिकतथा पुरस्कार वितरण समिति ई. गठन गरिसकिएको छ ।
- श्री चित्रगुप्त सेवा समिति जनकपुरधामले यही आउँदो २०७६ साल आश्विन ४ गते गर्न लागेको ५२ औं वार्षिक साधारण सभा तथा अन्तर्राष्ट्रिय/राष्ट्रिय चित्रांश सम्मलेनमा यस समाजका कार्यकारी समिति तथा सदस्यहरुवाट समेत उल्लेख्य संख्यामा सहभागिता जनाउने निर्णय गरिएको छ ।
- गैर सरकारी सामाजिक संस्था संचालन प्रवर्द्धन तथा कोष संग्रहको लागि कार्यशाला/गोष्ठीको आयोजना गरिएको ।

विधान संशोधन सम्बन्धमा

१) निवर्तमान अध्यक्ष स्वतः कार्यकारी सदस्य हुने - निवर्तमान अध्यक्ष (Immediate Past President) आगामी एक कार्यकाल सम्म स्वतःकार्यकारिणी समितिको सदस्य रहने छ । वरियता क्रममा निजलाई अध्यक्ष पछिको स्थान हुनेछ ।

आर्थिक वर्ष २०७६/२०७७ को लेखा परिक्षक नियुक्ती

नेपाल चित्रगुप्त समाजको आर्थिक वर्ष २०७६/२०७७ को लेखा परिक्षण गर्न LSP Associates, ज्वागललाई नियुक्त गरिएको छ र निजको पारिश्रामिक रु. १५,००० तोकिएको छ ।

आदरणीय सदस्य महानुभावहरु, अव म आगामी दिनका योजनाहरु बारे उल्लेख गर्न चाहन्छु । आजको साधारण सभाबाट आगामी कार्यकालको लागि सक्षम नेतृत्वका साथ नयाँ कार्यसमिति गठन हुने नै

छ र सो कार्य समितिले पनि नयाँ जोश - जाँगर र उत्साहका साथ सक्रियता पूर्वक नयाँ कार्यहरुको थालनी तथा विगतका अधुरा - अपूरा कार्यहरुलाई पूर्णता दिने नै छ। तथा पिहालको कार्यकारिणीले बनाएका योजनाहरु निम्नानुसार छन्।

- आगामी वर्ष समेत सदा झै आपसी भाइचारा, सद्भाव, आर्थिक तथा सामाजिक प्रगति पथमा चित्रांश समाज अगाडि बढोस् भन्ने शुभकामना सहित नेपाल चित्रगुप्त समाज अहोरात्र खटिरहने छ।
- समाजलाई अझ सशक्त र सक्रिय बनाउनका लागि सबैको सहभागितामा विशेष कार्यक्रम बनाई लागु गरिने छ।
- चित्रांशवन्धुहरुको आर्थिक प्रगतीको लागि विशेष कार्यक्रमहरु संचालन गरिने छ।
- मेघावी छात्र - छात्राहरुको लागि छात्रवृत्ति तथा पुरस्कारको थप व्यवस्था गरिने छ।
- समाजका अग्रज, लब्ध-प्रतिष्ठित तथा दीर्घजीवी चित्रांश महानुभावहरु (७५ वर्ष पूरा भएका) व्यक्तिहरुलाई सम्मान गरिने कार्यक्रमहरुलाई निरन्तरता दिइने छ।
- २०७६ मा हुने चित्रगुप्त पूजनोत्सवलाई अझ व्यवस्थित र बृहत् रुपमा गरिने छ।
- देश विदेशमा रहेको चित्रांशवन्धु-वान्धव संग सम्पर्क कायम गरी कोष बृद्धि बारे निरन्तरता दिइने छ।
- सामाजिक दायित्व तर्फ आपत - विपतमा परेका व्यक्तिहरुलाई आर्थिक तथा जिन्सी सहयोग गर्ने परम्परालाई कायम राख्दै समाजका सदस्यहरु तथा अन्य व्यक्तिहरुलाई समेत विभिन्न सेवा उपलब्ध गराउन उपयुक्त समयमा विभिन्न क्रियाकलापहरु संचालन गरिनेछ।

उपस्थितमहिलातथा सज्जनवृन्द,

अन्त्यमा, महासचिववाट प्रस्तुत विधान संशोधन लगायतका सांगठनिक प्रतिवेदनलाई सर्वसम्मतिबाट अनुमोदन गरिदिनु हुन सादर अनुरोध गर्दै समाजलाई यहाँ सम्म ल्याइ पुर्‍याउन विभिन्न संघ - संस्था तथा ज्ञात - अज्ञात व्यक्तिहरुबाट प्राप्त सहयोगको लागि समाजको तर्फबाट र मेरो व्यक्तिगत तर्फबाट हृदय देखिनै धन्यवाद ज्ञापन तथा आभार व्यक्त गर्दछु। धन्यवाद।

अशोक कुमार कर्ण
का.वा. महासचिव
२०७६।०५।२८

K. Bhattarai & Associates
Registered Auditors
Madhumara-11, Biratnagar, Nepal
Tel 01-4785724

के. भट्टराई एण्ड एसोसियटस्
रजिष्टर्ड लेखापरीक्षक
मधुमारा, ११, बिराटनगर, नेपाल ।
फोन नं.०१ ४७८५७२४
सदस्यता नं. ७१३ , प्रमाणपत्र नं. ख, ०२५०
स्थायी लेखा नं. ३०११९०४३३

श्री सदस्य महानुभावहरु,
नेपाल चित्रगुप्त समाज,
का म पा ९, काठमाण्डौ, नेपाल ।

विषय : सदस्य महानुभावहरु समक्ष स्वतन्त्र लेखापरीक्षकको प्रतिवेदन ।

महोदय,

हामीले **नेपाल चित्रगुप्त समाज को** यसै साथ संलग्न २०७६ आषाढ ३१ को वासलात तथा सोही मितिमा समाप्त आर्थिक वर्षको आम्दानी तथा खर्चको विवरण तथा नगद कोष प्रवाह विवरणको लेखापरीक्षण गरेका छौ । ती वित्तीय विवरणहरु प्रतिको उत्तरदायित्व **नेपाल चित्रगुप्त समाज** को व्यवस्थापनमा रहेको छ । हाम्रो उत्तरदायित्व लेखापरीक्षणको आधारमा ती वित्तीय विवरणहरु उपर राय व्यक्त गर्नु हो ।

हामीले नेपाल लेखापरीक्षणमान तथा नेपालमा प्रचलित सर्वमान्य लेखापरीक्षणमानको आधारमा आ. ब. २०७५/०७६ को लेखापरीक्षण कार्य सम्पादन ग-यौ । ती मानहरु अनुरुप हामीले वित्तीय विवरणहरु गहन रुपले गलत प्रदर्शन हुनबाट बञ्चित छन् भन्ने कुरा यथोचित ढंगले विश्वस्त हुनको लागि लेखापरीक्षण योजना तर्जुमा एवं तदनुरुप कार्य सम्पादन गर्नु पर्दछ । लेखापरीक्षण अन्तर्गत वितीय विवरणमा प्रदर्शित रकम एवं अन्य विवरणहरुको पुष्टयाइँ गर्ने प्रमाणको नमूना परीक्षण गरिन्छ । हामीले व्यक्त गर्ने रायको लागि हाम्रो लेखापरीक्षणले यथोचित आधार प्रदान गरेको कुरामा हामी विश्वस्त छौं ।

१. हामीले लेखापरीक्षणको सिलसिलामा सोधनी तथा कैफियत तलब गरेका कुराहरुको जवाफ यथाशीघ्र सन्तोषजनक पायौं ।
२. हाम्रो रायमा समाजको हिसाब किताब तथा लेखा कानून बमोजिम ठीक संग राखिएका छन् ।
३. प्रस्तुत वासलात, आय व्यय विवरणहरु समाजले राखेको हिसाब किताब संग दुरुस्त छ ।
४. हाम्रो रायमा समाजका कार्यकारिणी सदस्यहरुले लेखा सम्बन्धी कानूनी व्यवस्था विपरीत कामकाज गरेको वा समाजलाई हानि नोक्सानी गरेको एवं संस्थाको हित विपरीत काम गरेको पाईएन र यस्ता कुराको बारेमा संघको व्यवस्थापनबाट समेत जानकारी हुन आएन ।
५. हाम्रो रायमा हामीलाई प्राप्त सूचना एवं दिइएको स्पष्टिकरणको आधारमा संस्थाको यसै साथ संलग्न आय - व्यय विवरण, नगद कोष प्रवाह तथा वासलात यस संस्थाको आर्थिक स्थितिको उचित एवं यथार्थ चित्रण गर्दछ।

स्थान : काठमाण्डौ
मिति : २०७६।०५। ०६

K.BHATTARAI & ASSOCIATES Reg.No3018 COP No250 Registered Auditor

केशव प्र. भट्टराई
रजिष्टर्ड लेखापरीक्षक

नेपाल चित्रगुप्त समाज

काठमाण्डौ, नेपाल ।

वासलात

०७६ आषाढ ३१ सम्म (१६ जुलाई २०१९)

दायित्व		रकम	गत बर्ष
पूंजी कोष			
पूंजी			
गत वर्ष सम्मको वचत		६५१,१४२.१४	५४०,५७०.७५
यस आ. ब. को बचत		४०४,६७९.४७	११०,५७१.३९
महिला समिति कोष (१ र २)		२३१,४००.००	२३१,४००.००
घर जग्गा कोष		२२४,९३५.६८	२२४,९३५.६८
मन्दिर तथा घरजग्गा निर्माण कोष		३,१३८,९४५.००	३,०३८,८९४.००
चालु दायित्व			
भुक्तानी दिनु पर्ने	(अनसूची-३)	१६९,१६३.८७	५०,०७३.००
जम्मा दायित्व		४,८२०,२६६.१५	४,१९६,४४४.८२
सम्पत्ति			
स्थिर सम्पति			
स्थिर सम्पति	(अनुसूची- १)	१,०६७.८७	१,४२३.८३
चाल सम्पत्ति			
पेश्की, धरौटी तथा पाउनु पर्ने	(अनुसूची -२)	२,३२५,१५७.००	१,५३८,२७२.००
नगद तथा बैक मौज्दात	(अनुसूची -४)	२,४९४,०४१.२८	२,६५६,७४८.९९
जम्मा सम्पत्ति		४,८२०,२६६.१५	४,१९६,४४४.८२

१देखि४ सम्मका अनुसूचीहरु यस लेखाका अविभाज्य अंग हुन् ।

हाम्रो यसै साथ संलग्न प्रतिवेदन अनुसार

अध्यक्ष

कोषाध्यक्ष

महासचिव

लेखापरीक्षक

K. BHATTARAI & ASSOCIATES
Reg. No3015
COP No253
Registered Auditor

नेपाल चित्रगुप्त समाज
काठमाण्डौं , नेपाल

आय–व्यय विवरण

,२०७५ श्रावण १ देखि २०७६अषाढ मसान्त सम्म

व्यय	रकम	गत बर्ष	आय	रकम	गत बर्ष
स्मारिका प्रकाशन खच	१२८,४००.००	१४०,०००.००	सदस्यता शुल्क तथा नवीकरण आम्दानी	४०,२९०.००	४७,७९३.००
पूजा तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम खर्च	३४५,८४३.००	२९९,८८८.००	चन्दा - पूजा	४३४,३८०.००	२९३,०४८.००
प्रशासनिक खर्च	७७,६५५.९६	१७३,०३०.६१	चन्दा अन्य	८१,३३६.००	६,१३८.००
अनुसूची -६			चन्दा - स्मारिका प्रकाशन	४८०,५००.००	३७०,०००.००
			सामाजिक कार्यक्रम सहयोग	७,११०.००	६,५११.००
			बैंक ब्याज आम्दानी	१४,१३२.२९	
खर्च भन्दा आम्दानी बढी					
बचत	५०५,८४९.३३	११०,५७१.३९			
कर व्यवस्था	१०१,१६९.८७	-			
कर पछाडिको बचत	४०४,६७९.४७				
	१,०५७,७४८.२९	७२३,४९०.००		१,०५७,७४८.२९	७२३,४९०.००

अनुसूचीहरु यस लेखाका अविभाज्य अंग हुन्।

हाम्रो यसै साथ संलग्न प्रतिवेदन अनुसार

अध्यक्ष — महासचिव — कोषाध्यक्ष — लेखापरीक्षक

K. BHATTARAI & ASSOCIATES
Rng.No3018
COP No250
Registered Auditor

NEPAL CHITRAGUPTA SAMAJ

New Member List 2075-076

S.No	Receipt No.	Name	Address	Mobile No.	Membership	Remarks
1	121	Prof.Abhoy Kumar Das	Moolpani	9856031793	5,555	L
2	122	Ganesh Kumar Lal	Jawalakhel	9864143421		G
3	123	Rabindra Nath	Sun City Apartment	9851003252	5,555	L
4	124	Shadhna Lal	Nayabaneshwor	9844-37286		G
5	125	Ram Kumar Lal Karn	Kusunti	9841572421		G
6	126	Nilam Kumari	Imadole	9808420819		G
7	127	Bujhini Devi Karn	Imadole	9808420819		G
8	128	Kali Kumar Das	Thapagaun	9841776945		G
9	129	Ranjana Karn	Kalaki	9841769516	5,555	L
10	130	Pradip Kumar Mallik	Sinamagal	9851045623	5,555	L
11	231	Ramesh Kumar Dutta	Birgunj	9855161820		G
12	232	Umesh Dutta	Shankhmul	9841547518		G
13	233	Gajendra Kumar Karn	Bhatauliya	9841609229		G
14	234	Baidhnath Prasad Karn	Shantinagar	9849937837		G
15	235	Sameer Pankaj	Shantinagar	9842835567		G
16	236	Birendra Kumar Dutta	Kupondole	9851115034		G
17	237	Dr. Puspa Karna Mallik	Naya Thimi	9861589709		G
18	238	Dr.Pro Puspa Kumari Karna Kayastha	Kirtipur	9841771812	5,555	L
19	239	Mritunjay Karna	Nakhu	9851095585		G
20	240	Sukhchandra Lal Karna	Kadhaghadi	9849190059		G
21	241	Ajay Chandra Lal		9851107171		G
22	242	Prabhakar Mallik	Sinamagal	9841719305		G
23	243	Dhirendra Kumar Mallik	Lalitpur-23	9841449064		G
24	244	Poonam Das	Kalanki	9851034600		G
25	245	Pramod Lal Das	Kalanki	9851034600		G
26	246	Er. Purushotam Lal Karn	Satokhar-3 Dhanusha	9861492492	5,555	L
27	247	Prabhakar Kumar Mallik	Imadole	9841868326		G
28	248	Manoj Kumar Bachan	Chobhar	9851043405		G
29	189	Sukha Chandra Lal Karn	Kadaghari	9849190659	5555	L
30	131	Satendra lal karna	Dhobighat	9849241666	5,555	L
31	195	Sunil Kumar Lal Karna	Dhobighat	9849550577	5,555	L
32	379	Nagendra Lal Karna	Pepsicola (townplanning)	9852820575	5,555	L

G : General Member

L: Life Member

CHITRAGUPTA POOJA DONORS LIST 2075

S.No.	Receipt No.	Name	Address	Mobile No.	Amount
1	361	Reena Karna	Buddhanagar	9801032803	31,001
2	1613	Santosh Kishore Labh	Imadol -5	9851199442	17,000
3	326	Bishwo Prakash	Chabahil		10,001
4	1301-1306	Various person C/o Ram Dinesh Lal			7,215
5	1617	Suvod Kumar Karn, Dr.	Sankhamul		5,551
6	297	Satish Kumar Dutta	Balaju	9841074002	5,050
7	373	Dev Krishan Kanth	Oriental Colony	9851120128	5,005
8	196	Grish Chandra Lal	Dhobighat	9851050055	5,005
9	140	Manoj kumar Lal Karna	Oriental Colony	985100882	5,005
10	132	Rajendra Lal Karna	Dhobighat	01-5190410	5,005
11	374	Rakesh Karna	Oriental Colony	9855045823	5,005
12	323	Sureshwor Lal Karna	Dhobighat	9851091678	5,005
13	195	Sunil Kumar Lal Karna	Dhobighat	9849550577	5,005
14	333	Ramanand Lal Karn	Janakpur	9851071555	5,000
15	328	Dr.Gauri Shanker Lal Das	Chabahil		4,101
16	324	Bimalendra Nidhi	Baneshwor		3,505
17	197	Brikhesh Chandra Lal	Dhobighat	9854026975	3,505
18	494	Dr.Pushpa Karn	Birgunj	9841771812	3,505
19	135	Lokendra Mallick	Dhobighat	9851063440	3,505
20	193	Naresh Chandra Lal	Sanchal, Sanepa	9851092451	3,505
21	322	Satish Chandra Lal	Dhobighat	9851040278	3,505
22	365	Satish Kumar Karn	Suryabinayak 4	9801061347	3,505
23	191	Shiva Bhushan Lal	Sanepa		3,505
24	198	Sunil Kumar Lal Karna	Dhobighat	9751097530	3,505
25	331	Manish Chandra Lal	Malpokhari	9851224604	3,500
26	911	Dharmendra Lal	Baneshwor	9841470987	3,100
27	215	Smarika Bikri			3,010
28	464	Bidyadhar Mallik	Battisputali	9851033035	3,005
29	619	Jayshankar Lal	Subidhanagar, Tinkune	9851064350	3,005
30	192	Ratish Chandra Lal	Gusingal,Lalitpur		3,005
31	908	Reena Das	Suichatar	9841931182	3,005
32	210	Sanjay Kumar Mallik	Kalanki	9843309588	2,555
33	191	Bijay Kumar Karna	Balkhu, Lalitpur		2,505
34	133	Dhirendra Lal Karn	Dhobighat	9851046285	2,505
35	376	Pro. Bijay Kant Lal Karna	Kirtipur	9851047473	2,505
36	193	Rajesh Kumar Das	Dadhikot	9851189000	2,505

S.No.	Receipt No.	Name	Address	Mobile No.	Amount
37	153	Ashish Mallik	Balkhu	9803584421	2,501
38	151	Rajendra Kumar Lal	Balkhu	9851173168	2,501
39	304	Santosh Kumar Karna	Imadole, Lalitpur	9854030527	2,501
40	152	Surendra Kumar Karna	Balkhu	9841518723	2,501
41	227	Anil Kumar Sinha	Gairidhara		2,500
42	181	Arun Kumar Mallik	Kupandol	9841938188	2,500
43	226	Bimal Kumar Sinha	Gairidhara		2,500
44	201	Devendra Lal Karn	Lampati,Kalanki	9851011821	2,500
45	292	Dipendra Kanth	Kupondole	9813676031	2,500
46	188	Dipendra Kumar Lal Karna	Imadol		2,500
47	204	Dr. Ragesh Karn	Basundhara		2,500
48	303	Indra Narayan Mallik	Imadole	9841365788	2,500
49	223	Ratnakar Dutta	Baneshwar		2,500
50	221	Ratneshwar Lal	Harisiddhi		2,500
51	618	Arun Kumar Lal Das	Jorpati	9851020818	2,155
52	167	Archana Karn	Dhapakhel	9851891870	2,105
53	925	Ishwor Chandra Dutta	Pepsicole	985112884	2,100
54	222	Rajesh Srivastav & Family	Babar Mahal		2,100
55	332	Rakesh Lal Karn	Bagdol	9851062160	2,100
56	370	Ram Dinesh Lal	Lokanthali	9851000155	2,100
57	367	Yasodhara Devi Das	Buddhanagar	9851174149	2,100
58	463	Abhoy Kumar Das	Mulpani	9856031793	2,005
59	321	Avinash /Preena Lal	Kuleshwor	9851175286	2,005
60	214	Bipin Kumar Lal	LIC Nepal	9851112065	2,005
61	359	Saroj Dutta	Jadibuti		1,551
62	137	Anil Verma	Nakhu, Lalitpur	9851027501	1,505
63	362	Bimal Kumar Nirmal (DR.)	Balkot	9851233107	1,505
64	230	C. K. Lal	Kalanki		1,505
65	138	Chandra Mohan Lal Karna	Sanchal, Sanepa	9841736130	1,505
66	366	Madan Kishore Dutta	Thimi	9801806775	1,505
67	203	Nagendra Kumar Mallik	Tahachal	9841907689	1,505
68	200	Satendra Lal Karna	Dhobighat	9849241666	1,505
69	207	Shailendra Karn	Kuleshwor	9841330916	1,505
70	1614	Shiv Chandra Lal Karn	Baneshwar		1,501
71	922	Pankaj Karna	Hirishhidhhi	9851096026	1,500
72	912	Prasant Shekhar Dutta	Chandragiri-5	9841294791	1,500
73	154	Rajan Kayastha	Bhaisepati	9851114127	1,500
74	378	Rajib Ranjan Karn	Pepsicola (Townplanning)	9841312630	1,155

S.No.	Receipt No.	Name	Address	Mobile No.	Amount
75	277	Bhaskar Kumar Das	Suncity	9851106331	1,111
76	357	Subodh Kumar Karn	Lokanthali	9841309098	1,111
77	363	Akhileshwar Karn (Dr.)	Balkot	9855068706	1,105
78	212	Bijay Kant Karn	Kirtipur	01-4335355	1,105
79	208	Dhruwa Lal	Kuleshwor	9841234047	1,105
80	368	Jitendra Labh	Kaushaltar	9851218052	1,105
81	364	Kapileshwar Lal Karn	Balkot	9845029434	1,105
82	165	Laxmi Karn	Gaurighat		1,105
83	616	Magnu Dutta	Kausaltar	9851198910	1,105
84	371	Mukesh Karna	Kupondole	9851134155	1,105
85	285	Rajesh Verma	Gusingal, Lalitpur	9851156851	1,105
86	924	Arbind Kumar Mallik	Bagdole	9851086434	1,100
87	217	Binod Kumar Srivastav	New Baneshwar		1,100
88	330	Birendra Kumar Lal Karn	Koteshwor	984963171	1,100
89	561	Deepak Labh	Chabahil	9841360425	1,100
90	933	Deepesh Kumar Karna	Nakhu 18	9851115277	1,100
91	341	Dev Chandra Lal Karn	Manohara		1,100
92	212	Hariom Sirvastav	Thapagaun		1,100
93	214	Kamalesh Kumar Karn	Baneshwar		1,100
94	903	Piyus Priya	Baphal	9851067528	1,100
95	293	Pramod Karna	Imadole-4	9801081938	1,100
96	902	Ranjit Sinha (ajit)	Shantinagar	9802923259	1,100
97	298	Sachidanand Shriwastav	Chakupat	9849404016	1,051
98	209	Shila Kant Lal Karn	Kuleshwor	9851173731	1,051
99	909	Madan Mohan Das	Koteshwor, Kathmandu	9841200155	1,020
100	918	Arun Kumar Karna	Kalanki	9855041188	1,005
101	251	Arun Kumar Kayastha			1,005
102	224	Arun Srivastav	Kupondol		1,005
103	302	Ashok Kumar Karna	Imadole Nepal Telecom	9851102858	1,005
104	334	Ashok Kumar Lal Karn	Bagdol	9851102666	1,005
105	352	Bhakta Kumar Lal	Tharuwahi, Mahottari	9841356740	1,005
106	1615	Bharat Kumar Mallik	Imadol, Lalitpur		1,005
107	354	Bhogendra Labh	Lokanthali	9841553648	1,005
108	451	Bimalesh Kumar Lal	Lokanthali	9841301765	1,005
109	281	Chakrabarti Kanth	Pepsicola (townplanning)	9844020948	1,005
110	274	Chandra Bhushan Lal Karn (Manoj)	Suncity	9808307597	1,005
111	353	Deepak Prasad Karna	Imadol	9801173802	1,005
112	202	Dilip Karn	Tahachal	9841547322	1,005

S.No.	Receipt No.	Name	Address	Mobile No.	Amount
113	276	Dilip Verma	Suncity	9841376376	1,005
114	372	Dipendra Karna	Manjushri Tole, Nakhu	9849105801	1,005
115	905	Dr. Gautam Shriwastav	Thapagaun, Nayabaneshwor	9843384981	1,005
116	327	Gurneshwor Lal	Chabahil		1,005
117	462	Harendra Kumar Das	Kadaghari	9851127877	1,005
118	493	Jay Kant Lal Das	Purano Baneshwor	9841355012	1,005
119	452	Kamalesh Kumar Lal	Lokanthali	9851169664	1,005
120	228	Kanhaiya Lal Das	Tripureshwar		1,005
121	225	Kavindra Narayan Das	Jwagal		1,005
122	136	Mritunjay Karna	Nakhu, Lalitpur	9851095585	1,005
123	467	Pankaj Kumar Mallik	Hattiban	9851021717	1,005
124	229	Pramod Lal Das	Kalanki		1,005
125	355	Pravin Labh	Lokanthali	9851066708	1,005
126	375	Pro. Kula Nand Das	Oriental Colony	9845968797	1,005
127	205	Rajendra Kumar Mallik	Satungal	9843444960	1,005
128	358	Rajenra Lal Karn	Lokanthali	9849133446	1,005
129	329	Ram Kumar Lal Karn	Kusunti	9841572421	1,005
130	907	Ramballav Das	Suichatar	9841931182	1,005
131	275	Ravindra Nath	Suncity	9851003253	1,005
132	562	Santosh Kumar Das	Hattiban	9841205706	1,005
133	282	Saroj Lal Karna	Pepsicola (townplanning)	9851047999	1,005
134	351	Satendra Lal Karn	Lokanthali	9801248200	1,005
135	134	Shashi Kumar Karn	Dhobighat	9841359998	1,005
136	206	Subash Karna	Kuleshwor	9851076278	1,005
137	190	Sungava Offset Press	Bagbazar		1,005
138	360	Sushil Lal Karn	Narephat	9854026859	1,005
139	301	Ramapati Kanth	Imadole		1,001
140	185	Abhdesh Kumar Das	Ranibari,Lazimpat	9851031555	1,000
141	939	Gangesh Karna	Siphal	9802098969	1,000
142	187	Madhu Joshi	Kamaladi		1,000
143	183	Nutan Karn	Maitrinagar	9844012816	1,000
144	211	Raj Kisore Das	Kaushaltar		1,000
145	938	Rajesh Karna	Siphal	9818111106	1,000
146	273	Sanjay Kumar Nirala	Suncity	9801025568	1,000
147	271	Sharat Chandra Verma , DR.	Suncity	9849497280	1,000
148	184	Surendra Kumar Karn	Maitrinagar	9851047021	1,000
149	310	Ashok Shriwastav	Naya Baneshwor	9849155861	755

S.No.	Receipt No.	Name	Address	Mobile No.	Amount
150	892	Om Prakash Lal Das	Dhumbarahi	9851125564	700
151	465	Ragneshwor Lal Karn	Gwarko,Lalitpur	9849290789	605
152	926	Ramkishor Lal Karna	Tikathali	9851172079	600
153	187	Diwakar Choudhary	Dhungadda	9841324732	555
154	295	Jitendra Labh	Budhnagar	9841214288	555
155	162	Pintu Karn		9855023439	555
156	284	Pradeep Kayastha	Narephant Koteshwor	9842079024	555
157	940	Sajat Karna	Suga	9854031777	555
158	910	Santosh Kumar Karna	Tahachal	9841407073	555
159	294	Shekhar Sinha	Basundhara	9801044178	555
160	904	Dr. Uday Pratap Dinakar	Tinkune	9803377689	551
161	216	Kali Kumar Das	Baneshwar		550
162	1061	Umakant Lal Karn	Lazimpat	984179517	550
163	190	Ashok Kumar Lal Ryama	Kupondole	9860788928	525
164	492	Krishna Chandra Dutta	Gattekulo	9808834037	515
165	356	Abhishek Labh	Lokanthali	9843058258	505
166	139	Ajay Kumar Lal Karna	Sanchal, Sanepa	9841363484	505
167	612	Akhlesh Shriwastav	Laxminagar, Lalitapark Delhi	9823371035	505
168	182	Anil Kumar Lal	Kalanki	9841392726	505
169	369	Anil Nidhi	Sanepa		505
170	935	Annpurna Nand Das	Koteshwor, Kathmandu	9841530628	505
171	283	Arun Kumar Lal Karn	Pepsicola (townplanning)	9851151153	505
172	491	Arun Kumar Mallik	Janakpur 10	9860235183	505
173	614	Arun Kumar Shriwastav	Mulpani, Bishtgaun	9841368158	505
174	906	Ashok Karn	Birgunj	9851211375	505
175	213	Baidhnath Prasad Karna	Shantinagar	9849937837	505
176	296	Binod Karna	Sundhara	9851021477	505
177	496	Birendra Kumar Dutta (Raman)	Kupondole	9851115034	505
178	189	Dilip Karna	Dillibazar	9841966896	505
179	161	Girish Kumar Lal Karn	Dhapakhel	9841507626	505
180	613	Kamlesh Kumar Lal Karna	Ganguli, Dhanusha	9851245556	505
181	291	Madan Narayan Mallik	Imadole-4	9804397091	505
182	286	Manoj Kumar Karna	Gusingal, Lalitpur	9849664497	505
183	184	Manoj Kumar Lal	Banshbari	9841727962	505
184	915	Mithilesh Kumar Karna	Tripureshwor	9742619290	505
185	470	Mrigendra Prasad Karn	Sanepa	9841669419	505
186	921	Nabin Kumar Karna	Tikathali	9851145440	505

S.No.	Receipt No.	Name	Address	Mobile No.	Amount
187	380	Nagendra Lal Karna	Pepsicola (townplanning)	9852820575	505
188	919	Parash Karna	Siraha, Inaruwa	9841495556	505
189	928	Prabhat Kumar Mallik	Imadole	9841868326	505
190	934	Rajib Kumar Karna	Jadibuti, Lokanthali	9808052777	505
191	186	Ramapati Das	Sinamangal	9849902171	505
192	923	Ramesh Kumar Karna	Kupondole	9841205953	505
193	495	Sailesh Kumar Karn	Matatirtha	9841412549	505
194	932	Sanjay Shriwastav	Sanepa	9801240801	505
195	500	Sarad Kumar Karn	Inarwa sirha	9851026560	505
196	305	Shree Narayan Das	Sinamangal	9851183650	505
197	914	Subhas Kumar Das	Ranibari	9801033378	505
198	931	Subhash Kumar Verma	Biratnagar	9851166473	505
199	218	Subodh Pathak	Ghattekulo		505
200	497	Sudhir Kumar Mallik	Kupondole	9801056556	505
201	466	Umesh Dutta	Sankhamul	9841547518	505
202	913	Yugal Kishor Karna	Jadibuti	9841142178	505
203	181	Adhir Kumar Das	Maitrinagar	9856037812	501
204	213	Baidyanath Mallik	Baneshwar		501
205	325	Biswas Bikram	Baneshwor		501
206	168	Pawan Karn	Maitidevi	9841464697	501
207	183	Bhartendu Karn	Aloknagar	9801263305	500
208	182	Devendra Kumar Karn	Kalanki	9841407978	500
209	186	Krishna Sinha	Maitrinagar	9841421983	500
210	917	Mahashankar Lal Karna	Kupondole	9841238660	500
211	185	Narendra Kumar Das	Maitrinagar	9851241720	500
212	620	Prabin Chaudhari	Inaruwa Siraha/ Pulchowk	9851137652	500
213	188	Ramesh Sir	Kamaladi		500
214	469	Sanjay Karn	Kalo Pool	9852020932	500
215	308	Shyamanand Suman	Dhobighat	9841552989	500
216	309	Shambhu Saran Prasad Kayastha	Imadole	9851104330	500
217	272	Subhash Chandra Verma	Suncity	9849201072	500
218	891	Yadubanshi Lal Karn		9851016428	300
219	927	Binod Lal Karna	Imadole	9851133555	260
220	468	Abdhesh Karn	Koteshwor, Kathmandu	9841598919	255
221	461	Ashok Karn	Janakpur-10	9849033118	255
222	300	Jyant Kumar	Handigaun	9841991787	255
223	929	Naresh Kumar Karna	Sundarijal	9803060184	255
224	941	Rambabu Karna	Janakpur-4	9851190818	255

S.No.	Receipt No.	Name	Address	Mobile No.	Amount
225	164	Saroj Karn	Thasikhel		255
226	163	Shambhu Karn	Thasikhel	9851198907	255
227	920	Narendra Lal Das	Kupondole	9803710467	251
228	215	Prakash Srivastav	Baneshwar		251
229	937	Shivanand Karna	Sitapaila	9841226811	210
230	936	Manoj Kumar Karna	Koteshwor	9841634963	205
231	611	Mukesh Lal Karna	Satungal	9841331716	155
232	930	Santosh Kumar Karna	Sinagangal	9808119894	155
233	916	Shubhash Mallik	Naya Baneshwor	9860881089	155
234	499	Vijay Kumar Verma	Satungal	9841505414	155
235	498	Dilip Kumar Verma	Buddhanagar Triratna Marg	9803285359	151
236	307	Nabin Karna	Baneshwor	9801222477	151
237	299	Santosh Kumar Lal	Janakpur-4	9849112568	150
238	617	Deepak Kumar Shriwastav	Gaur, Bhrampuri, Rautahat		105
239	306	Krishan Kumar Lal Das	Siraha	9841445875	105
240	942	Kushaldev Das	Sanepa	9849053774	105
241	943	Shreesav Sahay	Sanepa	9849053774	105
242	615	Udayshankar P Shribastav (Chhotan jee)	Gaur, Basatput, Rautahat		105
243	211	Dr. Rakesh Verma	Baneshwor	9841069885	100
244	893	Mukti Narayan Karna	Kalaiya		100

Best Wishes for Successful Career on Promotion / Recognition / Awards

Name	Designation	Office
Dr Ashis Dutta	Superitendent of Police (SP), HOD Dept. of Psychiatry	Nepal Police Hospital, Kathmandu
Dr Kamlesh Kumar Dutta	General Manager	Quest Pharmaceuticals, Birgunj
Tanish Swapnil	Winner	Bilateral Cricket Series between Nepal & Srilanka
Manoj Kumar Verma	Advisor	Town Development Minister's Advisory Board
Mahesh Das	Prabal Jansewa Shree (Fourth)	From Hon'ble President of Nepal
Satyendra Lal Karn	Best Principa Award / Indo Nepal Samrasta Award	District Level Kathmandu / Embassy of India
Dinesh Kumar Lal	Director	Bima Samiti
Prof Dr Basudev Lal Das	Professor	Thakur Ram Multiple Campus, Birgunj
Prabhakar Chandra Mallik	Deputy Director (10th Level)	Civil Aviation

Hearty Congratulations for Getting Admission to Higher Studies

Name	Parent's Name	Course	University / Institute
Shubham Kumar	Rakesh Kumar / Sangeeta Srivastava	B.Tech.	Delhi Technical University, Delhi
Bikash Kumar Karn	Dinesh Prasad Lal Karna	BE (Civil)	Jain University, Banglore
Sujal Labh	Jeetendra Kumar Labh / Savita Karn	MBBS	BPKIHS, Dharan
Asmi Karn	Sanjay Karn / Anita Karn	MCA	Vellore Institute of Technology, Vellore
Ishan Dutta	Ramesh Kumar Dutta / Sulekha Dutta	B.Tech. (CSE)	NIT, Durgapur
Bhargavi Karna	Sureshor Lal Karna / Kiran Karna	Master Mollecular Medicine	ULM University, Germany
Er Sanyukta Suman	Ratish Chandra Lal Suman / Gauri Rani Lal	Masters in Data Engineering	Jacob University, Bremen, Germany
Selina Prachi	Manoj Kumar Verma / Veena Sinha	Bachelor in Biotechnology	School of Science, Kathmandu University
Swati Karn	Ramesh Kumar Karn / Veena Karn	MBA	Delhi Technological University, New Delhi
Prashant Karn	Satyendra Lal Karn / Subha Suhasini	BE (Electronics & Comm.)	IOE, Pulchok, Kathmandu
Priyanjali Karn	Satyendra Lal Karn / Subha Suhasini	Bachelor in Jouralism	St. Xavier College, Kathmandu
Shasank Verma	Akhilesh Azad Verma / Nira Verma	BE (Computer Sc.)	Jain University, Banglore
Aayush Karn	Rudra Kumar Lal Karn/ Ranjana Karn	BE	New York University, Abu Dhabi
Shaurya Raj Verma	Dilip Kumar Verma / Priti Verma	B.Tech. (Comp Sc)	IIEST, Shibpur, India
Abhijit Kumar Manny	Bijay Chandra Lal/ Sudha Lal	M.Sc.(Comptational Intelligence & Data Minning)	Czestchowa University of Technology, Poland
Sakshi Lal	Dr Ajay Chandra Lal / Rupa Lal Dutta	MBBS	Patan Academy of Health Science, Kathmandu
Rahul Kumar Karn	Ramesh Kumar Karn / Veena Karn	B.Tech.(Comp Sc)	Vellore Institute of Technology, Vellore
Aishwarya Das	Rajesh Kumar Das / Bibha Das	Bachelor in Medical Chemistry & Chemical Biology	Jacob University, Bremen, Germany
Anisha Karna		MPH	Chitwan Medical College

Hearty Congratulations for Completion of Higher Studies / Professional Degrees

Name	Parent's Name	Course / Degree	University / Institute
Anu Dutta	Magnu Dutta / Babita Karn	BDS	BPKIHS, Dharan
Supreeya Karn	Pawan Kumar Karn / Sangeeta Karn	BE (Comp Sc)	Kathmandu University
Dr Kamlesh Kumar Dutta	Bishwanath Dutta / Sunaina Devi Dutta	Ph D in Chemistry	Galgotia's University, India
Dr Manish Mallik	Bharat Kumar Mallik / Bibha Mallik	MS	NAMS, Bir Hospital, Kathmandu
Dr Sumnima Suman	Ratish Chandra Lal Suman / Gauri Rani Lal	MBBS	Shangdong University, Jinan, China
Dr Aaditya Prakash	Lt Vinay Kumar Lal Karn / Meena Karn	Ph D Deep Learning, AI	Brandeis University, Boston, USA
Ritu Mallik Kayastha	Bhagirath Mallik / Sushila Mallik	M.Sc. Microbiology	Tribhuwan University
Ajay Chandra Lal	Ram Briksha Lal / Sunita Devi	Ph D Urban Planning	IOE, Tribhuwan University
Er Smriti Misal	Lt Vinay Kumar Lal Karn / Meena Karn	Masters in Interior Designing	Anna University, Chennai
Dr Binayak Bibek Das	Dr Ghanshyam Lal Das / Kalpana Das	MBBS & NMC	

Blessings to New Born Babies

Name of Baby	Boy / Girl	Father's Name	Mother's Name	Date of Birth
Aayam Dutta	Boy	Abishek Dutta	Serene Kayastha	27.08.2019
Shristika Mallik	Girl	Prabhakar Chandra Mallik	Kanchan Mallik	19.04.2019
Baby	Girl	Dr Abhisek Kumar	Reena Srivastava	11.08.2019
Shaswat Karn	Boy	Nabin Kumar Karn	Bandana Das	
Baby	Girl	Sashi Bhusan Dutta	Swati Karn	22.08.2019
Maanvi Das	Girl	Dr Sanjeev Ranjan	Jyoti Priyanka	04.06.2019
Riyansh Mallik	Girl	Ashis Mallik	Roopa Karn	30.03.2076
Oscar Karn	Boy	Anand Kumar Karn	Neha Karn	06.11.2075

Hearty Congratulations to Newly Married Couples

GROOM SIDE			BRIDE SIDE			Date of Marriage
Groom's Name	Father's Name	Mother's Name	Bride Name	Father's Name	Mother's Name	
Manish Kumar	Dhirendra Nath Das	Sarita Das	Shruti Shree Das	Anil Kumar Das	Meera Das	10.02.2019
Pralav Kayastha	Manoj Kumar Karna	Sabita Karna	Shuhawana Das	Lt Lalan Kumar Das	Meena Das	08.03.2019
Er Samir Sourav	Prem Niranjan Prasad	Mira Prasad	Er Smriti Misal	Lt Vinay Kumar Lal Karna	Meena Karna	25.02.2017
Mukesh Kumar Karna	Yugal Kishore Karna	Purnima Devi Karna	Anisha Karna	Ashok Kumar Karna	Dhan Kumari Karna	07.07.2019
Er Dipak Kumar Nidhi	Lt Ram Kumar Nidhi	Uma Nidhi	Dr Khusboo Srivastav	Hari Om Srivastav	Kumud Srivastav	15.02.2019
Nikesh Karn	Pawan Kumar Karn	Nutan Devi Karn	Monica Mallik	Satish Kumar Mallik	Neelam Mallik	28.06.2019
Dr Saurav Chaudhary	Sushil Kumar Chaudhary	Indu Chaudhary	Dr Rupam Das	Arun Kumar Das	Pushpa Devi	29.05.2019
Er Manish Mallik	Lt Krishna Kumar Mallik	Neelam Mallik	Er Somya Anand	Sunil Kumar Verma	Poonam Bharati Kayastha	23.05.2019
Pawan Kumar Karn	Rajeshwar Lal Das	Pratima Devi Das	Nisha Karn	Akhilesh Kumar Das	Niva Karn	27.06.2019

Congratulations for New Career

Name	Father's Name	Mother's Name	Designation	Office
Pratibha Karn	Pawan Kumar Karn	Sangeeta Karn	Account Officer	NCC Bank, Kathmandu
Amrit Kumar Das	Anil Kumar Das	Meera Das	IT Officer	Uni Lever Nepal (RMC)
Dr Aaditya Prakash	Lt Vinay Kumar Lal Karna	Meena Karna	Machine Learning Scientist	Path AI (Cancer Research Center), Boston USA
Dr Abhishesh Lal	Er Shiv Bhusan Lal	Bibha Lal	Research Associates	Neuro Equilibrium TM Diagnostic System, Jaipur
Anil Verma			Lecturer in Computer Science	IOE, Dharan

Heartfelt Condolence

HARI NANDAN PRASAD

Date of Birth
10.06.1978
Date of Demise
20.01.2076

F/o, Gautam Prasad Srivastav
Vinod Kumar Srivastav
Manoj Kumar Verma

RAJBANSHI LAL KAYASTHA

Date of Birth
15.05.1986
Date of Demise
02.06.2076

F/o, Jivan Kumar Karn
Sudhir Kumar Karn
Sunil Kumar Karn
Sushil Kumar Karn

LAXMI NARAYAN LAL DAS

Date of Birth
1943
Date of Demise
10.07.2019

F/o, Ranjana Karn

PRAMOD KAUMUDI KARN

Date of Birth
2003 Magh
Date of Demise
23.07.2075

F/o, Ranjan Kumar Karn
Rajiv Kumar Karn
Rajesh Kumar Karn

HEARTY CONGRATULATIONS FOR ACADEMIC EXCELLENCE IN SCHOOL LEVEL - 2019

CATEGORY	No.	NAME	GPA/%	PARENT'S NAME	AWARD	TRUSTEE
CLASS 1-3	1	Pragyan Karna (Class 1)	4	Pawan / Preeti Karn	Rishav Richa Rajendra	Er. Rajendra Kumar Lal & Mrs. Rupa Mishra Lal
	2	Prabhav Das (Class 1)	3.95	Rajesh K Das/ Bibha Das	Satya Narayan and Chandra Kala Devi	CA. Mr. Satish Chandra Lal
	3	Mitul Karna (Class 1)	A+	Pintu/Ranjita Karna	Yugal Kishor & Kaushalya Devi	Mr. Santosh Kishore Labh
	1	Arav Karna (Class 2)	A	Sambhu Karna/Archana Karna	Dr. Braj Kishor Lal & Sumitra Devi	Mrs. Archana Karna/Pradip Lal Karn
CLASS 4-6	1	Harsit Karn (Class 5)	4	Mirtunjay Karn/ Kalpana Karn	Bishnu Dev Lal & Sumitra Devi	Er. Rajendra Kumar Lal & Mrs. Rupa Mishra Lal
	1	Himami Karna (Class 6)	96.71%	Girish Kumar Lal /Anshu Karn	Bhuvneshwar Lal Karn & Bacchi Devi	Mr. Dev Chandra Lal
CLASS 7-8	1	Jaiman Karna (Class 7)	4	Jitendra Lal Karn /Sunita Karn	Udit Narayan and Bhuvneshwari Devi	Mr. Ratish Chandra Lal "Suman"
	2	Prabin Karna (Class 7)	3.5	Pawan Karna / Preeti Karna	Braj Kishor Das	Mr. Rajesh Kumar Das
	3	Mayank Karna (Class 7)	82.8%	Manoj Kumar Bachan/Aparna Karna	Baidhyanath Mallik/ Gayatri Devi	Mr. Prabhakar Mallik
	1	Akanksha Karna (Class 8)	3.82	Ajay Kumar Karn/Monika Anand Das	Vijaya Das/Vidya Das	Mr. Bhaskar Kumar Das
	2	Khusi Das (Class 8)	3.75	Rajesh Kumar Das/Bibha Das	Mukutdhari Lal	Er. Shiv Bhushan Lal
	3	Aavya Das (Class 8)	88%	Bhaskar Kumar Das / Gayatry Das	Parshuram Lal Karna & Manorma Devi	Mrs. Archana Karn /Mr. Pradip Lal Karna
Class 9	1	Anushka Karna	94.6%	Rudra Kumar Lal/ Ranjana Karna	Chandra Kishor Lal & Manju Lal	Er. Rajendra Kumar Lal & Mrs. Rupa Mishra Lal
	2	Aaditya Kumar Das	92.6%	Bhaskar Kumar Das/ Gayatry Das	Bhawani Devi	Mrs. Vashudha Karna
	3	Awanti Prakash	87.14%	Om Prakash Lal Das/Prakriti Mallik	Surya Narayan & Aruna Mishra	Mr. Rajendra Kumar Lal & Mrs. Rupa Mishra Lal

CATEGORY	No.	NAME	GPA/%	PARENT'S NAME	AWARD	TRUSTEE
Class 10 (Cash Award)	1	Dikshya Karna	3.9	Nagendra Lal Karna /Sharda Karna	Pratibha Bharati Das Cash prize 10,000	Mr. Anand Mohan Lal Das
Class 10 (Certificate Only)	2	Aditya Karna	93.4%	Chandra Bhushan Lal Karna / Nirja Karna	Krishna Kuldip	Mr. Anand Mohan Lal Das
	3	Aakriti Karna	3.65	Sunil Karna/ Poonam Karna	Ganga Bhawani	Mr. Anand Mohan Lal Das
Class 12 Cash Award	1	Ashuka Rani Karn	3.73	Sushil Kumar Karn / Anamika Karna	Dr. Laxmi Narayan Prasad Kiranmayi (Cash Prize of Rs. 15,000)	Mrs. Rashmi Shrivastav
	2	Shaurya Raj Verma	90.6%	Dilip Kumar Verma /Priti Lal Kayastha	Dr. Laxmi Narayan Prasad Kiranmayi (Cash Prize of Rs. 15,000)	Mrs. Rashmi Shrivastav

बोल गई

राजेश कुमार कंठ

वह मुझसे एक दिन
याद रखोगे
मेरा अर्पण।

समझ नही मैं सका
कभी यह
होता क्या है
आखिर अर्पण।

उसकी यादों में
जब मैं खोया
खुद को पाया
बिल्कुल अकेला
उसकी हर बातो का माने
लगने लगा मुझे
मानो सीख हो पहला।

कहती थी तुम
बाचाल बहुत हो
तुमको खुद नही
पता है
तुम हो पगला।

मैं समझता था कि
कह रही
तुम खुद में शायद हो
अकेला।

फिर उसने एक दिन
जिद करके बोला
सुधरो नही तो
तुमको छोड़ेंगे
तुमसे रहेगी दोस्ती मेरी
पर नही कभी तुम्हे
भूलेंगे।

उसकी बातों में छिपा था
एक तरह का
इकलौता अर्पण
जीवन भर का सीख दे गई
मुझे दिखा दी
असली दर्पण।

नेपाल चित्रगुप्त समाज द्वारा २०७५ सालमा सम्मानित व्यक्तिहरू

नाम	वर्ग
रत्नेश्वर लाल कायस्थ	प्रदेश प्रमुख
लक्ष्मण लाल कर्ण	साँसद
वृषेश चन्द्र लाल	साँसद
विमल प्रसाद श्रीवास्तव	साँसद
पुष्पा कर्ण	साँसद
मनिष सुमन	साँसद
रुबी कर्ण	साँसद
आयुष कर्ण	उच्च शिक्षा
डा. गौरी शंकर लाल दास	पेशागत
सच्चिदानन्द श्रीवास्तव	पेशागत
शम्भु शरण कायस्थ	पेशागत
रत्नाकर दत्त	पेशागत
विश्वनाथ लाभ	पेशागत
विद्या दास	दिर्घजिवी
राजेन्द्र प्रसाद कर्ण	दिर्घजिवी
कुलानन्द दास	दिर्घजिवी
कमला कान्त मल्लिक	दिर्घजिवी
जयकान्त लाल दास	दिर्घजिवी
इन्दुबाला प्रसाद	दिर्घजिवी
शिवानन्द दास सरस	दिर्घजिवी
उर्मिला देवी	दिर्घजिवी
सुर्यकला	दिर्घजिवी
रंजनी देवी	दिर्घजिवी
आनन्द विहारी श्रीवास्तव	दिर्घजिवी
शान्ती देवी	दिर्घजिवी
हरी नन्दन प्रसाद	दिर्घजिवी

Note: